Gandhi Memorial College Of Education ... Jammu

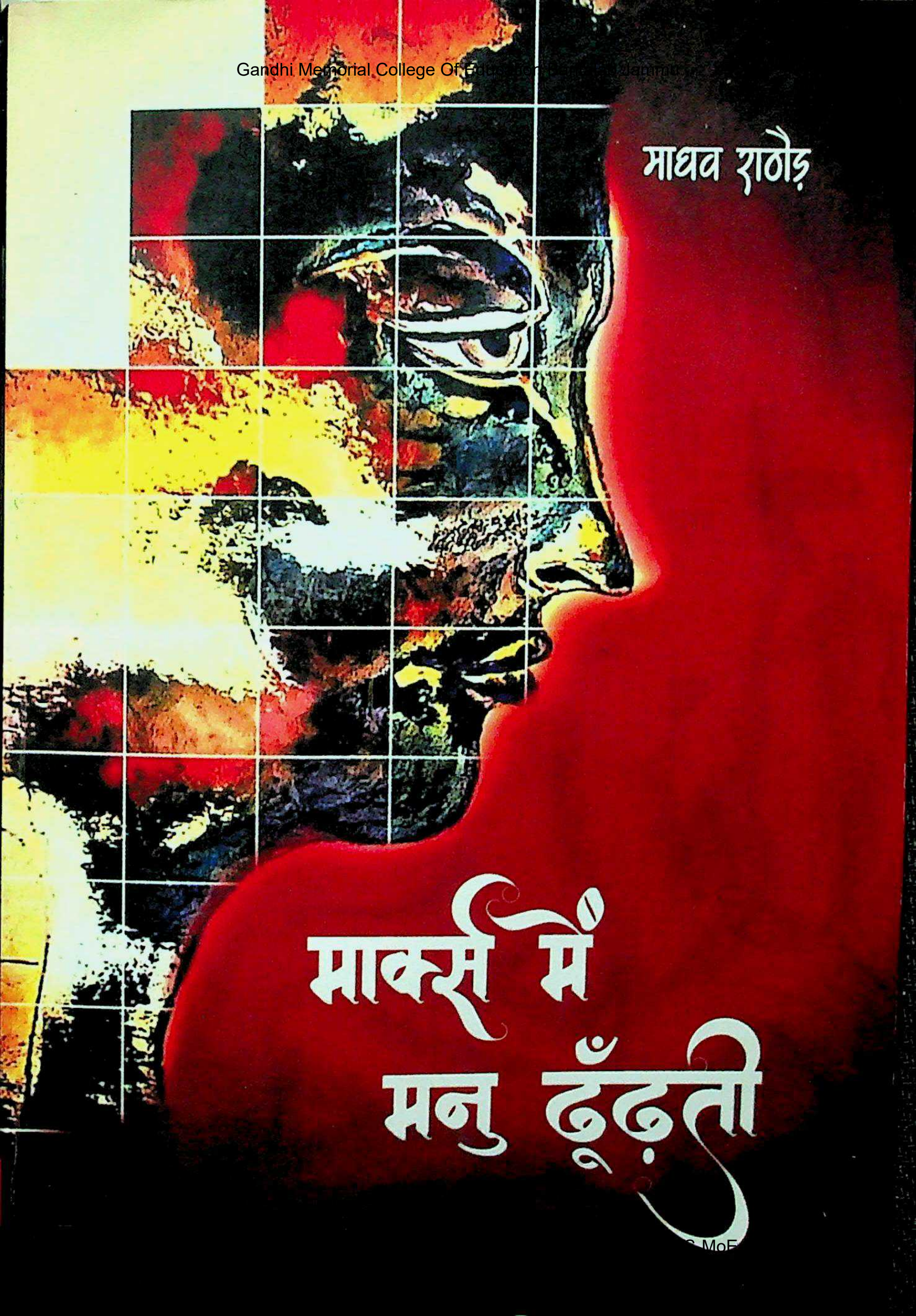

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आदरणीया क्षमा कौल जी
को सादर भेंट
माधव राठौड़
6/7/18

मार्क्स में मनु ढूँढ़ती

माधव राठौड़

G.M. College of Education
Rajpur Bantalab
Jammu
Acc No. 4660
19.12.2023

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मार्क्स में मनु ढूँढ़ती

(कहानी-संग्रह)

माधव राठौड़

बोधि
साहित्य जन-जन के लिए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बोधि प्रकाशन
सी–46, सुदर्शनपुरा इंडस्ट्रियल एरिया एक्सटेंशन
नाला रोड, 22 गोदाम, जयपुर–302006
दूरभाष : 98290–18087
ई–मेल : bodhiprakashan@gmail.com

कॉपीराइट © माधव राठौड़

प्रथम संस्करण : जुलाई, 2018
ISBN : 978-93-87831-92-6
कम्प्यूटर ग्राफिक्स : बनवारी कुमावत 'राज'
आवरण संयोजन : बोधि टीम

मुद्रक
तरु ऑफसेट, जयपुर # 09829018087

मूल्य : ₹ 150/-

MARX MEIN MANU DHOONDHATI (STORIES) by Madhav Rathore

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपने प्रिय और महान लेखकों को
जिन्होंने अपने शब्दों से
पूरी दुनिया से प्रेम करना सिखाया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"हर छोटा लेखक मौलिक होने की चेष्टा करता है, जहाँ वह अपने पूर्ववर्ती लेखकों से अलग कुछ लिख सके किंतु जो सही अर्थों में 'मौलिक' होता है, वह हमेशा अपने प्रिय, महान लेखकों की नक़ल करना चाहता है किंतु लिखने की घड़ी में वे महान लेखक विनयशील, शालीन मित्रों की तरह उससे विदा ले लेते हैं और उसे कमरे में छोड़ देते हैं। जो उसका नरक है और मौलिकता का उद्गम स्रोत भी..."

–निर्मल वर्मा

'धुंध से उठती धुन'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुक्रम

उकताया हुआ एक दिन	13
रेड सर्किल	22
बिकी हुए शामें	30
मार्क्स में मनु ढूँढ़ती	37
मँगती	46
उदास यादें	55
इमली फाटक के उस पार	63
नाच	71
अभिशप्त वरदान	78
उधड़े ख़्वाब	87
शुक्रवार को शुरू किया काम जरूर पूरा होता है	92
साँझ की धूसरता	103
तयशुदा दूरियों के साथ जीना	110
बेजुबां दर्द	116
अधूरा वजूद	122
ढलती साँझ की धुंध	127
लाज	132
खालीपन	141
बड़े पेड़ के भीतर छोटा पेड़	147
क्वाटर नम्बर- 73	153

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जीवन को जीवन के बीच से तलाशने का प्रयास करती कहानियाँ

इस समय हिन्दी युवा कहानीकारों का एक सार्थक हस्तक्षेप है। ये अपने समय को जिस ढंग से कहानी में अभिव्यक्त कर रहे हैं, वह परिवेश पर उनकी गहरी पकड़, कल्पनाशीलता और उस दृष्टि का परिचायक है जो मानवीय संवेदना की भूमि से उपजी है। विशेषकर तब, जब चौतरफ अमानवीय अनुगूँजे ही अधिक सुनाई दे रही है। ऐसे में युवा रचनाकार के समक्ष उससे मुठभेड़ ही नहीं अभिव्यक्त करने की भी चुनौती है।

माधव राठौड़ की कहानियाँ अपने समय से रूबरू ही नहीं होती बल्कि उसकी चुनौती को भी स्वीकार करती है। एक रचनाक़ार आज की चिंताओं को अपने साहित्य में तभी अभिव्यक्त करने में सक्षम हो सकता है जब वह उसे आत्मसात कर सके। माधव की कहानियों को पढ़ते हुए लगता है कि वह अपने समय और उसकी चिंताओं से बखूबी वाकिफ़ है। शीर्षक कहानी 'मार्क्स में मनु ढूँढ़ती' सिर्फ कहानी ही नहीं बल्कि वह हकीकत है जो उन सवालों से जूझती है, जिससे आज के अधिकांश लोग इन दोनों के बीच झूल रहे हैं।

असल में तो इस समाज में जो खाँचे बने हुए हैं वे व्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए नहीं है बल्कि अपने-अपने ढांचे में उसे फिट करने के लिए है, यदि वह फिट नहीं बैठता है तो बहिष्कृत है। इसलिए इसकी नायिका कहती है-''वो न मार्क्स के लिए न मनु के लिए और न ही समाज के लिए जियेगी। वो सिर्फ खुद के लिए जियेगी।''

असल में यह इसलिए है कि जिस समय में जी रहे हैं वह विचारधाराओं के अंत का समय है और यह भी सच है कि ऐसे में व्यक्ति स्वयं के लिए भी कितना जी पाता है?

ये कहानियाँ जीवन के इसी फ़लसफ़े को समझे की सार्थक कोशिश है। माधव की कहानियों में जीवन को जीवन के बीच से तलाशने का प्रयास है। 'बिकी हुई

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
शामें', 'रेड सर्किल' ऐसी ही कहानियाँ हैं। 'उकताया हुआ एक दिन' में पता नहीं कैसा खालीपन है जो उसे स्वयं को भी मालूम नहीं। 'मँगती' में कहानीकार ने ज़िन्दगी यहाँ और वहाँ दो वर्गों के यथार्थ को जिस ढंग से व्यक्त किया है, अनूठा है। दोनों जगह स्त्री पीड़ित है। 'उदास यादें' एक कहानी में दो कहानी है–''पता है मनु, मुझे और राज को किस चीज ने जोड़ रखा है...उसके होने के बेमानीपन ने और मेरे अपने अस्तित्व की निरर्थकता ने।''

इन कहानियों के अधिकतर पात्र बिखरे और अकेले हैं। आज के जीवन की तरह; एक उद्देश्य की तलाश में।

असल में ये सभी बेचैन करने वाली कहानियाँ हैं और यह बेचैनी जीवन के लिए है, एक सार्थक जीवन के लिए। 'अधूरा वजूद', 'तयशुदा दूरियों के साथ जीना', 'शुक्रवार को शुरू किया काम जरूर पूरा करना होता है', 'उदास यादें' तथा 'साँझ की धूसरता' ऐसी ही कहानियाँ हैं। 'क्वाटर नं. 73' में सरकारी कॉलोनी में रहने वाले बाशिंदों को उकेरा है। यह कहानी उपन्यास का आयाम देती है। एक छोटी सी कहानी में इतने चरित्र ? कैसा समाज है यह ? सचमुच अंदर से हिला देने वाली कहानी।

ऐसे समय में जब चीजें ही नहीं हमारा समय ही बेमकसद और गड्डमगड्ड हो तब एक संवेदनशील रचनाकार उससे कैसे निर्लिप्त रह सकता है। माधव ने इन सबको अपनी कहानियों में अभिव्यक्त किया है। ये उस भविष्य की ओर भी संकेत करती हैं जो निश्चित रूप से भयावह है। 'तयशुदा दूरियों के साथ जीना' में लेखक की टीस है–''मुझे समझ नहीं आ रहा था कि सामूहिकता में कितना व्यक्तिगत बचता है और व्यक्तिगत में कितना सामूहिक हो पाता है या फिर ताउम्र दोनों को साथ लिए तयशुदा दूरियों के साथ सफल और सार्थक जीवन जिया भी जा सकता है ?''

माधव की कहानियाँ पाठक के भीतर इस तरह से प्रवेश करती हैं कि वह आश्चर्यचकित रह जाता है कि जीवन को इस तरह से भी देखा जा सकता है। इनकी आवाज सीमित नहीं बल्कि व्यापक है जो हर वर्ग, हर चरित्र को उसी की भाषा में अभिव्यक्त करती है।

रामनारायण

9414132301

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ज़रा ठहरो

सर्वप्रथम मैं आपका आभारी हूँ कि आपने हर वर्ष हजारों की संख्या में छपने वाली किताबों में से इस कहानी संग्रह को पढ़ने के लिए पसंद किया क्योंकि एक गंभीर पाठक के बिना लेखक की समस्त लेखन प्रक्रिया अधूरी है। इन कहानियों को पढ़ने से पूर्व मैं आपके साथ इन कहानियों की रचना प्रक्रिया को साझा करना चाहूँगा।

सामान्यत: मैं लिखने से बचता हूँ पर कभी-कभी शब्द घनीभूत होकर ज़ेहन पर भारी हो जाते हैं तो उनको केवल माध्यम बन रास्ता भर देता हूँ अपने आसपास के समय को जब संवेदनशील होकर देखता हूँ तो शब्दों की पीड़ाओं से भर जाता हूँ या फिर यूँ कहूँ कि शब्द ज़ेहन में खदबदाते हैं जिससे हिये के भीतर कुछ दाजने सा लगता है। उस दाज को जब पन्ने पर शब्दों में ढालता हूँ तो मई-जून के तपते रेगिस्तान में पहली बारिश के बाद धोरे से उठती ठंडक सी महसूस होती है। यह शब्द कभी कहानी, कविता और रिपोर्ताज आदि के आकार में ढलने लगते हैं। लेकिन कई बार पीड़ाएँ बेहद निजी होती है तो वो डायरी में ही उतरती है।

नाइजेरियन कवि बेन ओकरी ने कहा था कि "हमें उस आवाज़ की ज़रूरत है, जो हमारी ख़ुशियों से बात कर सके, हमारे बचपन और निजी-राष्ट्रीय स्थितियों के बंधन से बात कर सके। वह आवाज़ जो हमारे संदेहों, हमारे भय से बात कर सके, और उन सभी अकल्पित आयामों से भी जो न केवल हमें मनुष्य बनाते हैं, बल्कि हमारा होना भी बनाते हैं।"

तपते रेगिस्तान में जून की आँधियों में दीवड़ी में रखे जल को पीते हुए जो तृप्ति का एहसास मुसाफिर करता है ठीक वैसा ही एहसास मुझे भीतर से बन्तुलिये सी बैचेन करती पीड़ा को रात को तीन बजे कागज पर उतरी कहानी को देखकर होता है। इन कहानियों से गुजरते हुए आपको रोजमर्रा की भागती ज़िन्दगी की झलक मिलेगी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तो कहीं अपने भीतर पसरा रेतीला खालीपन महसूस होगा। इन कहानियों को पढ़ते हुए आप महसूस करेंगे कि यह अचानक आपके भीतर उतर कर कहीं खो जाती है तो कुछ कहानियाँ एक ही झटके में टूट कर बिखर जाती हैं दरअसल मैंने पात्रों की ज़िन्दगी के साथ कोई छेड़छाड़ नहीं की। जब भी रात के एकांत में उनके जिये हुए अनुभवों को सच्चाई के साथ शब्दों में ढालने की कोशिश की तो काफी कुछ मेरे आसपास ही बिखर गया जो शेष रहा उसे संभालकर आपके सामने लाया हूँ।

डॉ. सत्यनारायण के हवाले से कह रहा हूँ कि इस चाकू समय में एक संवेदनशील मन को साहित्य ने ही जिन्दा रखा है वरना इस क्रूर तपते तावड़े के थपेड़ों ने कभी का झुलसा दिया होता।

बहरहाल इन कहानियों पर पहला और आखिरी हक पाठकों का है इसलिए कहीं से भी यह आपके दिल के कोने को भिगोती है तो इन्हें लिखना सार्थक समझूँगा।

–माधव राठौड़

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उकताया हुआ एक दिन

आज भी अमन दीप कॉम्पलेक्स की शाम उसे उबाऊ लग रही थी।

कुछ देर पहले वह फोन पर पति के घिसे सवालों के पीटे जवाब देकर आई है।

'मयंक कैसा है, घर पर राशन तो है, खाना खा लिया क्या ?'...हद है यार परसों तो गये हो मगर सवाल ऐसे जैसे महीनों हो गये।

वो इन सवालों से उकता गई।

रोज फेसबुक चेक करना उसके खाली जीवन का हिस्सा बन गया था। ऐसी जगह जहाँ आप अकेले होकर भी भीड़ में पाए जाते हो, बिना बोले ही काफी कुछ बोला जाता है, लिखा जाता है, लड़ा और झगड़ा जाता है। मयंक ट्यूशन गया हुआ था और पति परसों ही मुंबई निकल गये। इधर वो एक ऊबा सा जीवन जी रही थी। पति प्राइवेट नौकरी के चक्कर में इतने उबाऊ हो गये, उसे देख वो डर जाती, दिनभर बिजनेस और बिजनेस की बातें।

खाने वाली बाई बहुत बोलती है।

वह टीवी पर न्यूज़ देखने लगी।

मैडम पता है, राजस्थान में आधी रात को कोई औरतों के बाल काट देते हैं, यह देखो टीवी पर भी आ रहा है।

ये चैनल वाले भी न जाने क्या-क्या दिखाते हैं। वो पूरी तरह ऊब से भर गई। टीवी बंद कर बालकनी में आकर खड़ी हो गई। किचन से तेज आवाज आई शायद कुछ गिरा हो...वो अंदर जाती उससे पहले आवाज बंद हो गई। बाहर कुल्फी वाला रोज इसी टाइम वही टन टन...वो उकता गई इस आवाज को सुनते-सुनते। अचानक डोर बेल बजी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'मैडम, मिसेज सिंह यहाँ रहती हैं क्या ?'

'कौन मिसेज ...जरा पता लेकर ही आया करो, यूं ही मुँह उठाये चले आते हो' उस आदमी का इस वक्त दखल देना उसे अच्छा नहीं लगा।

'वह, जो सी.डी.पी. हॉस्पिटल में काम करती है'

उस आदमी के पीछे सहमी सी एक लड़की खड़ी थी।

'फोर्थ फ्लोर 902' उसने दरवाजा धकियाते हुए खुद को बंद कर दिया।

'मैडम इस मिसेज सिंह के यहाँ लड़कियां क्यों आती रहती है' भीतर बाई जी के सवाल ने उसे घेर लिया।

उसे जवाब दिए बिना वह बालकनी में आकर खड़ी हो गई।

'903 वाली मैडम बता रही थी कि वह घर पर डी.एन.सी. करवाती है' अंदर से बाई जी खुद ही जवाब देकर शायद हल्का महसूस कर रही थी।

सामने वाली मंजिल में हरेक बालकनी में कपड़े टंगे हुए थे। इस फैलते महानगर में अपने हिस्से की धूप के लिए, सिकुड़ती जगह में बारिश में कपड़े सुखाना उसे बोरिंग लगता। कुछ घरों में लाइट जल रही थी, औरतें इधर उधर हिलती डुलती दिख रही थी। बच्चे टीवी छोड़ सामने पार्क में खेल रहे हैं कुछ रिटायर लोग बेंचों पर बैठे हैं।

काश वह भी रिटायर होती तो पूरे दिन उकताने के बाद उनके साथ बैठ अपनी बोरियत दूर करती।

पर गृहस्थी से भला कोई रिटायर्ड होता है...वो खुद की बचकानी कल्पना पर मुस्कुरा दी।

पिछली बार पति को कहा था 'मुझे नौकरी करनी है, मैं दिन भर पड़ी-पड़ी पागल हो जाऊंगी'

'अरे क्या रखा है प्राइवेट नौकरी में, दिनभर घिस-घिस कर थके हारे घर लौटो, तुम तो फ्लैट में ऐश करो...पति का जवाब था।

हाहाहा ऐश... उसे पता है अकेले पड़े रहने में क्या ऐश है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैडम जी...फोन बज रहा है

फोन लेने गई तो सब्जी के तडके की गंध नथुनों में फ़ैल गई। वो जल्द फोन लेकर बाहर आ गई।

इस समय यह रोज की गंध...इससे भी उकता गई।

सासू जी का फोन था।

अभी चूसेगी। क्या खाया क्या पीया, जयपुर आ जाओ अगर मन नहीं लग रहा हो तो।

अब उन्हें कौन समझाये पिछले महीने तो गई थी।

फोन नहीं उठाया।

वो अभी नहीं चाहती कि शाम को फोन से फिर उकता जाये...

बालकनी की रेलिंग पर पैर डालकर कुर्सी पर पसर गई।

बाहर मिसेज वर्मा मिसेज शर्मा से बातें कर रही थी।

साड़ी, किट्टी पार्टी, ऑनलाइन शॉपिंग वही घिसिपिट्टी...यार ये रोज रोज वही बातें, यार कोई ढंग की बात क्यों नहीं करता।

वो उकता गई इनको बातें करते देखते हुए।

उसने नजर फेर ली। कॉलोनी के बाहर यूनिपोल पर एक बड़ा सा ऐड था

'जुबां पर लगाये लगाम'

उसके मन में आया कि कोई मन पर भी लगाम लगाने वाली चीज होती ..

चलो एफ. बी. देखती हूँ।

फेसबुक को लॉगइन किया तो कुछ नोटिफिकेशन्स दिखे, जिसमें कुछ फ्रेंड रिक्वेस्ट भी थी। अक्सर परिचित लोगों को ही लिस्ट में शामिल करती थी, अनजान लोगों को कभी नहीं, क्योंकि कोफ़्त सी होती थी बोराये और ऊबे हुए सवालों का जवाब देने में। इसलिए जो भी 100-50 दोस्त थे ज्यादातर रिश्तेदार या स्कूल कॉलेज के फ्रेंड थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उस दिन एक रिक्वेस्ट ऐसी भी थी जिसको वह बिल्कुल नहीं जानती थी, न ही कोई म्यूच्यूअल फ्रेंड्स ...एक बारगी तो डिलीट कर रही थी मगर उसने समय काटने के लिए उसकी प्रोफाइल खंगालने लगी। तो देखा कि वो कोई कलात्मक अभिरुचि रखने वाला था, उसकी पोस्ट्स, कमेंटस और पेज लाइक यही सब कह रहे थे। उसकी प्रोफाइल पिक और कवर पिक भी थोड़े अजीब से थे। उस पर पेंटिंग के ज्यादा फ़ोटोज़ थे या फिर उनकी समीक्षा।

वो उसकी पोस्ट पढ़ने लगी।

इसके सिवाय धर्म, साहित्य, विज्ञान की फंतासी पर हर पोस्ट नये अंदाज में रोचक तरीके से लिखी गई थी। वह पढ़ती गई।

बाहर अंधेरा घिर गया था।

'मैं जा रही हूँ दरवाजा बंद कर देना मैडम जी' खाने वाली बाई जी की चप्पलों की आवाज सीढ़ियों से आ रही थी।

वो उसकी पोस्ट पढ़ते पढ़ते उठ कर अंदर आ गई और खुद को यूं ही बेड पर गिरा दिया।

पता नहीं क्यों, उसे स्वीकार कर दिया। कुछ ही देर में इनबॉक्स में एक एस.एम.एस. चमका Thanks for accepting an unknown... ।

क्या रिप्लाई करूं वो शब्द जोड़ने लगी, थैंक्स और वेलकम उसे हल्के लगने लगे।

'अज्ञात को जानना ही मानव मन का कौतुहल रहा है। 'उसने रिप्लाई लिखा।

'और इसी कौतुहल ने इस संसार को खोजा।' उधर से जवाब आया।

फिर सिलसिला शुरू हुआ ...काफी बातें हुई उस दिन, काफी कुछ जाना एक दूसरे के बारे में एक ही दिन में।

'मम्मी, लाइटें बंद क्यों कर रखी हैं ?' मयंक की आवाज सुन उसने बाहर देखा तो 9 बज चुके थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पहली बार उसे फेसबुक बोरियत भरी नहीं लगी। पहली बार फेसबुक पर किसी की पोस्ट्स को स्क्रॉल करने की बजाय हरेक को ठहर कर पढ़ा, उसे लगा कि कुछ ऐसा लिखा हुआ था जो उसके भीतर गहरे से भरता जा रहा था जो उसे भीतर से सुकून दे रहा था, पहली बार सूखे हुए जीवन में हरापन महसूस हुआ।

शायद पहली बार दिमाग को अच्छा पढ़ने को मिला।

'मैं दिनभर बोर हो जाती हूँ' उसने एक दिन अपनी समस्या रखी।

आपके क्या शौक हैं?

शौक तो कुछ नहीं पर मैं लोगों से, चीजों से और घटनाओं से जल्द उकता जाती हूँ।

कुछ तो शौक रहे होंगे स्कूल और कॉलेज के दिनों में?

तब तो मुझे कविता लिखना और किताबें पढ़ना अच्छा लगता था।

तो अब क्यों करतीं यह सब?

पता नहीं, यह सब छूट सा गया।

कल आपकी कविता पढ़ूँगा, लिख कर रखना।

उसने फिर से लिखना शुरू किया।

जब भी अपनी नयी कविता फेसबुक पर डालती, वो सीधे कमेंट्स नहीं करके इनबॉक्स में कुछ न कुछ उलटे-सीधे लिख देता, जिसमें अक्सर समालोचना ही होती प्रशंसा कभी नहीं।

सुनो, 'फ्यूचर शॉक' जरूर पढ़ना।

वो किताबें बताता वो पढ़ती रहती।

वो सप्ताह में एक बार पेंटिंग डालता जिसमें अक्सर अकेलापन बिखरा हुआ होता।

वे उस पर बात करते, उसके आयामों की, कैनवास के विस्तार की, एबस्ट्रेक्ट की।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वो रोज शाम का इंतजार करने लगी। उसकी शाम अब उकताई हुई नहीं होती।

पिछली बार उसने कहा कि ये कितनी अजीब बात है कि हम मेट्रो शहर में रहते हुए भी अभी तक मिले नहीं।

क्यों मिलें ? उसका हर बार यही जवाब होता।

मैं तुम्हें अपने कैनवास पर उतारना चाहता हूँ... वो अक्सर कहने लगा।

'कल शाम 4 बजे' उसने मैसेज छोड़ दिया।

शहर की लोकल ट्रेन में जगह बनाती वह खड़ी हो गई। खचाखच भरी ट्रेन रोज की तरह अपनी स्पीड से चल रही थी। शायद इस शहर और ट्रेन को कोई फर्क नहीं पड़ता कौन कहाँ जा रहा है। वो सोचने लगी ये ट्रेन भी ऊब जाती होगी रोज फेरे करके। इसलिए सबसे बेमतलब सी चलती जा रही है इन उकताए लोगों को लेकर।

धकियाते, खदबदाते लोग, उनके शरीरों से उठती गंध और पसीने ने अजीब सा वातावरण बना रखा था। उसने सीट के लिए अगले स्टेशन पर उम्मीद भरी नजर दौड़ाई मगर कोई नहीं उतरा।

ट्रेन रुकती तो एक साथ लोग उतरते, हवा आने की थोड़ी जगह बनती मगर जल्द ही भर जाती।

उसे अचानक लगा कि पीछे खड़े व्यक्ति का शरीर बार-बार उसे छू रहा है उसने पीछे देखा तो दो बटन खोले छाती के बाल दिखाता हुआ किसी प्राइवेट कम्पनी का कर्मचारी दाँत निपोर रहा था।

वह इस सड़ी हुई हँसी से उकता गई। हद है, जब भी इस लोकल में सफर करती हूँ तो पसीने की गंध के बीच यह स्पर्श और पेट पर हाथों का स्पर्श, या कंधों पर झींगते गर्म साँसों के झोंके या पांव के सेंडिल को दबाते कठोर जूते।

उसने स्टेशन आने पर खुद को बाहर फेंका और हवा को अंदर खिंचा।

वो उसके दिए एड्रेस पर पहुँच डोर बेल बजाई।

अभी 4 बजने में दो मिनिट कम हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक कमरा खुला, जिसमें खिड़की से ढलते सूरज की धूप आ रही थी। सामने अलमारी में किताबें बेतरतीब ठूँसी हुई थीं। मेज पर लेपटॉप और कागज पड़े थे। पास ही 'एलेन टोपलर की फ्यूचर शॉक' उलटी हुई पड़ी थी जिस पर मोटी फ्रेम का चश्मा पड़ा था। वो कुर्सी पर बैठ गई और वो सिकुड़ी हुई चादर पर बैठ गया।

'विन्सेट गाग की जीवनी लस्ट फॉर लाइफ' दराज से झाँक रही थी, शायद इन दिनों ही पढ़ कर रखी होगी।

उसे लोगों के साथ बैठने पर खुद को बदलना पड़ता है इसलिए वह अजीब से तनाव से भरी हुई थी। उसकी निकटता उसे उलझा रही थी। जल्दी उस कमरे में भी ऊब उतरने लगी।

वो उठ कर चाय बनाने चला गया। वो कमरे में इधर-उधर देखने लगी ढलते सूरज की किरणें पेंटिग पर पड़ रही थी, इससे रंगो में अजीब चटकपन आ गया था, यह देख वो अंदर से खुश हो गई।

वो चाय पीने लगी पर उसे कोई स्वाद नहीं आ रहा था उसने आधा कप पीकर रख दी।

'जो भी करना हो जल्दी करो मुझे जाना है' वो उकता गई थी।

चलो मेरे कैनवास रूम में...

वो अंदर से हिल गई, उसकी देह को कैनवास पर उतारेगा। उसने दूसरे कमरे ले जाकर पर्दा गिरा दिया और सिगरेट जला ली, उसके होंठ और काले दिखने लगे।

वह ब्रश कैनवास पर फेरने लगा, अब उसकी पीठ दिख रही थी।

वो अंदर से भय से भर गई, वो उठ कर मुड़ने लगी।

'अरे, यूं ही बैठी रहो' उसने उसे पीछे से आकर बांहों में भर कर कानों की बाली के पास होंठ लगाते हुए बोला।

धड़कनों से देह थरथरा उठी, छाती के भीतर तूफान उमड़ आया। वह धीरे-धीरे से साड़ी खोलने लगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उधर साँसों का तूफान उठ रहा था, कुछ रंग देह के कैनवास पर बरस कर बिखरने वाले थे, वो एक हाथ से ब्रश से कैनवास रंग रहा था तो दूसरे हाथ से उसने ब्लाउज के बटन खोल दिए।

अब वह उसके नजदीक आकर उसके देह के कटाव का नाप लेने लगा।

गले में जैसे कुछ फँस गया हो, मुँह सूख गया, देह पसीने से चिपचिपा गई...

उसके झुकने से उसकी साँसे तेज सुनाई दे रही थी।

होंठ काँपने लगे... उसकी पीठ पर जैसे कोई गर्म अंगारा रख दिया हो।

वो हड़बड़ा कर उठी तो रंगों का कोलाज बिखर गया। स्टूल लुढ़क गया, जिस पर कई रंग फैल गये, मन का कैनवास बदरंग हो गया।

उसे लगा यह सब छल है रंगों का, शब्दों का और यह कूची उसे छलने का हथियार है। पहले छली जायेगी रंगों में उतार कर और फिर कैनवास पर उतर आएगा उसका छला हुआ रूप।

वो उसे उसी हालत में छोड़ बाहर आ गई, कपड़े ठीक किये और दरवाजे से बाहर आ गई।

'तुम उकताई हुई लड़की हो, तुम्हारी बोरियत में कोई भी रंग नहीं भर सकता' वो सिगरेट, देह और रंगों की मिश्रित गंध भरे कमरे में पीछे से जोर से चिल्ला रहा था।

वो उस कॉलोनी के बस स्टेशन पर आ गई मगर शाम की बसें भरी हुई आ रही थीं। कोई रुकती पर उसमें चढ़ने को जगह नहीं।

वो वहाँ खड़ी-खड़ी शाम के अंधेरे से भर गई और उसे उस भीड़ से बोरियत होने लगी।

थोड़ी देर पैदल चली फिर ऑटो ले घर पहुँची।

आज भी उसे अमन दीप कॉम्पलेक्स की शाम उसे उबाऊ लग रही थी।

फ्लैट के गेट पर पहुँच तो बाई जी इंतजार करते मिलीं 'कहाँ गई थीं मेम साहब, दो चक्कर लगा चुकी हूँ?'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बिना जवाब दिए अंदर जाकर सोफे पर गिर गई।

टीवी चालू किया।

हर चैनल पर भारत पाकिस्तान के क्रिकेट मैच की बहस चल रही थी।

'मेम साहब आज तो भारत जीतेगा पक्का' बाई जी ने फ्रिज से भिन्डी निकालते हुए कहा।

उसने चैनल चेंज कर गाने लगा दिए पर वहाँ पर गाना चल रहा था

'मोहे रंग दे'

दूसरा बदला तो

'रंगरेज मेरे रंग दे'

तीसरा

'तेरे रंग में रंग गई'

वो बोरा गई...देह से ट्रेन की, बस स्टैंड की, रंग की, सिगरेट की और सब्जी के छोंके की गंध जा ही नहीं रही थी।

वो बाथरूम में घुस गई, खूब मलकर साबुन लगाया, फिर शॉवर जेल मल कर लम्बा शॉवर लिया।

न गंध गई, न पीठ पर अंगार की जलन।

वो उकता गई इस गंध और जलन से।

वह बालकनी में खड़ी हो गई, सामने वाले यूनिपोल पर आज नया ऐड था

'नेरोलेक इम्प्रेशन पेंट लगा कर देखो फिर उन्हें घर बुला कर तो देखो।'

मगर उसे आज फिर अमन दीप कॉम्पलेक्स की शाम वैसी ही उबाऊ लग रही थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रेड सर्किल

यह कहानी कोई प्रेम कहानी नहीं है। यह कहानी हमसे संवेदना की माँग करती है कि हम अपने आसपास की घटनाओं, व्यक्तियों और वस्तुओं को देखने का नजरिया पूर्वाग्रहों से भरा नहीं रखे, क्योंकि वो धीरे-धीरे जब टूटते हैं तब तक देर हो जाती है। मेरे साथ भी ठीक ऐसा ही हुआ।

मुंबई महानगर अपने तरीके से चलता है यह शहर किसी के लिए घड़ी भर भी नहीं रुकता, 24 घंटे अनवरत चलता रहता है। यहाँ रोज हजारों लोग आते हैं अपने सपने लेकर तो हजारों के सपने इस महानगर की चकाचौंध में कहीं चौंधिया कर खो जाते हैं। इस बात का गवाह है मेरा टैक्सी ड्राइवर।

साहब! कहाँ से लेकर चलूँ? इधर तो ट्रैफिक मिलेगा, सी-लिंक से ले लूँ?

'हाँ, भाई जल्दी से पहुँचो उधर से लो' एक तरफ ऊँची अट्टालिकाएं मुझे विस्मित कर रही थी तो दूसरी तरफ अथाह समन्दर अपनी ओर आकर्षित कर रहा था।

''साहब! सी-लिंक के 110 रुपये एक्स्ट्रा देने होंगे।''

''अरे हद है मैं किस बात के दूँ क्या लूट मचा रखी है?''

घर से निकलते वक्त मित्र सुरेन्द्र ने हिदायत दी थी कि टैक्सी वालों को ज्यादा मुँह मत लगाना और दो घंटे पहले ही निकलना कहीं ट्रैफिक मिल गया तो फँस जाओगे।

दो घंटे! मेरे जीवन के दो अमूल्य घंटे इस ट्रैफिक में?

अरे यहाँ तो 5-5 घंटे खड़ा रहना पड़ता है हम तो मीटिंग, लंच, डिनर तक जाम में ही करते हैं।

गजब का शहर है यहाँ ट्रैफिक में भी मीटिंग!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुझे डर था कहीं ट्रेफिक में फँस गया तो ट्रेन छूट जाएगी चलो ठीक है सी–लिंक की ओर से ले लो।

यह अंग्रेजों को दहेज में मिला लोभी शहर कितना बढ़ेगा, समन्दर में भी पुल खड़े कर दिए।

साहब, यह मायानगरी है, यहाँ कुछ समझ में नहीं आता।

अच्छा ! आपको यहाँ कितने साल हो गये ?'

15 साल हो गये, शुरू तो फिल्मो में काम के नाम पर आये थे, थोड़े दिनों में जोश ठंडा पड़ा तो होश आया तब सीरियल वालों के यहाँ ड्राइवर का काम मिल गया। मगर हालातों से लड़ते–लड़ते खुद की टैक्सी ले ली।

ओह, तो तुम यहाँ हीरो बनने आये थे ?

मैं तो क्या, यहाँ इन सडकों पर रेंग रहा हर व्यक्ति या तो हीरो या बड़ा सेठ बनने आया था, यह बात अलग है कि किस्मत ने उसे क्या रोल दिया।

स्टेशन के बाहर बहुत भीड़ थी लोग चल नहीं रहे थे बल्कि जेसे ठूँसे जा रहे थे।

दुरन्तो अपने राइट टाइम पर थी। कुछ खाने पीने का सामान लेकर बैठ गया। महानगर का शोर उसके बंद कम्पार्टमेंट में थोड़ा कम हुआ। मैं काफी देर तक अकेला बैठा रहा। बड़ी उम्मीद थी कि कोई खूबसूरत सहयात्री मिलेंगे तो रास्ता खुशगवार हो जायेगा।

किताब निकाल कर.पढ़ने बैठा ही था कि 'ओय हीरो, निकाल पैसे'

तालियाँ बजाते वो आ पहुँची। हाँ, वही जिसे आप और हम हिंजड़ा कहते हैं।

हमारे मन में हमेशा इनके प्रति पूर्वाग्रह रहते हैं कि कौन माथा लगाये, दस पांच रुपये देकर पीछा छुड़ाओ वरना सबके सामने बेइज्जती करेंगे। पर मैं भी अकेला था तो सोचा आज कुछ तूफानी करते हैं।

पैसे तो मैं दूंगा मगर पहले कुछ सवालों के जवाब दो।

ओ चिकने, ज्यादा होशियार मत बन, चुपचाप रुपये दे, मजदूरी का टेम खोटी मत कर ट्रेन रवाना हो जायेगी, आगे भी जाना है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अरे ऐसा नहीं है, मैं पत्रकार हूँ थोड़ा जानना चाहता हूँ।

अच्छा आप रिपोर्टर हो चलो ठीक है अभी पैसे निकालो और मैं पहले ट्रेन में चक्कर लगा आती हूँ।

चलो ठीक है।

थोड़ी देर बाद वापिस आई।

हाँ, साहब अब पूछो ?

अरे आप लोग माँगते क्यों हो कमा कर खाया करो ?

अरे साहब फोकट में ताली बजाने से पैसा मिल जाये तो कौन छोड़ेगा, सही कहूँ तो आदत सी पड़ गई है।

वैसे आप कहाँ से हो ?

कहाँ से हूँ यह तो नहीं पता मगर जब से होश संभाला तब से शबनम मौसी के पास धारावी की गलियों में खुद को पाया था।

पढ़ाई ?

थोड़ी बहुत की, ज्यादा नहीं।

आप तो पढ़े लिखे लगते हो ?

यह तो दुनियादारी ने सिखा दिया।

अभी कहाँ रहती हो ?

लॉअर परेल के बाजू में फ्लैट है।

क्या कहा फ्लैट ?

हाँ साहब ज्यादा चकित मत हो हम भी इन्सान हैं, हमें भी हक है फ्लैट में रहने का, पर पैसे कहाँ से लाये इतने सारे ?

पैसे तो साहब कमाने पड़ते हैं, इस मायानगरी में फोकट में तो कोई धक्का भी नहीं देता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तो किसके साथ रहते हो ?

बेटी के साथ।

बेटी ?

हाँ साहब गोद ले रखी है।

और कौन रहता है ?

कभी-कभी प्रेमी भी मिलने आ जाता है।

प्रेमी ? वो मुझे हर दूसरी बात पर चौंका रही थी।

क्यों प्रेमी भी नहीं बना सकते हैं ? हमारे भी इमोशन्स हैं साहब

अच्छा, कौन है प्रेमी ?

एक शादीशुदा सेठ है जिसकी अपनी फेमिली है।

आप कहाँ मिले ?

मैं एक एन.जी.ओ. से जुड़ी हुई हूँ, जो बदनाम गलियों के बच्चों को उस रेड सर्किल से निकाल कर उनके पुनर्वास के लिए एवं एड्स पर अवेयरनेस के लिए काम करता है।

मैं भी कभी उस बदनाम गली का हिस्सा थी।

हमारी ज़िंदगी में कौन कब मिलेगा और कितना भीतर उतरेगा यह हम तय नहीं कर पाते। हालांकि शबनम मौसी ने कह रखा था कि 'छोरियों, यह मायानगरी है, यहाँ दिल से नहीं दिमाग से खेलना वरना भूखी ही मरोगी।'

पर साहब नियति आपको कहाँ लाकर खड़ा करती है, यह आपके हाथ में नहीं है।

मैं सुन रहा था, वो कहे जा रही थी, प्लेटफ़ॉर्म पर हलचल जारी थी। ट्रेन को रवाना होने में अभी वक्त था।

जब जवानी के दहलीज पर कदम रखा तो मौसी ने जीवन का गूढ़ ज्ञान दिया कि जब तक जवां हो, कुछ कमा लो फिर तो तालियाँ बजा कर ही गुजारा करना है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुझे अच्छे से कोठे पर बिठा दिया, अब आप सोचोगे कि कोठे और अच्छे भी।

हाँ, साहब यहाँ पर अच्छे ठीक-ठाक सब तरह के होते है जवान, खूबसूरत लड़कियाँ, विदेशी बूढ़ी औरतें और हम जैसी सबकी अपनी-अपनी कैटेगरी और ग्राहक होते हैं। जेब में पैसों के आधार पर आपकी हैसियत तय होती है कि आप किस कोठे की तरफ रुख करोगे।

अरे ट्रेन चल पड़ी है।

'आपकी कहानी तो अभी पूरी ही नहीं हुई' मैं ट्रेन चलने के साथ बोल पड़ा।

चिंता न करो साहब मैं भी इस सफर की यात्री हूँ, पीछे वाले डिब्बे में मेरा रिजर्वेशन है।

तो आप कहाँ जा रही हो ?

उदयपुर।

क्यों ?

मैं एड्स पर अवेयरनेस सेमिनार में जा रही हूँ।

अब मैं निश्चिंत होकर बैठ गया, आप भी अब निश्चिंत होकर, तकिया लगाकर पढ़े। इस कहानी को मैं यहाँ अचानक खत्म कर सब कुछ पाठकों के हवाले नहीं करूँगा क्योंकि यह सिर्फ कहानी नहीं है मेरी यात्रा का संवेदनशील पड़ाव है जिसने मेरे कई पूर्वाग्रहों को तोड़ा है।

तो साहब, मुझे रुबिया मौसी के अच्छे कोठे पर बिठा दिया गया, दिखने में सुंदर और उभरती जवानी, कली सी खिली मेरी देह को देखकर भँवरे सा ग्राहक खिंचा चला आता।

इस तरह सालों तक देह की यात्रा से जीवन को समझने की कोशिश करती रही। अधेड़ होते-होते लोग किनारा करने लगे। हमारा कमर के साथ ही कमरा बदल दिया गया हमारी जगह नयी लड़कियों ने ले ली। इधर तो भूले-भटके, कभी-कभार एक ग्राहक आता।

यह जीवन भी अजीब है साहब। हम रोज सुबह उम्मीदों के साथ उठते हैं दिनभर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुरक्षाएँ कमाते हैं और उन सुरक्षाओं को बैंकों में जमा करते जाते हैं मगर देह की शाम ढलते–ढलते सब सुरक्षाओं की एफ.डी. धरी की धरी रह जाती है और शेष रहता है हमारा बनाया हुआ रेड सर्किल।

रूप गया, देह गई, जवानी गई, पैसा गया और पद गया, सब किनारे हो जाते हैं, मगर साहब आत्मा तो कभी बूढी नहीं होती है, न मरती है।

उसके इस आध्यात्मिक वक्तव्य ने मुझे कुछ ज्यादा चौंका दिया। मैंने तो इस हिंजड़े से टाइमपास की उम्मीद की थी, न मैं पत्रकार, न मैं कुछ जानना चाहता था, मगर अब यह ज्यादा रहस्यमय लग रही थी। ट्रेन मुंबई से बाहर निकल चुकी थी। मुम्बई और वापी के बीच साँझ के वक्त छोटे पहाड़, खेत और गाँव इतने हरे–भरे हैं कि आपको लगता ही नहीं कि थोड़ी देर पहले आप कंक्रीट के जंगल से निकल कर आ रहे हो।

एक दिन मैं कोठे पर बैठी थी तो वह सेठ दिखा। जो कभी जवानी के दिनों में मेरा दीवाना था। पर कई सालों बाद दिखा। ऊपर की मंजिल की ओर जाते वक्त मुझे देख ठिठक गया।

तुम यहाँ नीचे आ गईं ? उसने आश्चर्य से पूछा।

सेठ जी, मैं नहीं आई, यह देह नीचे आ गई। मैं तो अभी भी ऊपर ही अटकी हुई हूँ।

वो ठहर गया, उस दिन...हमेशा के लिए, मेरे लिए।

मैं उसे कमरे में ले गई। उस दिन पहली बार किसी से शरीर नहीं, मन शेयर किया।

आपकी तरह मेरे मन में भी यहाँ कीड़ा कुलबुला रहा था कि यह तो हिंजड़ा है फिर यह कोठे पर ?

अब तो वह खुल कर बात करने लगी तो पूछ ही लिया।

अच्छा यह बताओ, आप ग्राहकों से कैसे... ?

वो जोर से हँसने लगी मैं अपने ही सवाल पर शर्मिंदा होने लगा।

अरे साहब आप भी किस दुनिया में जीते हो, लोग सिर्फ उसके लिए ही नहीं आते यहाँ अगर ऐसा होता तो शादीशुदा मर्द नहीं आते।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तो फिर किसलिए ?

साहब लोग यहाँ खुद को अलग-अलग औरतों के साथ हर वक्त सेन्सुअल प्लेज़र चाहते हैं, खुद को घड़ी भर के लिए भूलने के लिए...चाहे वो अनुभव क्षणिक, झूठा और आभासी ही हो।

अरे यह तो ओशो के मनो-विज्ञान की बात कर रही है।

कहानी, रेल और ज़िंदगी जब तक चलती है तब तक उसमें आनन्द आता है लेकिन जैसे ही वो धक्का खाकर रुकती है तो आपको अजीब सी झुंझलाहट देती है और बार-बार आपको कचोटती है कि कब रवाना होगी फिर से ... हैं न ?

पर मैं क्या करूँ वो सूरत स्टेशन पर उतर गई, ट्रेन सिग्नल के इंतजार में खड़ी है और कहानी यहीं खड़ी है। मैं अपनी सीट पर बैठा हूँ और आप इस कहानी को सुनने के चक्कर में... दरअसल हम कहानी सुनना नहीं चाहते हैं हम शायद उसमें खुद को ढूँढ़ते हैं या फिर दूसरे के दुःख और सुख में डूब कर खुद को भूलना चाहते हैं। लो मैं भी कहाँ उसकी भाषा में बात करने लग गया। चलो ट्रेन के रवाना होने के साथ उसकी जुबान से कहानी को और आगे बढ़ाते हैं।

एक दिन उसने मुझे कहा कि क्या एन.जी.ओ. के लिए काम करोगी ?

कोठे से लेकर एन.जी.ओ.तक आना मेरे लिए टर्निंग पॉइंट था।

मुझे कोठे के जीवन पर एड्स के प्रति जागरूकता उनके बच्चों को पढ़ाई के लिए प्रोत्साहित करना और उनके पुनर्वास के लिए बाकायदा प्रशिक्षण दिया गया।

शुरुआती दिनों में काफी विरोध झेलना पड़ा, झगड़ा और मारपीट भी हुई थी मगर धीरे-धीरे लोग समझने लगे, यह उनकी बेहतरी के लिए है।

इस बहाने कई शहरों में सेमिनार, मीटिंग्स, प्रेस कांफ्रेस और कार्यक्रमों में जाने लगी। मैं हिंजड़ा थी, कोठे के अनुभव थे इसलिए मेरी बात को लोग गौर से सुनते थे।

सरकारों और यू. एन. ओ. से काफी मदद मिली और हमारा एन.जी.ओ.अच्छा चलने लगा। एन. जी.ओ. में काम करने के दौरान सेठ जी ने मुझे फ्लैट दे दिया जिसमें एक तरफ ऑफिस दूसरी तरफ मेरा घर बन गया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'अच्छी बात है' इसके सिवाय मेरे पास कुछ कहने को नहीं था।

कुछ देर तक हम चुपचाप बैठे रहे।

मैंने सोच कर आखिरी सवाल पूछना चाहा 'क्या तुम खुश हो अपने इस जीवन से?'

कुछ देर तक वह बोली नहीं। ज़िंदगी में कई बार ऐसे सवाल भी पूछ लिए जाते है जिनका जवाब शब्दों में नहीं दिया जाता केवल महसूस किया जा सकता है। इसलिए सवाल का ईमानदार जवाब क्या होगा यह जवाब देने वाले के पास भी नहीं होता शायद।

कुछ कह नहीं सकती साहब ...मगर फिर भी भगवान को धन्यवाद देना चाहूँगी इस खूबसूरत दुनिया में जी रही हूँ नहीं तो कहीं उस रेड सर्किल में घनचक्कर सी घूमती हुई गुमनाम सी खो जाती।

तुम्हें इस दुनिया से कोई शिकायत?

शिकायतें तो किसको नहीं है साहब हम तो बस यह चाहते हैं कि हमारे साथ भी इन्सान जैसा व्यवहार किया जाये। ईश्वर ने हमें जिस भी रूप में भेजा है उसको समाज स्वीकार कर हमारी भावनाओं को समझे।

हमें भी बहन-बेटी सा प्यार चाहिए, हम भी दोस्त चाहते हैं, नौकरी, घर-बार और खुशियाँ चाहते हैं। समाज हमें अपना अंग समझे, उपेक्षित नहीं।

मैं चुप था उसने मुँह फेर लिया और बाहर देखने लगी। रात को 11 बज रहे थे और ट्रेन किसी सुनसान जंगल को पार कर रही थी।

गुड नाइट' कह कर वो अपने डिब्बे की ओर चल दी।

मेरे आसपास और भीतर रेड सर्किल फैलता हुआ दिखने लगा। हम कैसे पूरे समुदाय को समाज से निकाल एक सर्किल में डाल देते हैं जहाँ फैलता है उपेक्षा, तिरस्कार का रेड वर्तुल...।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बिकी हुए शामें

देव उठ चुके थे। शहर में रौनक थी। लोग शादियों की खरीदारी में व्यस्त हैं। हल्की गुलाबी सर्दी ने भी देव दीपावली पर दस्तक दी। श्रीमती जी को किसी शादी में जाना है तो कपड़ों की खरीदारी करनी है। आज रविवार है तो कोई बहाना नहीं चलता देख स्कूटर ले चल पड़ा। कितना बदल गया है शहर। ऐसे लगता है परकोटे के भीतर का शहर साँस लेने के लिए घुट रहा है। दुकानों के छज्जों के कंगूरे काले पड़ गए हैं। ऊपर देखो तो तारों और होर्डिंग से अटी पड़ी हैं गलियां। लोग टैक्सियों और साइकिल वालों को धकियाते लड़ते, झगड़ते रास्ता बनाते हुए जा रहे हैं। यह शहर अब मेट्रो बन चुका है मगर खरीदारी की रवायत अभी तक नहीं बदली। लोग आज भी खरीदारी के नाम पर शहर के भीतरी हिस्से को विश्वसनीय मानते हैं चाहे घी खरीदना हो मिठाई या फिर शादी के कपड़े।

यहाँ पीढ़ियों से लोग एक ही दुकान से खरीदारी करते हैं इसलिए मैंने भी आदतन उस दुकान के आगे ही स्कूटर रोका। सच पूछो तो शादी की खरीदारी में पुरुषों का दुकान के भीतर कोई काम नहीं होता है सिवाय रेट सुनकर कुढ़ने के या घड़ी देख चिंतित होने के कि अभी बीसियों काम बाकी हैं और पूरा दिन तो यहाँ खत्म हो गया। दुकान में पहले से ही भीड़ थी इसलिए मैं दुकान के बाहर रखे ' पति वेटिंग टेबल ' पर जूतों के पास बैठ गया। अगर आप त्रिपोलिया में हो और मोहतरमा के साथ कपड़ों की थैलियां पकड़े हुए नहीं पाए जाओ तो अहो भाग्य।

'क़ीमती सामान की हिफ़ाजत ग्राहक स्वयं करे।'

मुझे बोर्ड देख हँसी आई।

दुकानदार भी बड़े समझदार होते हैं शक्ल देख कपड़े दिखा रहे थे।

'अरे! भाई साहब कोई अच्छी पोशाक दिखाओ।' औरतों की एक ही माँग थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'बाई सा आप तो रेंज बताओ, हैवी में चलेगी।'

अब उसने ऊपर से नया थान मंगवाया।

ये देखो हुकुम, नया ट्रेंड है भारी बनारसी वर्क है और अभी यही चल रहा है।

शोरूम की दूधिया रोशनी की चकाचौंध में दुल्हन की पोशाक पर लगे सलमा-सितारे चमक रहे थे मगर रेट जानकर साथ आये पुरुषों के चेहरे फीके पड़ रहे थे।

'अरे छोटू! बा साहब को बढ़िया चाय पिलाओ।'

दुकानदार भांप गया कहीं यह उठ कर चले न जायें।

इधर हम सरकारी बाबू बैठे बैठे हिसाब लगा रहे थे कि मोहतरमा कोई ज्यादा खरीदारी न कर लें। नहीं तो इस महीने की ईएमआई गले पड़ जायेगी। सातवें वेतन आयोग में 5000 क्या बढ़ गए उस चक्कर में 30000 रुपये अतिरिक्त खर्च कर दिये।

खैर, हिसाब किताब ठीक न बैठता देख थक कर दुकान के बाहर आ गया।

अब साहित्यकार मन इधर-उधर भटकने लगा। देखा तो पड़ोस में सीढ़ियों पर बनी एक दुकान पर एक दस साल का बच्चा कुछ बेच रहा था। पिचका हुआ चेहरा और दुबले पतले हाथ। हाथों के नाखूनों में मैल जमा हुआ, पैर फ़टे हुए से, सर्दी से बचने के लिए पतला सा स्वेटर पहना हुआ।

ग्राहकों से जब वह फ्री हुआ तो मैंने उसके पास जाकर बातचीत शुरू की

क्या नाम है छोटू ?

'सूरज'

कौनसी क्लास में पढ़ते हो ?

'पांचवीं में' भैया आप क्या लोगे ? यह देखो नए पेटीकोट ओर ब्लाउज आये हुए हैं। मटमैले दांतों से मुस्कराते हुए बोला।

दुकान में सामान के नाम पर धूल जमे हुए पेटीकोट, ब्लाउज, नाड़े और पुराने कपड़ों से बने हुए रज़ाई के कवर थे।

यह दुकान आपकी है ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नहीं, मेरे अप्पा की

अप्पा मने ? ?

बड़े पापा

अच्छा।

आज अप्पा कहाँ गये ?

वो शहर से बाहर गये हुए हैं।

अच्छा ! तो पूरे दिन आप दुकान संभालोगे ?

हाँ।

कितनी कमाई हो जाती है ?

आज तो 400 रुपये हो गये मगर कभी-कभी तो बोहनी भी नहीं होती।

पैसा हमारे जीवन का अंतिम सच बन गया है किसी के लिए 400 ज्यादा होते हैं और किसी के लिए 4000 भी कम पड़ते हैं मगर बोहनी नहीं होना कितना दुखदायी रहता है।

'ओह ! तो फिर घर कैसे चलता है ?' मेरा अगला सवाल यही था।

'पता नहीं अप्पा चला लेते हैं' कई बार सवाल जवाब नहीं ला पाता आपको ही तय करना होता है कि इसका ठीक-ठाक जवाब क्या होगा।

तुम्हारे पापा क्या करते हैं ?

वो तो माणक चौक में काम करते थे।

अब ? ?

'अब वो नहीं रहे, मैं स्कूल था तब उनको हार्ट अटैक आ गया था।' उसने यह बात इतनी जल्दी में कह कर, पास जा रही औरतों को खरीदारी के लिए आवाज लगाने लगा।

'ओह...' मेरे पास इसके सिवाय कोई प्रतिक्रिया नहीं थी इस जवाब की।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जितना उम्र में छोटा था उतने ही जवाब छोटे मगर उनकी मार बड़ी गहरी थी। सच वक्त की मार ने उसे कितना गहरा और समझदार बना दिया।

'और मेरी मम्मी भी पापा के बाद कहीं चली गई' उसके मासूमियत भरे जवाब ने मुझे हिला दिया।

समाज में बिन माँ-बाप का बच्चा विक्षिप्त सा हो जाता है जब लोग उसे हिकारत की नज़र से देखते हैं कि बापड़ा...

शायद यह वेल विशर्स ही इनको इस दर्द से उबरने नहीं देते और हर वक्त महसूस करवाते हैं कि तुम अनाथ हो, दया के पात्र हो।

जीवन कितना अजीब है क्षणभंगुर, अस्थाई सुख भी और दुःख भी। कोई नहीं रुकता, कोई नहीं सोचता, बस घड़ी भर औपचारिकता निभाई फिर दौड़ पड़े। कहाँ दौड़े जा रहे हैं ? पता नहीं।

यहाँ किसी का होना और नहीं होना सिवाय स्वार्थ के कोई मतलब नहीं। इसलिए दौड़ने में भी कोई खास मजा नहीं संतुष्टि नहीं...थोड़ी बहुत हिस्से में आती है तो RIP या Congratulations.

उसके भी क्या मायने जब तक दिल से कुछ नहीं निकला।

मैं चुपचाप इधर-उधर देखने लगा।

वो बिखरे हुए कपड़े समेटते हुये अचानक बोलने लगा 'मैं तो पापा के जाने के बाद नानी के घर चला गया, बाद में वापिस आया तो घर पर पूछा तो सभी ने कहा मम्मी बाहर गई है कुछ दिन बाद वापिस आ जाएगी, पर भैया कोई दो साल तक बाहर रह सकता है क्या ?'

उसके इस सवाल ने मुझे हिला दिया मैं वहाँ से चलना चाहता था, मैं उसके हालातों पर दया भाव नहीं लाना चाहता था मगर श्रीमतीजी अभी भी अंदर थी।

उसने फिर बोलना शुरू किया 'स्कूल गया तब मेरी मेम और दोस्तों ने बताया कि मेरी मम्मी कहीं गई नहीं है वो भी मर गई।'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं उसकी आँखें देख रहा था मगर पिचके हुए चेहरे में अंदर धँसी आँखों में सूनापन था।

कई बार स्मृतियों से उभरे जख्मों के जवाब में एक गैप होता है जो शायद सुनने वाले को खुद भरना होता है, अपनी संवेदना के अनुसार।

मरना क्या होता है ? क्या यह समझता होगा ? मैंने मन में ही सोचा।

'तुम कितने भाई बहिन हो' मैं मुद्दे को बदलना चाहता था।

तीन, एक बहिन है निरमा और दूसरा टीनू पर मोनू मेरा सगा भाई नहीं है वो अप्पा का बेटा है।

शायद यह सब इसे घर पर महसूस करवाया जाता होगा कि सगे भाई–बहिन क्या होते हैं।

मैं हैरान था क्रूर ठोकरों ने कितना जल्दी इस बाल मन को सिखा दिया कि सगा क्या होता है।

'भैया आप बताओ न मम्मी वापिस आएगी क्या ?'

मेरी हालत अजीब हो रही थी कभी तो सोचता चला जाऊँ कभी सोचता क्यों इसे गले लगाया। बने थे साहित्यकार की नजर दौड़ाने और ऐसी संवेदना आकर गले पड़ी कि कुछ जवाब देते तक नहीं बन पा रहा था।

हम अक्सर लोगों को झूठी संवेदना देकर सामने वाले को खुश करने का प्रयास करते हैं कि सब ठीक हो जाएगा मगर झूठी संवेदनाओ से दुःख नहीं धुलता बल्कि और ज्यादा उभरता है।

'अच्छा ये बताओ सूरज चौथी में कितने नंबर आये ?' मैं उसे फुसलाना चाहता था।

'भैया, चौथी में मुझे तो मेडल मिला और निरमा को टिफिन हाथ लगा। मगर मैं तीसरी में फेल हो गया।'

'वो कैसे ?' मैंने पूछा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'फेल नहीं दो कदम पीछे रह गया फिर मेम ने पास कर दिया।'

मेरे चेहरे पर दुखभरी मुस्कान फैल गई कि जीवन कितना निष्ठुर होता है जो हमें दु:ख भी देता है और साथ ही आश्वस्त भी करता है कि सब ठीक हो गया।

ऐसा क्यों हुआ ?

'भैया मुझे एग्जाम में है न ममी की याद बहुत आती थी।' वो रुँआसा हो गया।

पता नहीं यह अस्थायी स्मृतियाँ हमारा खण्ड-खण्ड पीछा क्यों करती है। यह रेगिस्तान की तपती रेत पर पड़ी बून्द सी सूख क्यों नहीं जाती।

उसने फिर बात वहाँ ला दी।

मैं छुटकारा पाना चाहता था

'अच्छा अच्छा कोई बात नहीं, तुम क्या बनना चाहते हो ?'

'मैं क्या ? मैं तो वैज्ञानिक बनना चाहता हूँ'

'क्यों ?'

'मैं आविष्कार करना चाहता हूँ'

'वो कैसे करोगे ?'

'वो तो पता नहीं मगर अप्पा कहते हैं कि इधर-उधर खोजते रहो अविष्कार हो जायेगा।'

'अरे वाह' उसकी बाल सुलभ जिज्ञासा पर मुस्कुरा उठा।

मैं फिर गुम हो गया।

'तुम स्कूल से वापिस आकर पढ़ते हो क्या ?'

नहीं भैया, खाना खाकर यहाँ आ जाता हूँ।

शाम को खेलने जाते हो क्या ?

मम्मी पापा थे तब क्रिकेट खेलते थे मगर अब शाम तक दुकान पर बैठना पड़ता है बड़ी माँ कहती है अप्पा बूढ़े हो गए हैं इसलिए मदद करो।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'अच्छा, मोनू नहीं आता क्या ?'

'नहीं वो शाम को ट्यूशन जाता है।'

मैं चुपचाप सुन रहा था शाम घिर आई थी मगर आज यह बिकी हुई लग रही थी, मैं उससे जल्दी छुटकारा चाहता था।

'भैया ! आपको पता है हार्ट अटैक होने पर लोग कहाँ जाते हैं ?'

मैं वहाँ से भाग खड़ा हुआ।

कई बार हम खुद से तो कभी सामने वाले के सवालों से लाचार होकर भाग खड़े होते हैं जहाँ हमारी बौद्धिकता, संवेदनशीलता सब धरी की धरी रह जाती है।

मैं आज भी त्रिपोलिया की तरफ जाता हूँ तो उस गली को छोड़कर दूसरी तरफ लम्बा चक्कर लेकर जाता हूँ। कहीं मुझे वो उस गली की मोड़ पर बैठा बच्चा हमेशा सवाल लिए हुए सूनी आँखों से ताकता हुआ कहीं यह न पूछ बैठे 'भैया...मम्मी वापिस आएगी क्या ?'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मार्क्स में मनु ढूँढ़ती

वो साँझ की बस थी। ढलते सूरज का ताम्बई रंग गाड़ी के शीशों से टकरा रहा था। हालांकि इस रेगिस्तानी इलाके में दो बार बारिश हो चुकी थी मगर फिर भी हल्की सी लू चेहरे पर महसूस की जा सकती थी। जयपुर से रवाना हुआ ड्राइवर थका हुआ सा लग रहा था। मिड वे पर गाड़ी रुकी तो दाल के पकौड़ों की गंध वातावरण में घुल गई, शायद वातावरण में तो पहले से ही थी मगर गाड़ी में बैठे लोगों के ज़ेहन में अब घुल चुकी थी। केतली में रखी खारे पानी से उबली चाय ने उसकी थकान को और बढ़ा दिया। वो अब भी उदास बैठी थी।

वॉशरूम जाना चाहती थी मगर लेडिज टॉयलेट नहीं देख यूं ही बैठी रही। मोबाइल पर हेडफोन लगा गाने सुन रही थी। मगर उसे कोई भी अच्छा नहीं लग रहा था। सूफी, पॉप, न्यू और राजस्थानी सब जोनर बदल दिए मगर कोई भी उसकी उदासी का साथ नहीं दे पा रहे थे। सूरज पश्चिम के धोरे पर थक कर रंग बदल रहा था। इधर रोड के दोनों तरफ नमक की सफेद ढेरियां चमक रही थीं।

'क्या आपके टूथ पेस्ट में नमक है ? ऐड दिमाग में अनायास आया। वो फीकी सी मुस्कुराई। शायद नमक नहीं था जीवन में। कुछ सफर बाद धोरे, ढाणियाँ, बकरियाँ और भेड़ें सब दिख रहे थे और गाड़ी में वही उबाऊ और थकी हुई 10 सवारी मात्र। कभी- कभी देख लेती उनके चेहरों को।

महिला सीट पर हॉस्पिटल से छुट्टी लेकर लौटी बुढ़िया बैठी थी जिसके हाथ पर अभी भी ड्रिप के निशान थे तो देह से हॉस्पिटल की गंध से उबकाई उठ रही थी। एक-दो छोटे बच्चे ऊपर नीचे हो रहे थे मगर सफ़र की थकावट उनके चेहरों पर भी दिखाई दे रही थी। वह बच्चों को देख खुश होना चाहती थी मगर बच्चे थक चुके थे। दिल्ली के जे.एन.यू. की स्कॉलर रेगिस्तान के एक गाँव की ओर लौट रही थी। उदासी हटने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
का नाम ही नहीं ले रही थी। कभी वो 'परांजपे सर' की क्लास में मार्क्स का वर्ग संघर्ष पढ़ रही थी मगर आने वाले कल में दादा के बकरियों के बाड़े पर जीवन संघर्ष पढ़ेगी।

'अरे! कौन बीड़ी पी रहा है बंद करो।' कन्डक्टर चिल्लाया।

बीड़ी की गंध उसके नथुनों से टकराते ही उसे फिर से दिल्ली, 'जे.एन.यू.' और फिर 'वो' याद आ गया। इधर उसे सिगरेट की तलब हो उठी और उधर धोरे के पीछे का आसमान पूरा लाल हो उठा।

पचपदरा स्टेशन क्रॉस करते ही उसकी उदासी के साथ ही साँझ और गहराने लगी। वो आँख बंद कर सोचते हुए सो गई।

स्टेशन से उतर ढाणी की तरफ भारी कदमों से चलने लगी। कई बार आप एक ही जगह बेमक़सद बार-बार लौटना चाहते हो मगर धीरे-धीरे उस जगह से आपका आकर्षण खत्म होने लगता है वो रास्ते और उस पर खड़े पेड़-पौधे आपको अनजान लगने लगते हैं। आप अपने को यूं ही घसीटते हुए आगे बढ़ते हों।

वो दिल्ली से गाँव आ गई। उसे समझ नहीं आया अब उसे कहाँ जाना चाहिए इसलिए ज्यादा समझ न आया तो ट्रेन से जयपुर और फिर वहाँ से गाँव की बस पकड़ ली हालांकि उसे पता था उसे वहाँ पर भी कोई बड़ी सांत्वना की वजह नहीं मिलेगी। सब नाराज हैं, मगर उसे अंदर से लगा, कुछ भी हो, घरों की तरफ लौटना एक गहरी उदासी से उबरना होता है।

उदास और थकी हुई दुपहरी थी। कुछ भी करने को मन नहीं कर रहा था। वो ढाणी के बाहर खेजड़ी के नीचे पड़ी माँची पर बैठी थी। अजीब टाइप की बोरियत हो रही थी, घर के सब लोग आसपास ही थे पर कुछ भी भला नहीं लग रहा था। सब अपने काम में व्यस्त से दिख रहे थे जैसे उसके आने से और उसकी उपस्थिति से किसी को कोई फर्क नहीं पड़ा हो या ऐसा दिखाये जाने का नाटक चल रहा था। उसे इससे ऊब हो रही थी, अपनों के बीच ऐसे हालात में।

एक ऐसी बेचैनी जिसमें खुद को ही पता नहीं, किस चीज की तलब हो रही थी। मन घुट रहा था वो बौरा गई थी। वो इस हालात से बाहर आना चाहती थी। मगर कैसे? यह उसे समझ नहीं आ रहा था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्या सब उसकी गलती थी ?

उसने ही सबकी नाक कटवा दी। कोई उसे सुने तो सही।

वो उसे जे.एन.यू. में मिला था।

ज़िंदगी में कितनी ही मुलाकातें ऐसी होती हैं जिनका कोई परिणाम नहीं होता है, निरुद्देश्य सी मुलाकातें जब याद आती हैं तो अंदर से सब कुछ चीर के निकल जाती हैं और शेष बचता है गहन वीरान सन्नाटा।

आज वह उन मुलाकातों से भर गई जिससे चारों तरफ दु:ख गहराने लगा। यह रेगिस्तान अब उसे भयावह लगने लगा। जहाँ जीवन पनपने और फिर खुद को बचाने के लिए कितना संघर्ष करना पड़ता है और सहन करने पड़ते हैं लू के थपेड़े और दिसंबर की जमी हुई सर्द रातें...

उसका सब्जेक्ट आई.आर. था जबकि वो मनोविज्ञान से था। एक विषय का दूसरे विषयों में सम्बन्ध खोजते हुए हम भी मिल गए।

हमारे बीच में कई ऐसी चीज़ें थीं जो किसी एक रिश्ते का नाम देने के लिए काफी थीं। हम एक दूसरे के बॉयफ्रेंड गर्लफ्रेंड नहीं थे मगर लगते वैसे ही थे। कुछ चीजें थीं जो अलग करती थीं जैसे एक-दूसरे को प्यार नहीं करते मतलब रोमांच वाली फीलिंग नहीं थी।

पर अंडरस्टैंडिंग इतनी अच्छी थी कि गहरे प्रेमी भी धोखा खा जायें। समझ की गहराई इतनी कि कभी बोलना तो दूर इशारा भी नहीं करना पड़ता, समझ जाते हालातों को और हकीकत को।

घंटों तक बातें तो कभी लम्बी ख़ामोशी पसरी रहती, मगर आसपास बोरियत कभी नहीं दिखी।

कभी देश दुनिया के मसलों पर तो कभी रूहानी रिश्तों पर।

'पता नहीं तुम इतनी रहस्यमयी क्यों लगती हो ? तुम्हें क्यों सोचता हूँ, तुम्हारे होने के बारे में सोचता हूँ फिर हमारे प्यार के बारे में सोचता हूँ तो लगता है प्यार भावनाओं से नहीं बल्कि दिमाग से भी हो सकता है' वो अक्सर कहा करता था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'पर कभी-कभी हमें लगता है हम प्यार नहीं करते हैं बल्कि कुछ खोज रहे हैं समानान्तर...क्योंकि प्यार एक सीमा तक होता है एक उद्देश्य तक फिर वही घिसी-पिटी कहानी...।

पर हम अनंत की खोज में हैं। पता नहीं पर कुछ ...मतलब खोजना चाहते हैं जो दोनों को पता नहीं। न सवाल न जवाब न रास्ते...पर प्यास एक सी...' मेरा उसको ऐसा ही कुछ जवाब होता था।

मन के धरातल का जवाब हो...पता नहीं कुछ चीजों का होना आपको समझ में नहीं आता बस यूं ही...कारणों और परिणामों से परे...।

सच और प्यार अकारण होते हैं इसमें आपको प्रयास नहीं करना पड़ता।

मगर पता नहीं क्यों ऐसे रिश्तों को नजर क्यों लग जाती है। हाई मेच्योर लोग इतनी बेवकूफ़ी क्यों कर जाते हैं उसे आज तक समझ नहीं आया।

मानव मन के बारे में उसने खूब पढ़ा जाना मगर खुद के मन को समझ नहीं पाया कि दरअसल वो क्या चाहता था।

मैं उसके वामपंथी सोच की दीवानी थी शायद इसलिए कि मुझे राजनीति विज्ञान में मार्क्सवाद पसन्द था या फिर उसका जीवन के प्रति स्पष्ट नजरिया...पर जो भी हो महिला पुरुष के समानता की वकालत हो या फिर अभिव्यक्ति की आजादी की बात हो हर वक्त विवि परिसर में लड़ता रहता, देर रात की बहसों में अड़ा हुआ मिलता।

उसे मार्क्स और सार्त्र पसन्द थे। खूब पढ़ता हर जगह कोट करता, वो व्यवस्था परिवर्तन और क्रांति की ही बात करता उसे आज के हालात के लिए सिस्टम जिम्मेदार लगता इसलिए हर वक्त ऐसे सिस्टम की बात करता जो अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति के हितों के लिए बात करता हो।

और मुझे गुर्जियफ़, खलील जिब्रान, जे. कृष्णमूर्ति जैसे रहस्यमय लोग हमेशा अच्छे लगते थे। जो प्रेम और सत्य को मनुष्य और प्रकृति के साथ जोड़ते हुए व्यक्ति के भीतरी बदलाव की बात करते हैं न कि केवल बाह्य व्यवस्था में परिवर्तन की।

उसने मुझे विचारकों की नजर से दुनिया दिखाई तो फ्रायड ओर कार्ल युंग के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

माध्यम से स्त्री पुरुष का सामान्य मनोविज्ञान के इड; ईगो और सुपर ईगो को समझाया। हम साथ रहते हुए भी अपने माने की ज़िंदगी जी रहे थे। रेगिस्तान के गाँव से निकली लड़की दिल्ली के मेट्रो में दारू और सिगरेट फूँकती हुई आजादी मेरा ब्रांड है का नारा बुलंद कर रही थी।

वो अजीब से सपने रखता था कि ऊँट पर घूम कर राजस्थान के लोगों का मन देखना चाहता था तो यॉक पर बैठकर बुद्ध के तिब्बत को समझना चाहता था। वह मुझे आदि यात्री सा लगता। जब वक्त मिलता हम लोग यात्राओं पर निकल जाते। उसका मानना था कि यात्राएं व्यष्टि और समष्टि दोनों को समझने के लिए बेहतर माध्यम है। हमने साथ ही सिक्किम देखा, हरिद्वार से ऋषिकेश होते हुए दून देखा। मिल कर मानव मन और यात्रा पर छोटी सी डॉक्यूमेंटरी भी बनाई।

मगर थॉट और थ्योरी के बीच प्रैक्टिकल लाइफ कुछ और ही होती है। हम कितना अच्छा बोलते हैं, सोचते हैं, लिखते हैं मगर जब व्यवहार में उतारने की बात आती है तो हम भाग खड़े होते हैं। मेरा मार्क्स भी प्रैक्टिकली कमजोर निकला। उसने चुपके से सगाई कर ली। ख़बर भी दो माह बाद पता चली। मेरा रिश्तों का सोवियत भरभरा कर टूट गया।

'तुम दारू, माँस और सिगरेट पीती हो और खुले विचारों की हो इसलिए हमारे बिहार के गाँव में एडजस्ट नहीं हो सकती। माँ और बाबूजी मान नहीं रहे हैं' मनोविज्ञान के शोधार्थी के इस कमजोर तर्क ने हमारे रिश्ते को एक ही झटके में तोड़ दिया।

'सौंदर्य वह है जो तुम्हारी आत्मा को आकर्षित करता है और वह जिसे 'देना' प्रिय है लेना नहीं।' मुझे उस दिन सिमोन द बाउरे याद आती रही।

इधर टूटन, दर्द और कुछ उसकी यादों के सहारे मैंने ख़ुद को ज़िंदगी के हवाले कर दिया।

उधर घरवाले इस कोशिश में थे कि घर की इज्जत बढ़े इसलिए बड़े ठेकेदार साहब के यहाँ रिश्ते की बात चला रहे थे। इसलिए उन्हें मेरे हाँ का इंतज़ार था। इधर मैं थक चुकी थी। मेरा मार्क्स क्लास की किसी लड़की के साथ यू.एन.ओ. के प्रोजेक्ट

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
के नाम पर रोम के लिए उड़ चुका था। वो इतना कमजोर निकलेगा यह उम्मीद नहीं थी पर जीवन में कई बार ऐसे मोड़ आते हैं जहाँ आपके पास सोचने के लिए कुछ भी नहीं बचता। आप किसी को भी दोषी नहीं ठहराते बस आप शून्य में यूँ ही ताकते रहते हो।

इसलिए एक बारगी तो मना कर दिया। मगर मन के किसी कोने में उसकी याद और बिछोह ने अजीब हालात में ला दिया था दूसरी तरफ घरवालों पर रहम कर हाँ कर दी।

बड़े खानदान का लड़का मिला, गाँव समाज में प्रतिष्ठा बढ़ी। हर किसी को बताया जा रहा है कि लड़के के दादा पूर्व विधायक थे। धूमधाम से सगाई हुई। पर किसी को यह नहीं बताया जा रहा था कि लड़का क्या कर रहा है।

खैर, सगाई के बाद मिले, बातें होने लगी। मुझे पीएचडी के सिलसिले में दिल्ली लौटना था। फ्लाइट बुक करवाई गई, जोधपुर तक छोड़ने आया। रास्ते में हिदायतें मिलना शुरू हुई कि हम खानदानी लोग हैं, आप आगे भले पढ़ो कोई दिक्कत नहीं मगर यह शराब, सिगरेट नहीं चलेगी। थोड़ा अपने आप को सुधारो। मुझे भी अब समाज, नियम और दायरे समझ आने लगे थे तो खुद को बदलने की उम्मीद के साथ जोधपुर से दिल्ली के लिए उड़ी।

मैं अपने को बदल चुकी थी पूरी संस्कारी बहू की भूमिका निभाने के लिए अपने में हर बदलाव की कोशिश कर रही थी।

जे. कृष्णमूर्ति अक्सर कहा करते हैं कि 'हम अक्सर दूसरों में अपनी छवियाँ ढूँढ़ते हैं, उसमें अपने अक्स खोजते रहते हैं, इमेज मेकिंग हमारे थॉट का ही हिस्सा होता है।'

मैं भी मार्क्स को भूल मनु में खो चुकी थी या यूँ कहूँ कि मनु में ही मार्क्स ढूँढ़ने में लगी हुई थी।

'अंदर आ जा, बाहर देख, धोरे पर काली कांठल छा रही है बरसात आयेगी।' माँ ने बाहर पड़े सामान को अंदर रखते हुए उससे कहा।

इतना कुछ होने के बाद भी माँ उसकी बेचैनी को भांप लेती है और केवल उसी वक्त कुछ कहती जब वो अकेली बैठी अपराध बोध से भर जाती है। वरना कभी बात

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नहीं करती। माँ का इस तरह बदला व्यवहार उसे भीतर से रुलाता क्योंकि वो घर में हमेशा माँ के करीब रही।

वो फिर अतीत में खो गई वही घटना क्रम चलने लगा।

सब ठीक चल रहा था ज़िंदगी पटरी पर आ रही थी मेरी थीसिस लगभग सबमिट होने को थी।

तभी अचानक पता चलता है कि मनु यानि होने वाले पति पर धोखाधड़ी का केस हो गया। उसने फोन पर पूछा तो कहा कि कुछ नहीं छोटा-मोटा केस है सेटल कर लेंगे।

वो जब भी घर जाती तो वो बीच शहर में मिलने आता। अब उसका मोबाइल चेक करने लगा।

कई सवाल, कई शक और संदेह...उसे अच्छा नहीं लग रहा था पर अच्छी बहू बनने के लिए सब सहन कर रही थी। इसलिए उलझना नहीं चाहती थी। जिस दिन थीसिस सबमिट करवाई उस दिन अखबार के मुख्य पृष्ठ पर खबर आई कि 'पूर्व विधायक का पोता रेव पार्टी में लड़कियों और ड्रग्स के साथ जयपुर में पकड़ा गया।'

वो अंदर से हिल गई अगर इससे शादी हो गई तो फिर ज़िंदगी बर्बाद हो जायेगी, मगर इधर घरवाले दबाव डाल रहे थे ऐसा घर मिलने वाला नहीं है। यह तो बड़े घरों के लड़कों को फँसाने के लिए होता रहता है। वो चार दिन में जमानत पर बाहर भी आ गया। वो भी गिड़गिड़ाने लगा, माफ़ी, सौगंध, अब कभी न करने की दुहाई।

घरवालों ने साफ मना कर दिया कि अगर सगाई तोड़ेगी तो हमारी नाक कट जाएगी इसलिए अगर तोड़ती है तो फिर इधर वापिस मत आना। जब वो अकेली होती है तो कुछ नहीं होती है।

मगर जब दुनिया के सामने आती है तो जे.एन. यू.की स्कॉलर होती है या किसी की बेटी या बहिन या फिर धोखा खाई हुई लड़की ...पर अभी जो हैं वह कुछ नहीं है क्योंकि वह अकेले में कुछ नहीं है तो सामूहिक जीवन में यह सब क्यों सहन करना पड़ता है। व्यक्ति को समाज से सुरक्षा के बदले इस तरह की कीमतें क्यों चुकानी पड़ती हैं ? इन सवालों ने उसे पागल बना दिया था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस बोरियत को मिटाने के लिए काफ़्का को पढ़ती तो कभी स्वदेश दीपक को।

निर्मल वर्मा कहते हैं कि ''जब हम उदास किताबें पढ़ते हैं तो पात्रों के दुख का हिस्सा बन जाते हैं।''

मगर 'मैंने माँडू नहीं देखा' पढ़ कर मुझे लगा कि हम उनके दर्द में अपने दर्द को जज़्ब करना चाहते हैं इसलिए हिस्सा बन उस दर्द में उतरते हैं। मगर सब बेकार, वो थक कर मेट्रो की घुटन को छोड़ रेगिस्तान की ओर चल दी...उसे लगता था रेगिस्तान में पसरी बालू रेत ही उसे जवाब देगी कि उसकी खोज क्या है और चाह क्या है। किस तरह यहाँ हर चीज के अभावों और लू के थपेड़ों के बाद भी फीनिक्स की तरह फिर-फिर जीवित हो उठती है।

दिल्ली छोड़ गाँव आ गई थी पर यहाँ सब नाराज थे, चुप थे, कोई बात नहीं हो पा रही थी।

वो खुद से ही सवाल पूछती खुद में ही डूब जाती।

'मुझे नहीं पता मेरे होना या मुझे होने के लिए बनना। पर यह सच है जब मैं अकेली होती हूँ तो सिर्फ कुछ नहीं होती हूँ। क्योंकि यह भीतर अजीब सा सुकून देता है।

साँझ होने में अभी देर है मगर बारिश के मौसम में सूरज बादलों में छुप गया। अचानक बड़ी बड़ी बूंदें पड़ने लगीं। तड़ तड़ तड़ातड़...

ऊँट से खेत जोत रहे पिताजी ने जोतना बीच में ही छोड़ ढाणी में घुस गये। बारिश की बूंदों के पड़ने से हाल ही जुते हुए खेत की माटी से सौंधी महक आने लगी। दिल्ली के चार साल से प्रदूषण को झेलने के बाद भी यह वो खुशबू थी जो उसकी स्मृतियों में अभी बची थी।

बूंदें इतनी बड़ी थी कि बकरियाँ भी भाग कर बाड़ की ओट लेने लगी।

'अंदर आजा, खटिया को अंदर ले भीग जायेगी।' दादी भीतर से आवाज दे रही थीं।

मगर वो बारिश के साथ फिर खो गई।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुछ नहीं होने में आपको कुछ होना नहीं पड़ता, कुछ बनना नहीं पड़ता, दिखाना नहीं पड़ता। तुम उस घड़ी अस्तित्व के ज्यादा नजदीक होते हैं। तुम्हें लगने लगता है तुम प्रकृति हो शायद, उसका हिस्सा या फिर प्रकृति ही हो...मतलब कुछ ऐसा ही। जब तुम्हें कोई फर्क नहीं पड़े तो समझो तुम कुछ नहीं होने की दशा में जी रहे हो। उसे बोध होने लगा कि अस्तित्व में मूल रूप से इंसान अकेला ही है मगर यह अकेलापन इस विराट जगत के अस्तित्व की एक इकाई के रूप में भीड़ में छुपा रहता है इसलिए सामान्य जन इसे भीड़ में प्रेम के रूप में ढूँढ़ते हैं मगर बुद्ध बोधि वृक्ष तले...

इस विचार से वो अंदर से भीग गई। उसे समाधान मिल गया वो न मार्क्स के लिए न मनु के लिए न समाज के लिए जियेगी। वो सिर्फ खुद के लिए जियेगी खुद में उतर खुद को खोजेगी और खुद को ही पायेगी।

खटिया से खड़ी होकर बारिश में नहाने लगी।

तपते रेगिस्तान की आत्मा तृप्त होकर आँसू बन गलने लगी। सारा बोझ उतर बहने लगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मँगती

सुबह का मौसम सर्द और कुहरीला सा था। रात भर से जलते हुए रोड लाइट के बल्ब ऊँघते से नजर आ रहे थे। सड़क पर इक्के-दुक्के वाहन उनकी नींद उड़ा रहे थे यद्यपि यह चौराहा शांत और निर्जन सा रहता है आगे गली में सेनापति भवन के गार्ड खड़े रहते हैं। उसके आगे ऊँघते हुए सरकारी आवास के वृक्ष, कॉलेज का मेन गेट अक्सर दिखाई नहीं देता। यह कोटा शहर का इंजीनियरिंग कॉलेज है। कॉलेज खुलने से पहले लोग यहाँ वॉक करने आते हैं। घने पेड़ों के अंधेरे से ढंके इस चौराहे के बाहर की अपेक्षा अंदर चहल पहल ज्यादा रहती है। कुछ बीमार, कुछ वृद्ध, कुछ युवा, सब अपनी मजबूरियों के चलते सुबह की मीठी नींद को बिस्तर पर अकेली छोड़ इस पार्क में चक्कर लगा रहे हैं। कहने को तो सुबह की वॉक स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद होती है मगर यह बात तब याद आती है जब कोई न कोई बीमारी हमारी प्रेमिका बन चुकी होती है और डॉक्टर पर्ची में घूमना अनिवार्य लिख देते हैं।

पास ही बिल्डिंग बनाने वाले मजदूरों के दो-तीन डेरे, खुले में दीवार से सटे हुए लगे है। शायद यहाँ सुबह जल्दी हो जाती है मगर इस डेरे से शायद ही कोई वॉक पर जाता हो। अस्थाई चूल्हों पर रोटियां पक रही हैं तो चूल्हे के पास मिर्च और लहसुन की चटनी घुट रही है। चूल्हे को घेर कर बच्चे बैठे हैं। पुरुष दूर लकड़ियों के अलाव पर हाथ ताप रहे हैं बीड़ियों के धुएं को भीतर खींचते हुए खोखली देह को गर्माहट दे रहे हैं। छोटे बच्चे अभी भी गुदड़ो में पड़े हैं कुछ जाग गये हैं, कुछ रो रहे हैं मगर माँएं इन सबसे बेखबर खाने में लगी हुई हैं। बड़ी लड़कियाँ पानी भरने में व्यस्त हैं। डेरे पर हलचल का यही वक्त है। थोड़ी देर बाद सब मजदूरी पर चले जायेंगे और डेरा सुनसान हो जायेगा पीछे बचेंगे वृद्ध मुखिया कुछ बच्चे और तीन चार कुत्ते ... ।

सुखिया सिर नीचे किये हुए कॉलेज की प्याऊ से पानी भर रही है। बाल बिखरे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हुए आँखें सूजी हुई और शरीर के अंदर हाड़-तोड़ बुखार जो चार दिन से उतरने का नाम ही नहीं ले रहा है। तन जल रहा है, मन भी जल रहा है।

अलाव पर डेरे के आठ दस लोग चर्चा कर रहे हैं। उधर पार्क में शहर के लोग हाथ उठा कर जोर-जोर से बेवजह हँस रहे हैं। यह डेरा मजदूरी के लिए मध्यप्रदेश से निकला है। ठेकेदार जहाँ ठेका लेता है उसके आसपास अपना डेरा डाल देते हैं। इस बार कॉलेज की नई विंग बनाने के लिए यह डेरा डाला है।

रजनी आज जल्द वॉक करके घर जाना चाहती है। उसने एक नजर डेरे पर डाली। वो रोज इधर से वॉक करने अपनी सहेलियों के संग निकलती है मगर पिछले कुछ दिनों से अकेली आती है और जल्दी निकल जाती है।

'फरवरी आ गई मगर सर्दी इस बार भी कम नहीं हुई' अपने हाथ लम्बे ओवरकोट में डाले सोच रही थी।

अचानक उसने सामने आते पड़ोसी भंडारी को देख दूसरा रास्ता पकड़ा।

सुखिया की माँ रोटी बनाते हुए छोटे बच्चे को छाती से चिपका कर दूध पिला रही थी। छोटा बच्चा सर्दी में उस सूखी चमड़ी में बार-बार मुँह मार रहा था मगर दूध नहीं उतर रहा था, कभी रोता कभी दूध पीने की कोशिश करता।

बाप पास ही बैठा मिर्च से रोटी खा रहा था।

'ओ रामधन, इधर आना तो ...' जैसे ही डेरे के मुखिया ने आवाज लगाई तो ऐसे लगा कि गले में उतरती मिर्च और सूखी रोटी ने गला छील दिया हो। वो खाँसी में उलझ गया। सुखिया ने लोटा पकड़ाया तो बाप उसे देख और ज्यादा गुस्सा हो गया वो भाग कर गुदड़े समेटने लगी।

माँ ने रोते हुए बच्चे के दो थप्पड़ जड़ दिए। दम्पती को अहसास हो गया कि शायद पूरे डेरे वालों को पता चल गया अब डेरा छोड़ यहाँ से जाना पड़ेगा।

रजनी जल्दी-जल्दी चक्कर लगा रही थी ताकि सहेलियों से सामना न हों। जब से उसकी बेटी बंगलौर से लौटी है तब से वह सब से कटी-कटी घूम रही है।

बेटी को एम.बी.ए. के लिए बैंगलौर भेजा था मगर एक दो साल में ही खुले

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वातावरण में ज्यादा ही बह गई। शुरू-शुरू में हॉस्टल में रही मगर दूसरे साल वह बाहर फ्लैट में रहने लगी। सिलिकॉन वेली के तौर-तरीकों में ढल गई। कुछ ही दिनों के बाद क्लासमेट के साथ लिव-इन में रहने लगी। सोशल कॉन्ट्रैक्ट हुआ न शादी, न झंझट, जब तक खुश तब तक साथ रहेंगे। बच्चे... वो होंगे तब देखा जायेगा।

समय कब पंख लगा कर उड़ गया पता ही नहीं चला। वो खुश थी नये कल्चर में। वो उसे खूब प्यार करता, रूम पर साथ मस्ती, कॉलेज में साथ पढ़ाई, शाम को मोटर साइकिल पर बैठकर घूमने निकल जाना, देर रात तक बाहर घूमना, पब में थिरकना दूसरे दिन सन्डे को हेंगओवर में फ्लैट पर पड़े रहना। वो उसे खूब प्यार करता दोनों जी भर ज़िंदगी जी रहे थे।

'सुनो! इस बार मेरे पीरियड्स मिस हो रहे हैं।' वो सुबह कॉफ़ी बनाते हुए बोली।

क्या ? रजाई में दुबका वह लेपटॉप छोड़ रसोई में आ गया।

इस डेरे के औरत और आदमी दिनभर मजदूरी करते हैं मगर बच्चे शहर में छोटा मोटा काम करते हैं मसलन शादी ब्याह में बर्तन धोना बैंड बाजा वालों के आगे लाइट पकड़ चलना या फिर ठेकेदार के घर साफ-सफाई। यह सब नये शहर में उसे ठेकेदार का मुनीम दिलाता क्योंकि नये शहर में बाहरी मजदूरों पर कौन भरोसा करे।

रजनी को यह मजदूर बिल्कुल पसंद नहीं थे। सुंदर शहर में धब्बा है, मँगते कहीं के... चोरियाँ भी करते होंगे' वह घूमते हुए मन ही मन गालियाँ दे रही थी।

सुखिया बैंड वालों के आगे लाइट पकड़ लाइन से चलती ताकि जनरेटर से आती लाइट सब पर पड़े।

किशोरी से जवानी की दहलीज पर खड़ी ताम्बई रंग की गठीली मजदूर की छोरी सबको आकर्षित करती थी।

जब ढोल, नगाड़ों, बैंड और शहनाई की धुन पर थिरकते शहर के युवा-युवतियों को सज धज नाचते देखती तो उसके मन में भी आता कि वो भी इनके साथ घड़ी भर के लिए नाच लेती।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तभी करंट के खींचते तारों के बीच आती आवाज उसे हकीकत में पटकती 'सो गई क्या आगे चल'।

रात को 11 बज रहे हैं बारात धीरे-धीरे रेंग रही है। दूल्हे के यार थिरक रहे थे। दुल्हन वाले मिन्नत कर रहे थे मगर कोई सुन नहीं रहा था। सिर पर रखे भारी दीपदान से सुखिया थक चुकी थी, ऊपर से पीरियड्स के दिनों में घंटों खड़े रहना मुश्किल लग रहा था। वह जल्द घर जाना चाहती थी। उसे पता था कि डेरे पर गमदू उसका इंतजार कर रहा होगा। गमदू उसका भायला था, साथ पले, साथ बढ़े। गमदू गबरू जवान था। वो शादियों में बर्तन धोने का काम करता था। जब सुखिया उसे बैंड, बाजा, बारात की बातें सुनाती तो वो रामाँचित होकर कहता कि हमारी शादी होगी तो हम भी यह सब बुलाएंगे।

'ज्यादा सपने मत देख, हम मजदूरों के बस की बात नहीं है' वो मटकी उठाने लगती।

वो उसको नल में मटकी उठाते वक्त गालों पर चुम्मी दे देता या छाती दबा देता।

वह हट गमदू कह कर भाग कर डेरे पर आ जाती। गमदू और सुखिया का प्यार परवान चढ़ रहा था।

इधर रजनी की बेटी और उसका क्लासमेट रोहित बैंगलोर के किसी क्लिनिक पर चेक करवाने के बाद कॉफ़ी कैफ़े में बैठकर बहस कर रहे थे।

'यार, तुझे ध्यान रखना चाहिए, अब इस बच्चे का क्या करें?, अभी तो हम सेटल भी नहीं हुए और इसको कैसे पालेंगे?'

'यार, तुझे कितना कहती प्री-कॉशन लिया कर मगर तूने कभी सुनी नहीं'

'यार हमने लिव-इन में रहने का सोशल कॉन्ट्रैक्ट किया था'

'और बच्चों का?'

'लिव-इन में बच्चों का कुछ नहीं होता' वो झुंझला गया।

'तो इस बच्चे की जिम्मेदारी किसकी?' उसने कॉफ़ी के कप को रखते हुए पूछा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वो चुप रहा।

'तो तुम भी सुन लो, मैं यह एबॉर्शन नहीं करूंगी और बच्चे के भरण पोषण के लिए और इसकी वैधता के लिए कोर्ट तक भी जाऊंगी' लम्बी बहस बाद उसने अपना निर्णय सुना दिया।

'क्या... ?' उसे उम्मीद नहीं थी वो अचानक यह डिसीजन लेगी।

कई दिन तक फ्लैट पर अनकहा मौन पसरा रहा।

एक दिन रोहित ने अपने नेता पिताजी से प्रिंसिपल को मामला सेटल करने के लिए फोन करवा दिया।

'तुम यह बच्चा गिरा दो वरना हम कॉलेज से निकाल देंगे' प्रिंसिपल ने अपना आखिरी हथियार काम में लिया।

फ्लैट पर आई और माँ को कोटा फोन लगाया।

'बेटा, अगर ऐसा करोगी तो समाज में हमारी बदनामी होगी। जो भी करना हो वहाँ कर लो। यहाँ किसको पता चलेगा। मगर बच्चा हो गया तो फिर बदनामी ही मिलेगी।' उसका अंतिम सहारा माँ भी हट गई।

एक दिन सुखिया पानी भरते वक्त सहेलियों को नाच दिखा रही थी कि किस तरह शहर के युवा शादियों में फ़िल्मी गानों पर थिरकते हैं उसे नाचते देख सहेलियां खिलखिला रही थीं। मिसेज रजनी को सुबह सुबह गंवारू हँसना बुरा लगा इस औपचारिकता भरे शिष्ट शहर में वो जंगली और असभ्य हँसी थी। तभी मॉर्निंग वॉक पर निकले मुनीम की पारखी नजर सुखिया के नाच से थिरकते देह पर पड़ी।

'इसे बैंड वालों के साथ रात में धक्के खाने क्यों भेजता है?' मुनीम ने सुखिया के बाप के आगे पैंतरा फेंका।

'तो और कहाँ भेजूं साहब, जमाना खराब है?' वो मुनीम को देख कर डेरे के बाहर हाथ जोड़ खड़ा हो गया।

'सुखिया अच्छा नाचती है इसे मेरे मामा के लड़के के रिसोर्ट पर भेज दिया कर, उसे शाम को 6 से 9 नाचने वालों का ग्रुप चाहिए, तू कहे तो उसे रखवा देता हूँ।'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुनीम ने अपना पत्ता खोला।

'पर साहब, डेरे का मुखिया इस काम के लिए हाँ नहीं करेगा' मजदूरों के डेरे के भी नियम होते हैं अनजान शहर में संगठित होकर चलते हैं।

'मैं समझा दूंगा' मजदूर के लिए ठेकेदार के बाद मुनीम भगवान होता है।

रामधन खुश हो गया। सुखिया भी खुश हो गई उसके मन कि मुराद पूरी हो गई।

वो रिसोर्ट जाने लगी। ग्राहक आते तो डांस प्रोग्राम में वो नाचती, कभी-कभी लोग खुश होकर पैसे भी देते। रात को खाना खा डेरे पर लौटती। दिनभर घर रहती छोटे भाई को सम्भालती। माँ-बाप कमठे पर चले जाते। कभी-कभी अपने भायले गमदू के डेरे पर चली जाती साथ खेलते, बातें करते, सपने संजोते। डेरे के दूसरे लड़को के बजाय गमदू उसे अच्छा लगता क्योंकि वो कोई नशा नहीं करता था और मजदूरी भी अच्छी करता इसलिए उसके माँ-बाप भी बखान करते।

'गमदू मैं तुझसे कुछ माँगना चाहती हूँ।' एक दिन मौका देख वो बोली।

'माँग सुखिया एक मजदूर की जुबां है' वो दीवाना हो रखा था।

'गमदू मैं तेरे प्यार में मँगती हो रखी हूँ तू मुझे छोड़ कर दूसरी को ब्याहना मत' वो पल्लू को हाथों में लपेटते हुए बोली।

वो अक्सर इस प्यार मोहब्बत के वादों भरी बातें कर सपने संजोते।

'अभी इस बिल्डिंग को बनने में एक साल और लगेगा' मिसेज गुप्ता ने उस दिन कहा था।

'हाँ पिछले दो साल से बन रही है और यह मजदूर भी यहाँ के पक्के बाशिंदे हो गये।' रजनी अपने हाथ ओवर कोट से निकलते हुए बोली।

रजनी को यह मजदूर कभी अच्छे नहीं लगते।

बाहर खुले डेरे खुले में खाना, पास ही बच्चों का हंगना और मूतना।

न इनकी इज्जत आबरू न लाज शर्म यूं ही नंग-धडंग बच्चे घूमते देख उसे उबकाई सी आती।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'अरे आपकी बेटी आजकल घर पर क्यों आ गई।' मिसेज गुप्ता ने अचानक पूछा।

'उसकी तबियत ठीक नहीं रहती वहाँ' रजनी इस अप्रत्याशित सवाल से घबरा गई उसने जल्दी फोन निकाल बात करने के बहाने पीछे रह गई।

'अरे झूठ बोलती है, इसकी पड़ोसन माथुर आंटी कह रही थी कि किसी का पाप कोख में पल रहा था वहीं गिरा दिया तो पाप तो लगाना था, पागल हो गई इसलिए घर में बंद कर रखा है।' मिसेज गुप्ता ने धीरे से मिसेज व्यास के कानों में सुबह की ताजा ब्रेकिंग न्यूज़ सुना दी।

इसलिए आजकल रजनी ने सवालों से बचने के लिए अकेले ही वॉक करना शुरू कर दिया।

सुखिया एक रात 10 बजे तक नाचती रही मगर बाहर से आये मेहमानों की फरमाइश खत्म ही नहीं हो रही थी।

कभी निम्बुड़ा निम्बुड़ा तो कभी राणा जी म्हाने माफ़ करना।

वो नाचते हुए थक गई घुंघरू खोल दिए पसीना चोली के भीतर उतर रहा था उसने चुनरी से देह को पोंछा। तभी मैनेजर ने आकर कहा कि घंटे भर की बात है थोड़ा नाच ले बड़े साहब के रिश्तेदार हैं नाराज हो जायेंगे।

वो बेमन नाचने लगी अब मेहमान भी ड्रिंक करके उसके साथ नाचने लगे। दूसरे राज्य से राजस्थान घूमने आये चार युवा दोस्त 18वीं बियर का आर्डर दे चुके थे मगर पनीर टिक्का से शुरू हुआ चखना आर्डर रोस्टेड चिकन से होता हुआ पापड़ और प्याज पर ही सीमित हो गया मगर सिगरेट और नशे ने अपनी रफ्तार पकड़ ली थी। लाइट बियर अब स्ट्रॉन्ग हॉट हो गई उनके भी कदम थिरकने लगे। कभी कदम लड़खड़ाते तो कभी हाथ सुखिया की देह पर फिसलने लगे। कुछ 500 और 2000 के नोट लहराने लगे। मगर इन नोटों की गर्मी ने स्पर्श को और ज्यादा असहनीय बना दिया। सुखिया का मन डेरे पर लगा हुआ था, आज गमदू के साथ शहर में आये नटों का कार्यक्रम देखने जाना था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'मेरी कॉलेज में बेइज्जती हो जाएगी तुम यह कॉलेज छोड़ दो' रोहित ने बैंगलोर के उस फ्लैट में अपना अंतिम फैसला सुनाते हुए सामान समेटने लगा।

'तो तुम्हें क्या लगता है ये पेट लेकर घर चली जाऊँ?'

'तो मेरे साथ कल ही क्लिनिक पर चलो।'

'चुप...' उसने टेबल पर रखे दोनों के फोटोफ्रेम को उस पर फेंका। वो गुस्से में चीखना चाहती थी मगर इस मेट्रो के एटिकेट्स आड़े आ गये।

'अरे यार क्या निर्णय लिया?' रोहित ने कई दिनों बाद फिर पूछा।

'मैं एक ही शर्त पर यह सब करूंगी।'

'क्या?' शर्त के नाम पर वह डर गया।

'इसके बाद तुम मुझे अपनी शक्ल मत दिखाना, मैंने सच्चा प्यार किया था, मगर तुमने धोखा दिया।' वो उसके सामने रोकर अपने आप को कमजोर नहीं दिखाना चाहती थी। वो उसके साथ क्लिनिक हो आई।

फिर कुछ दिन बाद वो पढ़ाई छोड़ मम्मी के पास कोटा आ गई।

उधर गमदू डेरे पर सुखिया का इंतजार करता रहा मगर सुखिया नहीं आई डेरे के सब लोग राजा भृर्तहरी का नाटक देखने चले गये वो पेट दुखने का बहाना बना कर डेरे पर ही रह गया।

हाँ जी रे दीवाना थारी मारवाड़ में ...गाना चल रहा था गाने वालों का कंठ भी बैठ चुका था।

उधर नाच में न ताल था न रिदम।

तभी एक लड़का मैनेजर के पास गया और कुछ बोल कर आया तब तक नाच खत्म हो चुका था।

खाना खाकर वो घर जाने के लिए तैयार हुई तो मैनेजर ने कहा कि यह लोग सिटी की तरफ ही जा रहे है तुझे भी घर छोड़ देंगे।

सुखिया गमदू से मिलने को बेचैन थी वो जल्द गाड़ी में बैठ गई। उसे कुछ समझ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
में आता तब तक देर हो चुकी थी। गाड़ी शहर के बाहर रिंग रोड पर दौड़ती रही, सुखिया चिल्लाती रही मगर भागते शहर के शोर में उसकी आवाज कहीं दब कर रह गई। रात को 12 बजे उसे कॉलेज चौराहे पर फेंक चले गये।

गमदू और चार लड़के उसे उठा कर डेरे पर लाये। माँ बाप ने डर के बारे में किसी को नहीं बताया। सुखिया चार दिन यूँ ही पड़ी रही। गमदू मौका मिलता तो आता मगर सुखिया सूनी आँखों से ताकती रहती।

या फिर माँ जो काम कहती उसे कर देती। गमदू उसे सपने दिखाता उसे फिल्म दिखायेगा शहर घुमायेगा, हमारी शादी में भी बैंड बजायेंगे। पर वो अब मँगती नहीं रही दीवानी नहीं रही।

बात पूरे डेरे पर धीरे-धीरे फ़ैल गई इसलिए मुखिया ने आज सवेरे ही आवाज लगाई।

ओ रामधन, इधर आना तो...जैसे ही डेरे के मुखिया ने आवाज लगाई तो ऐसे लगा कि गले में उतरती मिर्च और सूखी रोटी ने गला छील दिया हो

'अरे मैडम दिखती ही नहीं आजकल' मोड़ से सामने आती मिसेज गुप्ता मिसेज रजनी से टकराती हुई बोली।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उदास यादें

फिलिप जल्दी-जल्दी किसी को बार-बार अपने सैटेलाइट फोन से मैसेज कर रहे थे कि ऑक्सीजन इज वेपरिंग... फ्राग केन यू लेस 1112-1110 और अगले ही पल फिर बोलते टाइग्रेस केन यू रोअर...।

ये सब 3 अक्टूबर की सुबह 5.30 बजे किसी सुदूर दक्षिण भारत की किसी अनजान जगह सामान्य लोगों की पहुंच तथा उनकी भिज्ञता से भी दूर उस जगह में चल रहा है जहाँ इन मैसेज का अर्थ किसी और को मिल जाने पर अर्थ से अनर्थ होते देर नहीं लगती क्योंकि किसी देशहित के लिए महत्त्वपूर्ण शोध पर जाने के 1.30 घण्टे पूर्व उस शोधार्थी ने आने से साफ मना कर दिया था।

दूसरा मैसेज जो बार बार शोधार्थी को कर रहे थे जिसमें उसका सांकेतिक नाम टाइग्रेस दे रखा था उसे वो गर्जन यानि कि बोलने को कह रहे थे परंतु किसी के मैसेज रिसीव ना मिलने पर वो बार बार भेज रहे थे। तभी दौड़ता हुआ अनुज वहाँ आता है और पूछता है कि क्या हुआ है तो फिलिप कहते हैं कि तनु (ऑक्सीजन, टाइग्रेस) ने सेफ्टी सिस्टम की सारी लेयर्स को तोड़ते हुए पता नहीं किस तरह से उसे मेल करके अपना रेजिगनेशन भेजा है तथा बॉन्ड की राशि का डिमाँड ड्राफ्ट सुबह 8 बजे भेजने के लिए कहा है और इसी तरह उस लैब में इस बात पर शोध होने लगता है कि मना क्यों किया गया है।

और उसी के साथ ही शुरू होती है एक नई प्यार की कहानी जो शायद अब एक किस्सा बन कर रह गई। मेरी बचपन की दोस्त थी वो। 24-25 की कुल जमा ज़िंदगी में बहुत खास थी वो और आज ही वो मुझे बिन बताये सरप्राइज देती हुई आ धमकी मगर वह कुछ उदास दिख रही थी। और इसी उदासी व ऊब को दूर करने आज उसकी पंसदीदा स्कॉच ब्लैक डॉग खोली गई थी तथा रात भी उस बर्फ की तरह पिघल रही

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

थी... खम्भा खत्म होने में अभी दो ही पैग बचे थे पर मेरे और तनु के अनगिनत प्यार के किस्से खत्म कहाँ हो रहे थे जो हम बिना किसी अफ़सोस के एक-दूसरे के सामने नंग-धड़ंग सुनाये जा रहे थे... ये वो घड़ी थी जिसमें हुक्के के अंगारे अपना आखिरी जलवा दिखा रहे थे... तथा रात भर रिपीट मोड में राजस्थानी गाना 'जला सेण' गा रहे मांगणियार भी शायद थक गए होंगे... परन्तु ये सोचकर कि ऐसे कद्रदान फिर जाने मिले या न मिले तो बिना किसी शिकवा शिकायत के गाए जा रहे थे... डनहिल का नया पैकेट खोला जा रहा था...माहौल था कि जैसे कोई रेडियो का सिफारिशी प्रोग्राम खत्म होने को आ रहा हो...और आज की आखिरी फरमाइश झुमरीतलैय्या के फलाना साहब से...इससे पहले राज और तनु की कहानी आगे बढाऊं, कुछ तनु के बारे में बताती चलूँ।

मेरी बचपन की वो दोस्त जो हर क्लास में फर्स्ट रहती। बोर्ड के एग्जाम में हमेशा स्टेट मेरिट में रही। फैलोशिप पाकर वैज्ञानिक बन गई। फिर पीएचडी के लिए नासा चली गई, फिर इंडिया में काम पर लग गई। हमेशा जिद्दी और हटकर काम करने की धुन रहती उस पर। नियमों के कम्फर्ट ज़ोन तोड़ उसके पार जाकर खुद को महसूस करवाना उसका शगल रहा। मुंबई और बेंगलुरु की मॉर्डन पार्टियों और क्लबों में जम कर दारु पीकर लड़कों के एटिकेट्स तोड़ना, पोलो खेलना उसके शौक रहे तो ढलती चाँदनी रात में 'चमक्यों तारो' मारवाड़ी के गाने भी उसके साथ गाये। वो मुझे कभी समझ में नहीं आई कि आखिर क्या चाहती थी ज़िंदगी से। मैंने उसे हर महीने बॉय फ्रेंड्स बदलते देखा उसे दो-दो माह तक तिब्बत के साधुओं के साथ भटकते देखा तो लेह और लद्दाख में घंटों देर मेडिटेशन करते हुए देखा। मैंने उसे लगातार कई दिन तक बिना नहाये और पेस्ट किये लैब में भूतों की तरह काम करते हुए तो उसे लगातार 48 घंटे सिर्फ बातों में गुजारते हुए भी देखा। पता नहीं वो किस माटी की बनी हुई थी। पता नहीं उसकी क्या तलाश थी।

'तनु, तुझे कभी किसी से प्यार भी हुआ ?' मैंने एक दिन उसे टटोलते हुए पूछा था तो उसका जवाब था- 'प्यार वो करते हैं जिनके पास जीने का कोई मकसद नहीं हो।

खैर! रात भी हमारे साथ नशे में गहराती जा रही थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'चल यार कुछ राज के बारे में बता' मैंने उसके चेहरे पर नशे की मासूमियत को देखते हुए कहा।

चल पहले नई बोतल खोलते हैं, फिर बताती हूँ।

'नासा से लौटने के बाद घर वालों ने शादी का दबाव डाला तो एक लड़के को देख हा कर दी। मगर सगाई के बाद मेरे बिजी शेड्यूल और बंजारापन लाइफ स्टाइल देख कर शादी से पहले वह भाग खड़ा हुआ। पूरा परिवार मुझसे नाराज रहने लगा। बिना दोष के मेरे जिम्मे आये ताने, उलाहने और शिकायतें। इनसे टूट कर मैं सेन्टर पर आ गई। कई महीनों तक खुद को काम में खपाये रखा, मगर कुछ यादें मेरा हमेशा पीछा करती रहीं। रात को सोते हुए जाग जाती, नींद नहीं आती। पागलों की तरह बाहर दौड़ के आती, नहाती और दारू की पूरी बोतल खाली कर सोने की कोशिश करती।

मगर सुबह मेरी उनीदीं पलकें मुझे रात के हादसे से फिर से रूबरू करवाती। कमरे में बिखरे सामान के साथ ऐश ट्रे के नीचे उलटे पड़े मेरी यादों के अधजले सिगरेट के टुकड़े और आइस पॉट में पिघले हुए मेरे सपने और चादर पर पड़ी मिलती दर्द भरी सलवटें। मेरे हिस्से में सुबह बची मिलती गिलास में दो बूँदें या कमरे में पसरी हुई या शायद बिखरी हुई वो ख़ामोशियां जो हर बार विस्मित या शायद विस्मृत कर देने वाली तन्हा उदासियों को फिर से घेर ले आती। फिर अगले दिन की थकी हुई कुछ पुरानी उबासियाँ और कुछ इस शाम की या शायद कुछ उस रात की झिड़कियां तो कुछ कल और कुछ परसों या शायद बरसों की तन्हाइयाँ तो कुछ रूठे या फिर शायद झूठे रिश्तों की यादें और शायद कुछ देर पहले विदा लेकर गए देह के प्यार के वादे मुझे सालते रहते और जब कल की और कुछ बरसों की तन्हाइयाँ फिर से मुझे डसने लगती तो इस हैंगओवर को मिटाने के लिए खुद को भीड़ में झोंक दिया करती थी।

रातभर क्लब में जाकर लाउड म्यूजिक और चमक में अपने को चौंधियाती थी कुछ भुलाने को। इस तन्हाई के दिनों में कई लड़कों को स्याह रातों का भागीदार बनाया जो सिर्फ मेरे तन को भिगोते रहे मगर मेरा मन उन चाँदनी रातों में यूँ ही दाजता रहता।

उसने फिर पैग बनाया और आँखें बंद कर सोफे पे बिखरी यादों के साथ कहीं दूर सी पसर गई। इस ढलती हुई रात में अलसाये से मेरे सवाल थे मगर उसके जवाब

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उलझे हुए बालों में ठहरे हुए पागलपन से थे। मगर मैं बेचैन थी उसके और राज की कहानी सुनने को।

'अरे राज कब आया इस सीन में ?' मैं झल्ला गई वो नशे में आँखें मूंदे पड़ी रही। एक पैग बना फिर आगे की कहानी... मुझे गले लगाते हुए बोली। शायद अब दिल और दिमाग पर यादों का नशा गहरा रहा था। 'अब नहीं पियेंगे...' मैंने उसके हाथ से बोतल छीनते हुए कहा।

'कौन कमबख्त पीता है पीने के लिए...'

'रहने दे अपना पुराना डायलॉग और आगे की कहानी सुना चुपचाप...' मैंने फिर उसकी यादों को कुरेदने की कोशिश की।

वह गिलास में बची दो बूंदों को जुबान पर डाल कर बोलने लगी... मैं इन सबसे थक कर लेह लद्दाख चली गई, वहाँ से आध्यात्मिक शांति से सराबोर होकर मैं वापिस आ रही थी। मैंने रोहतांग से बस पकड़ी तो आगे वाली सीट पर एक दाढ़ी बढ़ाये एक लड़का 'द मोंक हू सोल्ड हिज फेरारी' पढ़ रहा था। पहली नजर में वो बड़ी फ्रेम लगाये झोला छाप कुर्ता पहने हुए जे.एन.यू. का कम्युनिस्ट लगा। बात करने को तलब हो रही थी मगर चलती बस में सीट बदल कर उस खडूस से बात करने की हिम्मत नहीं हुई। मिड वे पर चाय पीते हुए पूछा 'आप देहली से हो ?' 'जी नहीं, मैं राजस्थान से हूँ' उसने कुल्हड़ की चाय जोर से सुड़कते हुए कहा। मुझे इस तरह के चाय सुड़कना अच्छा नहीं लगा पर उसके 'राजस्थान' कहने ने मुझे अगले सवाल के लिए मजबूर किया। 'अच्छा ! राजस्थान में कहाँ से ?'

'बीकानेर' उसने चाय के साथ तपन के एहसास को बढ़ाने के लिए सिगरेट का पैकेट निकाला।

'क्या करते हो आप ?' मैंने पूछ तो लिया मगर खुद को भी अजीब लगा कि क्यों पूछ रही हूँ एक अजनबी से इतना नजदीक सा सवाल।

'वाइल्ड लाइफ फोटोग्राफी' उसने लाइटर से सिगरेट जलाते हुए कहा तो उस आग और जवाब से मैं दमक गई। तनु ने भी सिगरेट का गहरा कश लेते हुए कहानी जारी रखी...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मनु ! यू नो, मैंने अपनी लाइफ में कई हैण्डसम और वेल ग्रुमिंग बंदे देखे, उनकी हाई क्लास लाइफ स्टाइल भी देखी, मगर सच कहूँ, उनके मेकअप से पुते चेहरों के पीछे हमेशा खोखलापन नजर आया। मैं नासा रही फिर इंडिया के मेट्रो शहरों में पली बढ़ी मगर सुकून से भरा नेचुरल चेहरा कभी नहीं दिखा। उस बंदे के अंदर मुझे झेन फकीर सी शांति दिखी। जो न कुछ दिखाने को आतुर था और न ही कुछ जानने को। और क्या करते हो ? मैं उसे सवाल पर सवाल पूछे जा रही थी। 'ब्लॉग लिखता हूँ और फेसबुक पर पेज है मेरा जिस पर यदाकदा फोटोग्राफ्स डालता हूँ' दो अंगुलियों के बीच फँसी सिगरेट की राख को झाड़ते हुए बोला।

'यहाँ घूमने आये थे ?' मैंने पूछा।

'नहीं ! यहां मैं एन.जी.ओ. से जुड़ा हुआ हूँ जो यहाँ के बच्चों को फ्री में पढ़ाते हैं। मैं उन्हें फोटोग्राफी सिखाता हूँ।' उसने चाय के अंतिम घूंट से खुद को तर करते हुए बोला। हमने बस में भी खूब बातें की, जिसमें मेरे सवाल और उसके सधे हुए उतर रहे थे। हम शिमला से अलग हो गये इस वादे के साथ कि एक-दूसरे के सम्पर्क में रहेंगे। मैं सेण्टर आकर काम पर लग गई। वैज्ञनिक होने के कारण देश की सुरक्षा के नाम पर कई रेस्ट्रीकेशन थे। न मोबाइल न नेट इसलिए मुझे सेण्टर से 10 कि.मी.दूर चला कर आना पड़ता था। अक्सर वो जल्दी सोने वाला जगा हुआ मिलता तो फेसबुक पर रात भर देश दुनिया और ज़िंदगी के मसलों पर बातें होतीं। वो व्यक्तियों के बारे बात नहीं करके मुद्दों पर बात करता था जोकि मुझे अच्छा लगता था। भौतिक दुनिया की ब्रांडेड चकाचौंध उसका कभी विषय नहीं रहे।

'तो आप लोग रात भर क्या बातें करते थे' मेरी दारू का नशा तनु के राज के आगे मद्धम सा पड़ रहा था।

'हाहाहा मनु महान ! ! हम मानव मन के उलझे गहन राज़ों की बातें करते थे। ईश्वर के न्याय को लेकर उसके अस्तित्व की बातें करते थे तो विज्ञान और धर्म के सम्बन्धों पर बात करते तो सम्भोग से समाधि तक को डिस्कस करते। हम ध्यान और एकाग्रता पर प्रयोग करते। मैंने उसे कई टेक्निक भी बताई। वैज्ञानिकों का काम के प्रति जुनून और उनकी एकाकी लाइफ भी बताई। हमारी बातें कभी खत्म नहीं होती।'

'तो तुम्हें उससे प्यार कब हुआ ?' मेरी जिज्ञासा के आगे इंतजार दम तोड़ रहा था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सब कुछ आज ही जानोगी या कल के लिए भी कुछ रखोगी ? उसका शरारती चेहरा यादों के इस सफ़र से और ज्यादा खिल गया था।

4 तो बज ही गये अब कल क्या सुनना ? मैं जिद्द पर अड़ी थी।

'राज मेरी ज़िंदगी में पहला ठहराव बिन्दु था। मैं पहली बार थमी थी, किसी के लिए, पहली बार भीतर से अहसास हुआ था कि प्यार जैसी कोई चीज होती भी है।' उसने बोलना शुरू किया... उससे मिलकर लगा कि मेरे जीवन में ऊर्जा का स्रोत वो है। उससे घड़ी भर बात करने के बाद एनर्जेटिक और लाइट फील करती थी। उसकी बातें सीधी सरल और व्यावहारिक होती थीं। जिसने मुझे बाह्य आडम्बरों में मुक्त कर खुद में झाँकने के लिए मजबूर किया। उसमें बड़ी खासियत थी वो जीवन को समग्रता से स्वीकारता था। उसने कभी किसी को गलत और सही नहीं कहा वो बुद्ध के मध्यम मार्ग की तरह था।' कहते हुए उसने भी पैग को बुद्ध की तरह निर्विकार ढाल दिया शायद इस बार उसे ज्यादा कड़वी नहीं लगी होगी। उस पैग को उतारने के साथ वो खुद यादों के भँवर में उतरती चली गई।

फिर सिगरेट जलाने लगी तो मैंने बोला धीरे चल बेब ! कितना धुआँ लेगी ? लेकिन उसने कब किसी की सुनी और मेरी बात के छल्ले उड़ाती बोली कि गालिब साहब ने कहा है कि 'रगों में दौड़ते फिरने के हम नहीं कायल। जब आँख ही से ना टपका तो फिर लहू क्या है।'

पता है मनु मुझे और राज को किस चीज ने जोड़ रखा है ? उसने सिगरेट ऐश ट्रे में बुझाने के बजाय टेबल पर मरोड़ दी।

अरे बाबा नहीं ! वही तो रात भर से पूछने की कोशिश में हूँ।''

'उसके अपने होने के बेमानीपन ने और मेरे अपने अस्तित्व की निरर्थकता ने' वो फिर पैग बनाने के लिए झुकी। उसके जवाबों को समझना उतना ही मेरे लिए मुश्किल था जितना कि बचपन में 19 का पहाड़ा। मैं नशे के चढ़ते सुरूर के साथ तनु को टुकुर-टुकुर देखने लगी। वो सिगरेट के कश लेती हुई फिर से बोलने लगी कि मनु जो तू कुछ देर पहले पूछ रही थी ना कि 'तुझे प्यार कब हुआ' तो सुन प्यार कुछ और नहीं एक सुकून होता है और सुकून केवल एक क्षण है और मेरा वो क्षण राज था। मुझे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ठहराव बिंदु मिल गया था मेरे दिल ने तय कर लिया यही आदमी है जिसकी गोद में चैन की मौत सो सकती हूँ।

'मौत!' मैं चौंकी।

अरे मैरिज यार ...मैंने शादी करने का फैसला कर लिया। अपना प्रोजेक्ट बीच में छोड़ मैं राजस्थान के लिए रवाना हो गई। 'तो तुझे छुट्टी कैसे मिली' मैंने पूछा अरे मैंने नौकरी छोड़ने का विचार कर रेजिग्नेशन दे दिया था और भाग कर आ गई। फिर क्या हुआ मैंने जैसे ही जयपुर एअरपोर्ट पर लैंड किया और मोबाइल ऑन किया तो उसका व्हाट्सअप मैसेज आया हुआ था।

'क्या लिखा हुआ था' मैं अब उसे और सस्पेंस को झेल नहीं पा रही थी। 'उसकी सगाई का इनविटेशन कार्ड।'

'फिर?'

फिर क्या। मैं यहाँ चली आई और उधर मेरी सुकून की तलाश तो कहीं और किनारे लगती हुई दिख रही थी। कभी-कभी ये भी होता कि मैं खुद से क्या चाहती थी वो समझ पाना भी मुश्किल हो जाता है...। शायद विज्ञान की अवधारणाओं के अनुसार दो विपरीत ध्रुव एक दूसरे के लिए आकर्षित होते हैं तो वे मैग्नेटिक इफेक्ट पैदा करते हैं पर यहाँ हम समानान्तर चल रहे थे...। मैंने अपने जीवन में करीब 500 से 1000 किताबें तो पढ़ी होंगी जो सिर्फ विज्ञान की ही नहीं अपितु सभी विषयों पर रही हैं फिर भी मैं इसे नहीं समझ पा रही थी कि मनुष्य मन क्या है, हम क्या खोज रहे हैं या चाहते क्या हैं! वो बोले जा रही थी।

'अरे तू सीधे पॉइंट पर आ, ज्यादा फिलॉसफर न बन' उसकी बातें मेरे ऊपर से जा रही थी।

'मनु जब मैं 5000 मी. की गहराई में समन्दर के अन्दर इस अंधेरी लेब में रसायन के प्रयोगों में सफल हो रही हूँ पर अपने दिल के अंधकार को और जो अनंत की खोज है उसमें हमारे अस्तित्व और अवधारणाओं के परे क्या है, वो समझ ना पाना मुझे परेशान करता है और वो कुछ ऐसा होता है कि निःशब्द हूँ, गिरती ओस सी कभी-कभी लगता चीखूँ, टूटते हुए काँच सी हर क्षण मुश्किल हो रहा है, खो जाऊँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहीं डूबती हुई आस सी। पर जब मैं उस क्षण में होती हूँ तो मुझे वो समन्दर की गहराइयां और एम्फीरायॉन इफिप्पियम मछली मुझे अपनी ओर बुलाती हुई लगती है तो मैं उस समन्दर की गहराइयों में उतर जाती हूँ फिर उसे अपने साथ लाने का मन होता है पर फिर लगता है नहीं! चलो बिखरने देते है ज़िंदगी को संभालने की भी एक हद होती है।'

ये सब कहते हुए वो काफी कुछ खुद के लिए सुलझा रही थी या मेरे लिए जवाब तैयार कर रही थी मैं ये समझने की कोशिशों में थी पर कब उनींदी होकर ब्लैक डॉग की कोशिशें सफल होकर मुझे सुला गई, पता ही नहीं चला।

...सुबह जब हैंगओवर के साथ उठने पर रात के सवालों का जवाब कुछ एक पेपर पर लिख कर बिना बताये वापिस चली गई थी...

खाक करते हुए मंजर सी मैं।
रोते बिलखते हुए से बच्चे तुम।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इमली फाटक के उस पार

हरेक शहर में कुछ ऐसी जगह होती है, जहाँ विद्यार्थी अपने सपने पूरे करने आते हैं, कुछेक के सपने पूरे होते हैं तो कुछ की उम्र। इनमें प्रमुख है दिल्ली का मुखर्जी नगर, इलाहाबाद, कोटा और हमारे जयपुर का लाल कोठी इमली फाटक। राज्य भर के बच्चे यहाँ अलग-अलग कॉम्पिटीशन की तैयारी करने आते हैं।

तो साहब! कहानी शुरू करते हैं। हमारे एक मित्र थे, जो यहाँ आर.ए.एस.की तैयारी करने आये थे वर्ष 2009 में। तैयारी तो चार साल से आर.ए.एस. की ही कर रहे थे। आर.ए.एस.तो नहीं बन सके मगर रामजी की मेहरबानी से इधर-उधर के साइड एग्जाम देते देते बाबू बन गये। इस प्रकार हमारे दोस्त को पहली सफलता मिली, खूब जश्न हुआ, इमली फाटक पर सभी यार दोस्त मिले, सोढ़ानी स्वीट्स की मिठाई मँगवाई गई। साथ में नमकीन और ठंडा मतलब कोका कोला की बोतल भी। कुछ खास यार दोस्तों के लिए शाम को बंगाली बाई की स्पेशल फिश करी और ओल्ड मोंक की व्यवस्था भी की गई। कुछ दिन बाबू बनने के नशे में बीत गये मगर पोस्टिंग नहीं आई। इधर इमली फाटक पर बाबू बनने की ख़ुशी में रोज लुटे जा रहे थे।

जबसे बाबू बनने का पता चला तो कोचिंग क्लास की वो कन्या जो कभी देखती तक नहीं थी आज वो पानी की बोतल ऑफर कर रही थी। बाबू भाई के लिए पानी नहीं प्रेम रस था, क्योंकि आप उस सुदूर रेगिस्तान से आये थे जहाँ को-एजुकेशन पाँचवीं तक ही देखा और जब प्रणय निवेदन के दिन आये तो नजदीक में कोई कन्या देखने को नहीं मिली। मगर जयपुर में जबसे इस कोचिंग में आये तो जैसे पहली बार इस सावन के अंधे ने हरियाली का दीदार किया हो। पहले-पहले तो आगे बैठी खूबसूरत बालाओं पर दाँव लगाया मगर बाबू भाई को जल्दी ही महसूस हो गया ये लाइनें ऑलरेडी व्यस्त हैं या अपने कवरेज से आउट ऑफ़ रीच। मगर जब वो क्लास

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
में एंटर करती तो उनकी खुली जुल्फ़ें और बदन से उठती महंगे डियो की खुशबू न केवल तन बल्कि बाबू भाई के मन को भी खुश कर देती।

वो पूरी क्लास टाइम भीगे-भीगे रहते। गुप्ता सर की अर्थ शास्त्र की क्लास में माँग और पूर्ति का नियम उसे तब समझ में आया जब प्यार का पहला झपीड़ा पड़ा। दरअसल उनके ख्यालों की मल्लिका नाहर गढ़ के पीकॉक गार्डन में किसी और के साथ देखी गई थी।

खैर! पहली बेवफ़ाई से दिल कड़ा करते हुए बाबू भाई ने इस बार क्लास की कमजोर लड़की को टारगेट किया जिसे उसके रंग रूप और जीरो फिगर कहे या प्राकृतिक कुपोषण के कारण शायद ही कोई लिफ्ट देता हो। बाबू भाई को प्यार का यह लाइफ टाइम इंश्योरेंस प्लान लगा। प्यार की उस दो घूँट से शुरू हुई बाबू भाई की लव स्टोरी। उन्हें कभी जे.के.के. में कॉफ़ी पीते देखा गया तो बिरला मन्दिर की तलहटी में पाव भाजी के लिए पुराने पंडित के असली ठेले को ढूँढ़ते देखा गया। रामजी की मेहरबानी इस साल भी रही कि कोई वैकेंसी नहीं आई, पुराने वाली कोर्ट में अटकी थी।

कहानी को आगे बढ़ायें उससे पहले बाबू भाई के परम मित्र 'पमसा' का व्हाटसप्प स्टेटस बताता हूँ 'साला जिगर चाहिए आर.ए.एस. की तैयारी करने के लिए, खुद की ज़िंदगी बर्बाद करने के लिए' दरअसल हरेक राज्य की पी.एस.सी. का अपना एक अलग समाज है। अपना अलग धर्म और अपने अलग रीति रिवाज है। और इस समाज के लोगों की अपनी पीड़ायें है। ये पी.एस.सी. ही है जिसकी वजह से कई कॉलोनियाँ चलती हैं और कइयों की दुकानें भी। कई 'बुजुर्ग युवा' आज भी नौकरी के रिजल्ट की आस में छोकरी के सपने देखते हैं तो कई माँ बाप रिजल्ट लिस्ट में सुयोग्य वर तलाशते हैं। कईयों को नौकरी मिल भी जाती है मगर छोकरी नहीं मिलती, वजह शायद गाड़ी छोटी होने के कारण या नौकरी छोटी के कारण।

खैर! जो भी हो,

हाँ! तो इधर बाबू भाई का प्यार परवान चढ़ रहा था। समाजवादी बाबू भाई अब पूँजीवादी होते जा रहे थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

टोंक फाटक के बरकत नगर से कपड़े खरीदने वाले बाबू को लाइफ स्टाइल मॉल में प्रेमिका के साथ वीमेन स्टोर पर दो तीन केरीबैग पकड़े देखा गया। बाबू से 'बेबी' कब हो गये उन्हें पता ही नहीं चला। स्मार्टफोन पर चमकते मेसेज में 'मेरे बेबी ने खाना खा लिया, मेरे सौना ने नाश्ता कर लिया' वाक्य पढ़ते वक्त रेगिस्तानी मन नखलिस्तानी हो जाता। अपनी माशूका को इम्प्रेस करने के लिए किताबी मेले से दुष्यंत, गुलजार और पाब्लो नरूदा की प्रेम कविता और ग़ज़लों की किताबें ले आये। वो अब जब भी दोस्त स्वरूप सोढा, धर्मा चौधरी, प्रवीण यादव और बंटी मीणा के साथ राजू की चाय वाली थड़ी पर बैठते तो दुष्यंत कुमार की ग़ज़ल का राग छेड़ते तो चाय की मिठास और सिगरेट के धुएं के साथ बाबू भाई के होंठ भी थरथराते...

तू किसी रेल सी गुजरती है, मैं किसी पुल सा थरथराता हूँ
तू भले रत्ती भर ना सुनती है मैं तेरा ही नाम बुदबुदाता हूँ

तो साहब! हमारे बाबू साहब के प्यार की गाड़ी जयपुर मेट्रो सी धक् धक् चल रही थी। बाबू प्यार के रंग में पूरे रंग चुके थे। एक दिन तो अपने दोस्त 'हितू बन्ना' की मोटर साइकिल में 50 रुपया का पेट्रोल डलवा कर जानेमन को पीछे बैठाकर जी.टी. होते हुए 'ई.पी.' जाकर 'बाबू की अजब प्रेम कहानी' देख कर आये और साथ ही 'जवाहिर सर्किल' पर आइसक्रीम खिलाते हुए ये नज़्म पढ़ी।

'जीत ले जहाँ में कोई मुझे नसीब वाला ज़िंदगी ने मुझे दांव पर लगा रखा है' सुन कर मलिका ए हुस्न फूल के कुप्पा हो गई और आइसक्रीम पिघलते देख बाबू भाई उसे 'नेहरु पार्क' में ले गये। जहाँ लव टेबल वाली झाड़ियों में बैठ अति प्रतीक्षित लम्बा इमरान हाशमी वाला 'किस' किया।

तो साहब! आपको 'लम्बे किस वाली फीलिंग' आ गई हो तो कहानी को आगे बढ़ायें?

बाबू भाई उस दिन काफी खुश थे। 'तेरा जिक्र है या इत्र है मैं महक जाता हूँ बहक जाता हूँ' मोबाइल पर सुनते-सुनते सो गये। सुबह गुड मोर्निंग मैसेज के साथ उठे और अख़बार खोला तो थानेदारी के एग्जाम का रिजल्ट पी.ए.सी. ने अचानक ही घोषित कर दिया था। यहीं से शनि देव भी बाबूजी की कुंडली में अचानक आ बैठे, बाबू भाई फेल हो गये उनका पुराना दोस्त थानेदार बन गया। वही जश्न फिर से मनाया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गया इमली फाटक पर। पर कुछ भी हो कॉम्पिटीशन की दुनिया का ये अजीब कायदा है कि पूरी दुनिया पास हो जाये तो कोई ग़म नहीं मगर आपका रूममेट या साथी पास हो जाये और आप फेल हो जाये तो लाख जश्न हो पर दिल नहीं लगता। कुछ दिन ग़म मना कर फिर से फोन ऑन कर कोचिंग जाने लगे। कई दिन नजरें उनको ढूँढ़ती रही, इधर मोबाइल पर भी कोई रिस्पांस नहीं मिल रहा था। थक हार थानेदार दोस्त के पास मोटरसाइकिल माँगने उसके फ्लैट चल दिए। बाबू भाई उस फ्लैट के गेट पर ही ठिठक गये, एक स्कूटी बाहर खड़ी थी जिसके नंबर उनकी फेसबुक के पासवर्ड थे। खिड़की से देखा तो उनकी माशूका दोस्त के साथ कोल्ड कॉफ़ी पीते हुए हॉट हो रही थी। बाबू भाई की दुनिया वीरान हो गई, एक ही झटके में सब कुछ खत्म हो गया। आँखों के आगे अँधेरा छा गया, दिल थाम बैठ गये। दिल कुछ काम नहीं कर रहा था मगर दिमाग ने इस वक्त साथ दिया और उस स्कूटी का फोटो खींच लिया और तेरी दुनिया से होके मजबूर चल दिए 'शहींद स्मारक' की ओर।

शहीद स्मारक के आगे जनपथ पर स्पीड से गुजरती गाड़ियों के शोर और चमक से बेखबर बाबू भाई स्त्री स्वभाव के बारे में नीत्शे के इस विचार में उलझ गये कि 'अच्छे और बुरे की, सत्य और असत्य की, उदात्त और पतित की सारी परिभाषाएँ हर देश, काल और विचारधारा में लगभग समान ही होंगी।

उसके बाद बताते हैं कि बाबू भाई इमली फाटक छोड़ दिल्ली चले गये। यहाँ उनका मन नहीं लगा किसी भी कोचिंग में जाते तो प्यार की याद आती। फिर वो स्कूटी याद आती जिसने सत्ता बदलने के साथ ही पार्किंग की जगह बदल दी। बाबू भाई ने दिल्ली में कोचिंग ज्वॉइन की और दो- एक महीने मन लगा पढ़ाई की मगर फिर तन्हा यादों ने घेर लिया। वो अब विश्लेष्णवादी बन गये उनका मानना था कि सब कोचिंग वाले फर्जी हैं सिर्फ डेमो क्लास में डेमो दिखा 'चौमू' बनाते हैं मगर उनका पड़ोसी बिहारी इस 'चौमू' शब्द का अर्थ कभी नहीं समझ पाया। अब वो दिल्ली हर क्लास लेने वाले उस 'सर' को पकड़ने लगे जो रात भर दारू पार्टी कर सुबह मुँह धोकर बिन पढ़े क्लास लेने आता। इस तरह दिल्ली में भी उनका मन नहीं लगा तो वापिस जयपुर आकर किसी अनजान कॉलोनी में रहने लगे। अकेलापन सालता था, तन्हाई काटने को दौड़ती थी। इस शुरुआती दौर में तो वे बंटी मीणा के साथ कजरी का पव्वा और दस रुपये की बालाजी मूंग दाल के साथ मेहंदी हसन की ग़ज़ल 'जिन्दा रहे तो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किसकी खातिर होश में आये तो किसके लिए जाने वाले आ नहीं सकते शमा जलाये तो किसके लिए' सुनते थे।

मगर बाद में ऐसा बताते है कि वो अताउल्लाह को कुछ ज्यादा ही सुनने लग गये। शुद्ध शाकहारी जीव अब माँसाहारी बन गया। अब वे नौकरी लगे दोस्तों के साथ पार्टी में जाने लगे। जहाँ दो घूँट उतरने के बाद फरमाइशी शायर बन जाते।

हर पार्टी का एंड उनकी सुनाई 'राहत इन्दौरी' साहब की इस ग़ज़ल से होता-

उसकी कत्थई आंखों में हैं जंतर-मंतर सब
चाक़ू-वाक़ू, छुरियां-वुरियां, ख़ंजर-वंजर सब।

और जब वो इस आखिरी शेर को पढ़ते तो उनकी आँखों का दरिया छलक पड़ता।

आखिर मैं किस दिन डूबूंगा फ़िक्रें करते हैं
कश्ती-वश्ती, दरिया-वरिया लंगर-वंगर सब।

दूसरे दिन हैंगओवर से उनका सिर फटता तो हर बार ये कसम लेते अब कभी नहीं पीऊंगा मगर कमीने दोस्त उस बेवफ़ा की कसम दिला फिर से पिला देते। बाबू भाई अपने प्यार को भुला नहीं पा रहे थे शायद प्यार की बजाय उनको अपमान का ज़ख्म ज्यादा कुरेदता था, जो उनके मोबाइल में कैद था। बाबू भाई को इस ग़म ने आलसी और निकम्मा बना दिया उनका किसी भी चीज में मन नहीं लगता वो दिन भर सोते रहते। सर्दियों में, सप्ताह में एक दो दिन नहाते और इंतजार करते अपनी पोस्टिंग का ताकि कुछ नयापन आ सके जीवन में और लोगों के इस सवाल का जवाब दे सकें। इमली फाटक वाला हर प्रतियोगी जब भी घर जाता या किसी की शादी में जाता तो रिश्तेदारों को झेलता।

'बेटा! अभी भी जयपुर में क्या कर रहे हो?'

मन में तो आता कि कह दे कि ''अंकल, आपके इस वाहियात सवाल का जवाब ढूँढ़ रहा हूँ।''

खैर! ये छोड़ो कि आपको कितने लोगों ने यह सवाल पूछा; आप तो आगे की कहानी पढ़ो।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खुदा का शुक्र था बाबू भाई का रूम मेट नया लड़का 'जसवंत' थोड़ा एक्टिव था जो सामान ले आता और बंगाली बाई खाना बना जाती। नवरात्र पर जसवंत अपने घर चला गया।

'हम 10 दिन नहीं आएगा, घर जा रहा है।'

बाई भी दो दिन आई। बिना लिंग वाली बंगाली भाषा में बोल कर दुर्गा पूजा के लिए कोलकाता चली गई।

अब बाबू जी पर गम के साथ भूख का भी पहाड़ टूट पड़ा। कहते हैं आदमी पहले मन से टूटता है फिर उदासीनता उसके पूरे शरीर को जकड़ लेती है। बाबू भाई को न तन से न मन से और न ही धन से कुछ भी अच्छा नहीं लगता। उन्हें इन दिनों राणावत सर की क्लास में पढ़ाया हुआ 'स्यादवाद' याद आता कि 'आंशिक और सापेक्ष ज्ञान से सापेक्ष सत्य की प्राप्ति ही संभव है, निरपेक्ष सत्य की प्रासि नहीं। सापेक्ष सत्य की प्रासि के कारण ही किसी भी वस्तु के संबंध में साधारण व्यक्ति का निर्णय सभी दृष्टियों से सत्य नहीं हो सकता।'

कुछ दिन आधा कच्चा पक्का खा कर काम चलाने की कोशिश की। फिर बुद्धिजीवी बाबू के दिमाग में आईडिया आया और मूंगफली और चने लाकर कुतरने लगे। ये आईडिया भी उनके आलसी तर्कों के आगे ज्यादा दिन तक नहीं चला। इधर एटीएम में पैसे खत्म हो गये, पोस्टिंग नहीं मिल रही थी, काफी उधार भी चढ़ गया। इस कंगाली में भी बाबू भाई ने चाय के साथ दो चार गोल्ड फ्लेक फूँक ये साबित कर दिया कि साहब शौक भी बड़ी चीज होती है। उन्हें पंडित की थड़ी पर बढ़ी हुई दाढ़ी और मैला कीच टीशर्ट और पायजामा के साथ घिसी हुई स्लीपर चप्पलों में चाय के साथ सिगरेट फूँकते देख हिन्दी साहित्य के तापड़े तोड़ते लेखकों की याद आ जाती।

कहते हैं इस हाल में पंडित की थड़ी पर बाबू भाई के मुँह से अर्जेंटीनाई कवि 'पाब्लो नेरुदा' की इस कविता को कई लोगों ने सुना था–

आज रात लिख पाऊंगा सबसे उदास कविता
अपनी क्योंकि मैंने उसे चाहा, थोड़ा उसने मुझे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपनी ये सोच कर कि अब वह मेरी नहीं
इस अहसास से कि मैंने उसे खो दिया

बाबू भाई पर आदर्शवाद के तीन मुख्य दार्शनिक- काण्ट, नीत्शे तथा हीगल का भी विशेष प्रभाव रहा। उनका 'सिगरेट थ्योरी' काण्ट के उस स्वतन्त्र इच्छा के सिद्धान्त पर आधारित थी जिसके कारण मनुष्य सदैव अपने को साध्य समझता है। इस तरह दिन तो दो चाय पर गुजारते और रात को रूम पर जो भी होता उसे खाकर सो जाते। कभी-कभी जीवन की बेबसी के सामने जैन दर्शन के अपरिग्रह का सिद्धांत स्वत: ही फ़ॉलो होने लगता। आर.ए.एस. की तैयारी के दौरान यह पढ़ चुके थे कि सोते रहने से ज्यादा एनर्जी खर्च नहीं होती। शुरू-शुरू में तो यह प्रयोग एक दिन के लिए करते फिर धीरे-धीरे बढ़ाने लगे। अकेले थे तो कोई आता जाता नहीं और साधना में भी कोई खलल नहीं पड़ता। कभी-कभी स्वरूप सोढ़ा हाल जानने आता तो उन्हें अच्छा लगता कि इस पराये शहर में कोई अपना भी है। एक दिन मकान मालकिन किराया लेने आई तो दरवाजा नहीं खोला और बदबू आने पर पुलिस को इतला कर दी। बाबू जी चीथड़े हुई रजाई में चिर निद्रा में सोये मिले।

पुलिस ने इन्वेस्टीगेशन किया। थानेदार शायद नया अफसर था और शायद टीवी पर 'क्राइम पेट्रोल' और 'सावधान इण्डिया' देख बना होगा इसलिए मामले की तहकीकात की लिए जी जान से जुट गया। अन्वेषण में कई बिंदु सामने आये जो बाबू भाई की मौत की वजह हो सकती है। पहला बाबू भाई के रूम मेट या बाई ने हत्या की हो दूसरा बाबू भाई की प्रेमिका ने मरवा दिया हो तीसरा बाबू भाई बेरोजगारी के इंतजार में थक कर सो गये। चौथा हो न हो अत्यधिक शराब पीने की वजह से मर गये। उपलब्ध साक्ष्य इतने विरोधाभासी थे कि किसी एक नतीजे पर पहुँचना खतरनाक था। परिस्थितिजन्य तथ्यों की कड़ी से कड़ी भी नहीं मिल पा रही थी। सब परेशान थे, समाज के भावी आर.ए.एस. अफसर को किसने और क्यों मार दिया।

इमली फाटक से लेकर स्टेच्यू सर्किल तक छात्र नेता 'गिरधर बन्ना' के नेतृत्व में कैंडिल मार्च किया गया। मगर थानेदार बबलू मीणा जो कभी इमलीफाटक में रह कर बाबू भाई जैसे दुर्दिन देख चुका था। उन्होंने रूम के अंदर सेल्फ में बनी रसोई के डिब्बे चेक किये जिसमे न दाल थी न मसाले, प्याज के छिलके बिखरे पड़े थे खाने के नाम पर कुछ नहीं मिला क्योंकि चूहे भी मरे हुए पाए गये।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हाँ, रूम में अधजली सिगरेट के टोंटे इधर-उधर बिखरे पड़े मिले। डॉक्टरी जाँच भी आ गई कि मृतक के पेट में चार दिन से अन्न तो दूर पानी तक नहीं गया। बंगाल से बाई आई तो दूसरी तरफ रूममेट भी आ गया उनके भी बयान कलमबद्ध किये। रूम में शराब की कोई बोतल नहीं पाई गई और रही प्रेमिका की बात तो वो कहीं दूर जिले में दूसरी डिलीवरी के इंतजार में हॉस्पिटल में एडमिट थी। अंतिम सुराग भी टेबल पर मिला जिसमें दो कागज थे एक उसकी पोस्टिंग का लेटर था दूसरा एटीएम की पर्ची थी जिसमे 05:35 रुपये बेलेंस दिख रहा था। बबलू मीणा को 'सी.आई.डी.' के इंस्पेक्टर दया की तरह नतीजे पर पहुंचते देर नहीं लगी। 'भावी आर.ए.एस. की और वर्तमान बाबू की भूख से मौत हुई थी।' कोर्ट में एफ.आर. लगाने के साथ ही वो फाइल बंद हो गई। और इधर मैं भी इस कहानी को समाप्त करता हूँ क्योंकि अब आप बाबू की बकवास सुन पक चुके होंगे।

खैर साहब! जो भी हो इमली फाटक, लाल कोठी कॉम्पिटीशन समाज बाबू भाई की इस शहादत को हमेशा याद रखेगा जो व्यवस्था की खराबी, माशूका की बेवफ़ाई, दोस्त के दगे और नौकरी की लेट लतीफी की वजह से न मरकर सिर्फ घोर उदासीनता, स्वनिर्मित आलसीपन और अकर्मण्यता के संथारा से सद्गति को प्राप्त हुए।

हालांकि वो मर नहीं सकते वो अजर अमर है क्योंकि आज भी आपको इमली फाटक की जूस की दुकान पर, लाल कोठी में कोचिंग सेण्टर की बेरोजगार भीड़ में या 32 नंबर सिटी बस में जून की गर्मी में पसीने की गंध से खदबदाते हुए या टोंक फाटक पर किताबों की दुकान पर भिनभिनाते हुए या फिर 'लक्ष्मी मन्दिर' सिनेमा हॉल में एक दूजे को धकियाते हुए बाबू भाई विभिन्न किरदारों में मिल जायेंगे।

सुनो! इधर उधर मत देखो, तुम भी काफी कुछ बाबू भाई जैसे ही लगते हो।

क्या कहा, नहीं हो ?

खाओ कसम कि इस इमली फाटक के चाहे इस पार या उस पार बाबू भाई पर जो गुजरी उस हालात से तुम कभी गुजरे नहीं हो, मेरे यार ?

खैर छड्डो। सलाम बाबू भाई, सलाम इमली फाटक।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नाच

तुम आज आये हो और कह रहे हो मुझे माफ़ कर दो। ठीक दस साल बाद, तुमने यह जानने की भी कोशिश की क्या, कि मैं किस हालत में रही जब बिना बताये छोड़ चले गये थे।

तो सुनो एक स्त्री जब प्यार करती है तो पूर्णता के साथ करती है मगर एक पुरुष प्रेमिका को पत्नी बनाते वक्त हजार बातें सोचता है जाति, धर्म परिवार का दबाव, इज्जत, कैरियर, नफ़ा नुकसान न जाने क्या क्या... तुम भी उनमें से एक पुरुष ही थे न आखिर।

यह बात 1990 की है गुजरात के छोटे से गाँव की एक शादी में लेडिज फंक्शन हो रहा था। वो नाच रही थी उसके नृत्य और नर्तक में कोई भेद नहीं था। क्योंकि वहाँ नाच ही बचा था नर्तक खत्म हो गया था, शेष रहा तो सिर्फ दर्शक...।

हाँ, वो दर्शक जो नाच के साथ ही खुद को खो बैठा था। क्योंकि नाच रह गया नर्तक और दर्शक विलीन हो गये। नृत्य में घट गया। नाचने से नहीं, नाच में ही घट गया पता ही नहीं चला। चलता भी कैसे, इससे पहले इसकी कोई अनुभूति नहीं थी। किशोरी की पहली मुलाकात थी किसी पुरुष से। सब दे बैठी, दिल से दे बैठी क्योंकि स्त्री जब प्यार करती है तो...।

वो शादी में आया और चला गया। मगर कुछ दे गया या ले गया जिसकी यादों में वो डायरी लिखने लगी वो हर छोटी बात, हर मधुर स्मृति, वो पल, वो नाच जो उसकी आँख में थम सा गया था और शेष रह गया तो उसके आने का इंतजार। दोनों को मिलने की तड़प रहती, बेसब्री से इंतजार रहता।

उसके भाई का ससुराल था तो भाभी को लेने या छोड़ने के बहाने वो ही आता। जब पता चलता कि वो आ रहा है एक अजीब सी हूक उठती घड़ियाँ गिने न कटती। वो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
इधर क्यों न आया, अगर मैं घर से बाहर चली गई और पीछे आ गया तो ..हजारों सवाल और आशंकाएँ दिल की धड़कन को बढ़ाती, किसे कहे कहा भी न जाये दिल का हाल। खुद ही समझाती मनाती कभी खुद को, तो कभी खुदा को, कि मिलन हो जाये। लो वो आ गया माँ बाबूजी के पास बैठ गया बाहर ही गुवाड़ी में।

हे माताजी! अब अंदर भी नहीं आएगा। कैसे मिलेगा। न अकेले में मिलने की सम्भावना, न ही जुगत। धड़कते दिल ने एक आईडिया दे ही दिया पानी की मटकी ले निकल पड़ी। बिना मुड़े सोचती रही, महसूस करती रही उन पदचापों को। कुएँ पर पहुँच देखा वो नहीं था, घर का मोती कुत्ता था।

मुआं! प्यार का इशारा ही नहीं समझा, आया ही नहीं। वो मटकी भरती खाली करती इस आस में कि दर्शन से हिये की जलन कुछ शीतल हो।

कहो तो मटकी ऊँची करवा दूँ?

'नहीं जरूरत।' अब रूठने व मनाने का दौर शुरू हुआ।

'इतने दिन हुए और आज आई हमारी याद।' मान मनुहार हुआ, प्यार के आगे जिद हारी। मटकी सिर पर रखाते वक्त कुछ पानी छलका जो तन और मन को भिगो गया। गुजरात के इस हरे-भरे गाँव में कुएँ की जगत पर इससे ज्यादा कुछ करना पाप और अनैतिक था। मगर प्यार की परिभाषा में पेड़ पर बैठे तोता मैना और कोयल की कूक एक मूक निमन्त्रण था दो प्रेमियों को। पंछी भी एक बार फड़फड़ा गये, जब उसने पहली बार लबों को छुआ था।

इस तरह उनका प्यार परवान चढ़ने लगा वो साल में दो तीन बार आता, घड़ी भर मिलते, फिर महीनों भर उन घड़ी दो घड़ी को सिमटे, बावली हुई सी फिरती, कभी याद कर मुळकती तो कभी विरह में तड़पती। जब भी वो गाँव के स्टेशन से ट्रेन की सीटी सुनती वो मटकी लेकर पानी लेने चल पड़ती जब भी वो आता तो कुएँ के रास्ते से उसके पीछे- पीछे चलता, सब समाचार पूछता वो हाँ हूँ से ज्यादा नहीं बोल पाती। मगर दिल कहता वो सवाल पूछता रहे और घर का रास्ता और भी लम्बा हो जाये।

प्यार जवां हो रहा था वो किशोरी से युवती हो गई। और फिर कॉलेज की पढ़ाई के लिए उसे पाटन शहर में मौसी के यहाँ पढ़ने के लिए भेज दिया। सिद्धराज सोलंकी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
के इस शहर में प्यार कॉलेज करने लगा। किताबों के पन्नों में फूलों के रस रिसने लगे तो नोटबुक के पिछले पन्ने रंगीन होने लगे। वो मिलते मिलकर सपने बुनते। गाँव की छोरी ने उसे अपना समस्त संसार मान लिया। उसकी आँख से वो सपनों के घर बसाने लगी।

सपनों का महल उस दिन दरका जब उसका फोन आया कि हम शादी नहीं कर सकते।

क्यों ?

मेरे पिताजी ने कहीं और रिश्ता तय कर दिया है।

'तो उसे तोड़ दो, हमने तो साथ जीने मरने की कसमें खाईं थीं जय।'

'हाँ वो तो ठीक मगर मैं असमंजस में फँस गया हूँ मेरी विकलांग बहिन का रिश्ता वो करवा देंगे अगर मैं उधर करता हूँ तो।'

'तो तुम अपने स्वार्थ के लिए मुझे छोड़ दोगे उन वादों और दावों का क्या'

'ओके बाय'

'अरे मेरे सवालों का जवाब तो दो' उसने फोन बीच में ही काट दिया और साथ ही रिश्ता भी...।

वो खड़ी रही सुन्न सी। कोई इस तरह एक तरफा निर्णय कैसे ले सकता है कभी तो बताता। वो पगला गई, मनाएगी रूठे यार को, इस तरह न जाने देगी उसे कहीं, वो उसका है, कैसे कर सकता है और से शादी। एक तरफ कॉलेज की परीक्षा और दूसरी तरफ अप्रैल-मई की गर्मी। पहले एग्जाम देती फिर वो बावरी सी भटकती, उसके दोस्तों से पूछती, वो कहाँ चला गया कोई पता दो, कोई नंबर दे दो। साल भर बाद किसी ने नंबर दिए कि जय इस दुकान पर आता जाता है।

उसने नंबर लगाये तो दो चार बार तो मना ही कर दिया कि कोई जय नहीं है यहाँ। ज्यादा ही पूछा तो बताया कि उसने शादी कर ली है और उसने कच्छ-भुज में ट्रांसपोर्ट का बिजनेस शुरू कर दिया। वो टूट गई, दर्द को पहली बार गहराई से महसूस किया, उसे भीतर ही भीतर कुछ जकड़ रहा था, पर क्यूं ये है, क्या है, जो कुछ फँस सा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
गया है उसे समझ नहीं आता। ऐसा लगता था कि कुछ दुबका सा पड़ा था ज़ेहन में और...।

अचानक अपनी मौजूदगी बेनिशां करता सा हर पल कलेजे को गर्म लोहे सा दाजता रहता था। उसे कोई भी सुध नहीं रही पर सांसें चलती रही इस घुटन में घिसट घिसट कर वो भी सांस लेने की ख्वाहिशों में...पर आघात जो लगा था दिल में हर्फों को नहीं निकलने देता। गले से और वह लहू गले में उतर अश्कों में मिल बहता रहता था। उसे कभी-कभी अजीब सी कोफ़्त होती कि उगल दूँ सब कुछ दूँ और हल्की हो जाऊँ पर ...। मरघट सा वीरानापन मन में इस कदर पसर गया था कि जी की पीड़ किसी से बता नहीं पाती, पर जो रोक लिया था वो रिस-रिस कर निकल रहा था और सीलन सी पैदा कर रहा था चारों ओर। उसे कभी-कभी लगता कि इस सीलन से बेहतर है कि इस ज़हर को निगल लूँ और हार जाऊँ खुद से।

गाँव की निर्दोष लड़की प्यार के इस आघात को कैसे झेले। मौसी ने बहला फुसला कर गाँव भेज दिया। कुछ सालों बाद उसकी अहमदाबाद में शादी हो गई। पति और बच्चों के प्यार में वो सीलन, रिसाव और गंध भर गई। जीवन को ताजा हवा मिली नई कोपलें खिल उठी। जीवन खुशियों से सराबोर था। अहमदाबाद में आकर वह घर परिवार में रम गयी। अच्छी कॉलोनी में रहने के कारण उसे भी शहर की हवा लग गयी। कभी बर्थडे पार्टी तो कभी किटी पार्टी तो कभी पिकनिक कभी वार त्यौहार के नाम पर सज सँवर कर बाहर घूमना, खाना, पीना और खुद को मॉर्डन बनाने की दौड़ में शामिल हो गयी। जब वह पाटण जैसे छोटे कस्बे से अहमदाबाद आयी थी तो खुद को दबी सी महसूस करती।

चमचमाती गाड़ियाँ, चौंधियाती लाइट्स और देर रात तक ब्लू लाइट्स पर थिरकते कदम। गाँव से आई लड़की में खुलापन तो नहीं था, मगर आत्मविश्वास खूब था इसलिए अपने खोळ को तोड़ने में ज्यादा वक्त नहीं लगा। जल्द ही शहर की पॉश कॉलोनी की मॉर्डन लेडीज क्लब में शामिल हो गयी। फेसबुक, व्हाट्सअप और इंस्टाग्राम की आभासी दुनिया में खुद को अपडेट रखने लगी। समसामायिक मुद्दों, महिला सशक्तिकरण और समानता के नाम पर बेबाकी से बोलने लगी।

एक दिन उसकी फेसबुक पर फ्रेंड रिक्वेस्ट आयी। एकबारगी तो वह चौंकी,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसकी बेवफाई याद आयी मगर उसे स्वीकारने के बजाय कई दिन तक यूँ ही छोड़ दिया। कुछ दिन बाद उसने फिर फेसबुक खोली तो उसकी वॉल को खंगाला, कुछ तस्वीरों के साथ ग़म और दर्दभरी शायरी के सिवाय कुछ नहीं मिला।

इतने साल हो गए, अब क्या फर्क पड़ता है, मेरी शादी हो गयी है, चलो दोस्ती करने में क्या जाता है, उसने रिक्वेस्ट को स्वीकार कर लिया। धीरे-धीरे बात होने लगी, हर बार घुमा फिरा कर पुराने घावों को कुरेदता और एक दूजे को गलत ठहराने पर लम्बी बहस होती, वह अपनी मजबूरियों को रखता तो दूसरी तरफ वह प्यार की कीमत सामने रख उसकी मजबूरियों का मजाक उड़ाती। वह सिर्फ सुनता और स्वीकार कर लेता, इसके सिवाय उसके पास कोई रास्ता नहीं था।

'मैं कल अहमदाबाद आ रहा हूँ कुछ मशीनरी खरीदने, तुमसे मिलना चाहता हूँ।'

'नहीं, बिलकुल नहीं।'

'सिर्फ एक बार मिल लो, मैं तुम्हें देखना चाहता हूँ।'

'देखना क्या है फेसबुक और व्हाट्सअप पर देखते ही हो न।' उस दिन खूब तर्क दिए पर वो अपनी जिद पर अड़ा रहा।

'चलो फिर बाद में देखते है अब बच्चे आने वाले हैं।' यह कहकर फोन काट दिया।

वह भीतर से हिल गयी थी कि अब क्या करे, किसको बताये। फिर उसने अपनी दो चार सहेलियों से बात की, मगर कोई स्थायी हल नहीं निकला सभी के वस्तुनिष्ठ अनुभव थे। कुछ ने कहा मिलोगी तो बात बढ़ेगी और ये मिलना जुलना हँसते खेलते जीवन में आग लगा देगा। कुछ कहती क्या फर्क पड़ता है, है तो आखिर तेरा प्रेमी ही। एक छोटी सी गलती के लिए इतनी बड़ी सजा देना, देखो इतने सालों बाद भी तुम्हें प्यार करता है। वह उलझ गयी खुद के बुने जाल में, खुद को कोस रही थी क्यों दोस्ती स्वीकारी, अच्छी भली ज़िंदगी चल रही थी, अब यह माथाफोड़ी।

उधर रोज उसके मैसेज और फोन आते, हर बार मिलन की मिन्नतें बढ़ती जाती और पुराने प्यार की कसमें दिलाकर भावुकता बढ़ा देता, समझ नहीं आ रहा था। इस

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मानसिक उलझन का जीवन पर भी प्रभाव दिख रहा था, न तो बच्चों को ढंग से पढ़ा रही थी और पति से भी अजीब सी ग्लानि की वजह से कटी-कटी सी रहने लगी। दिन भर फेसबुक और व्हाट्सअप पर खुद को व्यस्त रखती, मगर हर बार दिल में एक ही बात घूमती, और वहीं उसी के आसपास आकर ठहर जाती, कभी बचपन की मोहब्बत का अतीत परेशान करता तो कभी वर्तमान की कड़वी हकीकत की झुंझलाहट तो कभी इस रिश्ते का भविष्य सामने उभरता दिखता।

ज्यादा ही परेशान होती तो स्कूटी लेकर निकल पड़ती। तेज गति से भागते इस महानगर के कोलाहल में खुद को भुलाने की कोशिश करती। जानबूझ कर ट्रैफिक और भीड़भाड़ वाली जगह पर जाती ताकि उस भीड़ में खुद के भीतरी शोर को शांत कर पाये, मगर यह मात्र छलावा भर था। फिर वह थक जाती, मगर हाथ कुछ नहीं आता सिवाय गहरी थकान के। उधर उसके आने के दिन नजदीक आ रहे थे दूसरी तरफ उसकी बेचैनी बढ़ रही थी। समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे क्या न करे। उधर उसकी एक ही जिद थी मुझे कुछ नहीं चाहिए बस एक बार मिल लो। फिर तुम जो कहोगी वो करने को तैयार हूँ।

उसकी एक सहेली ने उसको एक आइडिया दिया क्यों न उसे कुछ दिन के लिए बहला फुसला कर डायवर्ट कर दिया जाये।

'सुनो मैं तुम्हें तभी मिलूंगी, जब तुम्हारे पास फॉर्च्यूनर गाड़ी होगी।'

वह हक्का बक्का रह गया शर्त भी ऐसी जो एकदम पूरी नहीं हो पाए।

उसने कहा 'ठीक है, मंजूर है, पर मेरी भी एक शर्त है कि तुम मुझसे रोज बात करोगी।'

'हाँ, पक्का।' उसे लगा कि इसे अभी वक्त लगेगा तब तक एक और बहाना ढूँढूँगी। उसके बाद उसने राहत की साँस ली मगर कुछ फँसा हुआ सा लग रहा था उसको भी महसूस कर रही थी। उसे पता था वह जिद्दी है एक दिन आ ही जायेगा। कुछ महीनों बाद फोन आया।

''अहमदाबाद आ रहा हूँ फॉर्च्यूनर लेकर फिर हम कांकरिया तालाब घूमने चलेंगे।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अब उसके पास कोई रास्ता नहीं था। मगर उसने अपना अंतिम दांव खेला।

'सुनो! तुम्हारी पत्नी से एक बार बात करवा दो, फिर मिल लूंगी।'

उसने तुरंत अपनी पत्नी को फोन पकड़ा दिया। जैसे ही बात शुरू हुई उसकी पत्नी बरस पड़ी।

'तुम वही हो न जिसने पता नहीं क्या जादू किया कि मेरा जीवन बर्बाद हो गया। तुम्हारी वजह से मेरी सारी खुशियाँ छिन गयीं। इन्होंने शादी के दूसरे दिन ही बता दिया था कि मैं एक लड़की से प्यार करता हूँ मेरी शादी मजबूरी में हुई है। अभी तक न तो ढंग से बात करते हैं न ही बच्चों को सम्भालते हैं। मेरी माँ! मैं तेरे आगे हाथ जोड़ती हूँ मेरे पति की ज़िंदगी से चली जा, मेरा घर मत जला। मेरा नहीं तो मेरे बच्चों का ख्याल कर। तेरे चंगुल से इनको मुक्त कर। अगर नहीं करेगी तो भगवान तेरी खुशियों में आग लगा देगा।'

वो चुपचाप सुन रही थी उधर वो बोले जा रही थी उलाहने दिए जा रही थी उसका गुस्सा, खीज, परेशानी जायज़ थी।

उसने फोन काट दिया, उसका सिर भन्ना रहा था, उसे किस गलती के लिए इतना सुनना पड़ा, समझ नहीं आया। उसने फोन की सिम तोड़ दी और सब कुछ खत्म करके थककर सो गई।

उसे सपने में वो नाच दिखने लगा था, जिसमें नर्तक, नृत्य और दृष्टा तीनों धीरे-धीरे खो रहे हैं और उस वर्चुअल में पीछे बचा शून्य, जो वफ़ा और बेवफाई से परे था। जिसमें शायद वो प्यार था जो दुनिया की मजबूरियों से परे था। मगर प्यार की कोमल संवेदना यथार्थ के कठोर धरातल पर टकराती है तो सिवाय सिसकियों की गूंज के कुछ सुनाई नहीं देता वो भी इस महानगर के कोलाहल में दब जाती है और फिर संघर्ष शुरू होता आँसुओं को पोंछ कर झूठी मुस्कान और डार्क लिपस्टिक के साथ खुद को मॉर्डन बनाने का और अतीत के पन्नों को खुद के हाथों से जलाकर राख को ठिकाने लगाने का...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अभिशप्त वरदान

अपने दोस्त के पिताजी को देखने अक्सर मैं भगवान महावीर कैंसर हॉस्पिटल जाता, पिताजी तो अंदर एडमिट थे तो दो मिनिट में मिल कर बाहर आना पड़ता क्योंकि वहाँ ज्यादा देर ठहरना मना था और ठहर भी जाते तो बात की कोई ज्यादा गुंजाइश नहीं थी क्योंकि उनको मुँह का कैंसर था तो बोल तो पाते नहीं थे सिर्फ इशारों से बात करते थे या फिर पड़े पड़े टुकुर-टुकुर देखते थे इसलिए वहाँ खड़ा रहना भी मुश्किल होता था।

मेरी कोशिश यही रहती कि पिताजी को तो हम ठीक नहीं कर सकते मगर दोस्त को भावात्मक सहारा जरूर दे सकते हैं इसलिए जब भी जाता तो उसे पास के सरस पार्लर पर ले जाता तो कभी जी.टी.मॉल में घुमाने ले जाता कभी कभी उसका मन ज्यादा उदास होता तो बाहर बने छोटे से लॉन में बैठ जाते जहाँ चारों तरफ रोगी और उनके परिजन होते जो किसी को मिलने, दिखाने या कीमोथैरेपी या इलाज करवाने आये हुए होते।

चारों तरफ दवाई की गंध, ऑपरेशन किये हुए और कीमोथैरेपी के कारण उड़े हुए बालों वाले वीभत्स चेहरे और साथ में उदास परिजन जो इस उम्मीद में आते हैं कि कैंसर अब लाइलाज नहीं रहा। मगर जब भी बात छिड़ती तो ले देकर वही उदाहरण कि हमारे उस रिश्तेदार को था खूब इलाज करवाया फोर्टीज, टाटा, सिविल हॉस्पिटल मगर बचे नहीं।

इस अस्पताल परिसर में हरदम भय, दहशत और आशंका का माहौल पसरा रहता। जब कोई नया मरीज आता तो डर फैलता जब ऑपरेशन होता तो शंका के बादल उठते और जब स्ट्रेचर पर सफेद कपड़े में ढकी लाश ले जाते तो आसपास दहशत फैल जाती, बचे हुए रोगी अपने पाप पुण्य का हिसाब -किताब लगाते तो कभी छोटे बच्चों और बीबी की चिंता में डूब जाते।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मगर जो रोगी फर्स्ट स्टेज पर ठीक हो जाते उनके चेहरों पर नई ज़िंदगी करवट लेती हुई दिखाई देती। एक नई उमंग, नया विश्वास रगों में संचरित होता हुआ दिखाई देता था।

मैंने नोटिस किया वहाँ अक्सर एक औरत अकेली गुमसुम बैठी रहती। जिसकी उम्र 35–40 के करीब होगी, कभी हमारी तरफ देखती तो कभी दूसरे लोगों को देखती।

एक दिन हिम्मत कर मैंने बात शुरू की। उसने बताया वो भी मरीज है तथा नियमित चेकअप के लिए आती है।

'आप क्या करते हो' उसने कमजोर और पतली आवाज में पूछा।

'मैं लेखक हूँ।'

'मतलब ठाले हो ?' उसने व्यंग्य किया था या तौहीन, समझ नहीं आया।

'क्या लेखक निक्कमे ही होते हैं ?' मेरी आवाज में जरा तल्ख़ भरी नाराज़गी थी।

'नहीं, नहीं मेरा मतलब यह नहीं था।' उसने खुद को सम्भालते हुए और शिष्टाचार दिखाते हुए माफ़ी चाही।

'क्या लिखते हो ?' थोड़ी सी चुप्पी के बाद वो बोली।

'कहानियाँ, कविता वगैरह।' मैंने संक्षिप्त सा जवाब दिया।

'मैं भी पढ़ना चाहूँगी'

मैंने उसी वक्त साहित्यिक पत्रिका में आई अपनी कहानी पकड़ा दी।

वो पढ़ने लगी।

उस दिन के बाद जब भी मैं हॉस्पिटल जाता वो कभी भी मिलती तो अक्सर बातें करती।

'तुम लेखक हो, संवेदनशील हो, तुम मानव मन के दर्द को शब्दों में भलीभांति उकेरते हो, दीन–दुनिया की बड़ी बड़ी बातें करते हो, मानवता और समानता पर बड़े

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बड़े भाषण झाड़ते हो, आदर्श और दर्शन पर व्याख्यान देते हो, मगर आज एक स्त्री का दर्द भी सुनो और लिखो।' उस दिन वो भावुक होकर कहने लगी।

'जरूर। आप बताओ तो सही।' मैंने कहा।

'मैंने उस दिन तुम्हारी कहानी 'बेजुबां दर्द' पढ़ी तो सोचा कि तुमसे कुछ सवाल पूछ लूँ लेखक बाबू!'

'हाँ पूछो।'

'दर्द सहन करने की कितनी सीमा होनी चाहिए?' वो गम्भीर होकर बात कर रही थी।

'यह तो व्यक्तिगत मामला है मेरी समझ में तो।'

'तुम क्या जानो, एक स्त्री का दर्द, एक मर्द जो ठहरे!'

'हाहाहा। अच्छा डायलॉग था' मैंने प्रतिक्रिया दी।

मगर वो सच में गम्भीर थी, फिर बोली–'नहीं साहब, एक स्त्री को अपनी सम्पूर्णता साबित करने के लिए कितने दर्द से होकर गुजरना पड़ता है वो एक स्त्री ही जानती है और उस दर्द को समझने के लिए स्त्री होना पड़ता है या अपने पौरुषत्व के अहम को दूर रख उस अथाह दर्द के सागर में सच्चाई के साथ उतरना होगा, तभी ही छू पाओगे उस दर्द की बिखरी हुई कतरनों को।'

'चलो आज बता ही दो आखिर कितनी थाह है आपके दर्द की?' मैं उस दर्द को सुनने के लिए तैयार हो गया और उसकी दर्द भरी व्यथा की प्याली झलक पड़ी।

मैं बचपन से स्वार्थी थी। किसी की नहीं सुनती। एक ही जूनून था हर जगह प्रथम रेंक लाना, हर बार मैं ही जीतूं। अगर कोई जीत भी जाता तो मैं उसके साथ बहुत बुरा व्यवहार करती थी। मेरे लड़के ज्यादा दोस्त नहीं रहे जो भी थे, वही जो मेरी बात मानने वाले, मगर मुझसे बेहतर तो कभी नहीं। मेरी इस सनक पर मम्मी खूब समझाती कि यह व्यर्थ की दौड़ छोड़ दे। जब मैंने 12वीं पास की तो मैंने सी ए का कोर्स सीपीटी ज्वाइन किया खूब पढ़ाई की, वही सनक कि कोई आगे निकल न जाये।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'आपको पता है इसकी वजह ?' उसकी धंसी हुई आँखें कुछ चौड़ी हो गईं।

'नहीं आप बताओ ?' मैं उसका रिदम तोड़ना नहीं चाहता था।

मेरी छोटी बहिन पैदा होने वाली थी तब दादी और बुआ ने पापा को खूब भला बुरा कहा कि इस बार लड़की हो गई तो अच्छा नहीं होगा, चैक करवा लो।

मगर पापा ने कहा नहीं कराऊंगा और खूब बहस हुई तो सबके सामने कसम खाई कि मुझे लड़की ही चाहिए और मुझे नहीं चलाना वंश।

और मेरा हाथ पकड़ बाजार ले गये खूब सारे बेबी गर्ल वाले पोस्टर खरीद ले आये और मम्मी के कमरे में लगा दिए।

सौभाग्य से मेरे बहिन हुई मगर घर में तनाव हुआ। पापा से कई महीनों तक किसी ने बात नहीं की। कई दिन तक नाम भी नहीं रखा गया, जब भी मौका मिलता परिवार वाले पापा को ताने देते। उस दिन से मुझे लड़कों से नफरत हो गई मैंने उस दिन तय किया कि पढ़ कर लड़कों से आगे जाऊंगी और पापा को प्राउड फील करवाऊंगी।

मैं 12वीं कॉमर्स की मेरिट में टॉपर थी मगर पापा को क्या जंचा मुझे सी ए में एडमिशन दिला दिया मेरे लिए सब कुछ नया था। मैंने खूब मन लगा कर पढ़ाई की मेरा इंग्लेंड में आर्टिकलशिप के लिए चयन भी हो गया और सीपीटी भी क्लीयर हो गयी। आई पी सी सी का अवसर भी था।

मगर इस बीच पापा को हार्ट अटैक आ गया उनको बेड रेस्ट बोल दिया इधर दादी, नानी और घर वाले मेरी शादी के पीछे पड़ गये। पापा भी अटैक से डर गये थे तो हाँ कर दी। मेरा वीज़ा और पासपोर्ट लिफाफे में बंद ही रहा मेरी शादी हो गई। उस आदमी से शादी जिसे कभी न तो देखा न मिली।

मेरा सब कुछ छूट गया। मेरे सपने, मेरा जूनून हालतों के आगे बिखर गये। मैं कभी खुश न रह पाई जब भी पापा आते तो झूठ बोलती रही कि खुश हूँ क्योंकि उनकी तबीयत का डर था।

यहाँ आने के बाद घुटती रही, डिप्रेशन में चली गयी।

तब डॉ. के कहने पर फिर से पढ़ाई शुरू कर दी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पहले तो ससुराल वालों ने मना किया कि क्या करना है आगे पढ़ हमारा खूब अच्छा परिवार है कौनसी नौकरी करवानी है। मगर मैं नहीं मानी बी. कॉम. किया मगर फिर अकेली पड़ गई तो नौकरी करने की सोची तो घर में खूब बवाल हुआ ससुर जी प्रधान हैं, इनकी नाक कटवाएगी क्या, लोग क्या कहेंगे ?

मगर मैं नहीं मानी उन्होंने खूब अड़ंगे लगाये।

मैंने जॉब ज्वॉइन कर लिया सुबह घर का काम करके निकलती और पूरे दिन ऑफिस फिर थक कर लौटती वही काम पसरा मिलता।

थोड़ी सी भी गलती होती या लेट होती तो गाली गलोच और मार पीट शुरू।

शुरुआत में तो खूब अजीब लगा मगर बाद में आदत सी हो गई मुझे पता था यह डरा, धमका और परेशान कर मुझे नौकरी छुड़वाना चाहते थे।

मैंने कभी बाहर किसी को महसूस नहीं होने दिया कि मेरे साथ क्या हो रहा है मेरे घरवालों तक को भी नहीं।

'तो आप यह सहन क्यों करती रहीं' मैं बीच में ही बोल पड़ा।

क्योंकि मैं काम से थक कर खुद को भुलाना चाहती थी और सहन करते-करते एक दिन पत्थर बनना चाहती थी।

'यह तो कोई बात नहीं हुई आप पढ़ी लिखी हैं तो आपको अत्याचार के खिलाफ आवाज उठानी चाहिये थी।' मुझे उसके तर्क में दम नहीं लगा।

ऐसा नहीं है मेरे पास कोई और ऑप्शन नहीं था मैं अंदर से खोखली हो चुकी थी और कहाँ जाती कौन स्वीकारता ?

'और बच्चे कितने हैं ?' मेरे दिमाग ने अब सवाल खड़े करने शुरू कर दिए।

'नहीं हैं।' वो अचानक चुप हो गई।

'क्यों ? शादी के इतने साल बाद भी...। क्या आप खुद बच्चे नहीं चाहतीं ?' मैंने फिर से टटोला।

नहीं ऐसा नहीं मगर तुम मरद जात, जब चाहो तब फैमिली प्लानिंग का फतवा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जारी कर देते हो, मगर तुम्हें नहीं पता कि प्रकृति की व्यवस्था के खिलाफ़ लड़ने में हमें कितनी कीमत चुकानी पड़ती है, उन दिनों को गिनना और अजीब से भय मिश्रित खुशी से कहना कि पीरियड्स नहीं आये, तब तुम्हारा वो रिएक्शन जैसे सब गलती हमारी ही थी।

कई महीनों बाद शक व संदेह से घूरती निगाहों से सामना करने बाद जब डॉ. ने कहा प्रेग्नेंट है तो उसका चेहरा सफ़ेद झक्क पड़ गया था, हालांकि उस समय वो सयंत हो घर ले आये। वो रेलवे में इंजीनियर थे और मैं कंटेंट डेवलपर मगर अभी न तो वो, न ही परिवार और न ही परिस्थितियाँ इस अनचाहे मेहमान को स्वीकारना चाहती थी। मैं उन दो दिनों के अघोषित कर्फ्यू की घुटन में उस मानसिकता की बू को उच्च शिक्षित परिवार में भी महसूस कर रही थी। करती भी क्यों नहीं, मैं इतने सालों से भुगत जो रही थी।

खैर! दो दिन में परिवार की बदली नजरों, परिस्थितियों और समय की नजाकत और बिखरते परिवार को देख मैं उसके साथ फिर उस क्लिनिक पर गई।

डॉ. के आगे जाकर हर बार यह कहना कि 'अनचाहा गर्भ है' अंदर से तोड़ देता था फिर उन दवाइयों को लेना, उसने वो दवाइयां दिलाकर अपने कर्तव्य की इतिश्री कर ली थी,

फिर उसके बाद जो कहर इस शरीर पर ढहता है उसे लेखक बाबू तुम कैसे समझोगे?

वो बार बार जी मिचलाना, कुछ भी खाओ हजम नहीं होना, पानी भी पियो तो उल्टियाँ होना, मुँह का कसैला स्वाद, पेट में उठते मरोड़, बीपी का ऊपर नीचे होना, फिर बार बार ब्लीडिंग होना, जिसमें अपने अस्तिव के टुकड़ों को गटर के फ्लश में बहा देना, उफ्फ, उस समय भीतरी टूटन हमें अंदर से छीलकर रख देती है।

'चलो छोड़ो' मेरे अंदर उसकी कहानी सुनने की हिम्मत नहीं हो रही थी, वो ज्यादा ही भावुक होकर बह रही थी मेरे लिए इस वक्त उसे संभालना मुश्किल हो रहा था।

'अरे रुको, सुनो भी' उसने अधिकार जताते हुए बोलना जारी रखा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कभी कभी कई दिन तक वो बचे-खुचे टुकड़े ब्लीडिंग में आकर इस बात का सिहरन भरा अहसास दे जाते हैं कि उन्हें माँ की कोख से कितनी बेरहमी से उन दवाइयों के ज़हर ने काटा होगा। इन दिनों गर कोई फंक्शन हो तो दोहरी मार झेलनी पड़ती। अंदर से बिखरे हुए दर्द को सिमट कर आँखों की सूजन को और होठों पर जमी पपड़ी को मेकअप से पोतने की कोशिश करती और रिश्तेदारों और दोस्तों के सामने होठों को खींच कर दो इंच की मुस्कान देने की कोशिश करती।

मगर फिर भी मेकअप की तहों से, कहीं लकीरों में उभरा दर्द छुपा कर भी कोई कैसे छुपाये ? ऊपर से घर के काम और नाश्ते से लेकर रात के खाने तक आदर्श बीबी, बहू, और भाभी का किरदार निभाना जबकि उस समय जरूरत रहती है मानसिक और शारीरिक रूप से थके हुए को आराम की उस वक्त दादी सास का ये उम्मीद भरा सवाल कि कोई आशा है क्या बिंदणी ?

आप ही बताओ उन्हें कैसे समझाऊँ ?

रोज ऑफिस जाकर अफसरों के काम के बोझ तले मेरे पेडू का दर्द मुझ से नारी होने की कीमत वसूल करता।

हद तो तब होती है जब उसका हर रात ये पूछना कि ये नाटक कब बंद होगा ?

तब करवट के साथ ही औरत जात का सारा दर्द तकिये पर अनुत्तरित ही लुढ़क जाता है कि इस नाटक में केवल क्या हम ही जिम्मेदार हैं ?

फिर उसका हर महीने ये पूछना कि एवरीथिंग इज ओके ना ?

जब कभी ओके नहीं होता तो वो वही घटनाक्रम। जब पीरियड्स नहीं आते तो हिल जाती डॉक्टर जब कहता प्रेग्नेंट है तब ख़ुशी की जगह डर ही फैलता।

यह मेरा तीसरा एबॉर्शन था। मैं अब झेल नहीं सकती थी, टूट गई थी।

शरीर पूरा नीला - नीला पड़ गया, वो चमक अब उन अंधेरी रातों में जाते जाते बिलकुल धीमी पड़ गयी। मन में एक अजीब सी कसक और बेचैनी रहती। कमर और पेडू का दर्द दुगुना होता जा रहा था। नींद की कमी ने रातों की कड़वाहट को और अधिक बढ़ावा दे दिया। स्त्रीत्त्व की पहचान और मातृत्त्व को खोता हुआ शरीर अब

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निरुपाय और असहाय होने लगा। शरीर में लगता था कोई हिम्मत नहीं बची दर्द झेलने की और न ही जीने की इच्छा... ।

एक दिन भयंकर दर्द हुआ, ब्लीडिंग रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी।

डॉक्टर को दिखाया तो बच्चेदानी में कैंसर बताया।

मैं सुन्न हो गई। ज़िंदगी से यूँ लड़कर थक सी गई थी और ऊपर यह बीमारी।

खुशियाँ लिखना भूल ही गया था शायद मेरे हिस्से में, अंतहीन दर्द था, जिसे अकेले ही मुझे झेलना था।

डॉ. ने ऑप्शन बताये 6 माह तक दवा लो या फिर ऑपरेट करवा लो।

मैंने दूसरा ऑप्शन चुना यह जानते हुए भी कि इससे अब कभी भी माँ नहीं बन सकती।

ऑपरेशन से पहले एक माह दवाई चली फिर ऑपरेशन हुआ।

वो हॉस्पिटल दिन में एकाध बार आता मगर मैंने उसकी तरफ देखना छोड़ दिया, मेरी आँखें शून्य में ताकती रहती।

'आकर कहता ऑफिस में जरूरी काम है ऊपर से पापा के एम.एल.ए. चुनाव की तैयारी करनी है' कह कर वो निकल जाता।

मैं पूरे दिन अकेली इस हॉस्पिटल के बेड पर पड़ी रहती, सोते-सोते पीठ में घाव हो गये थे हड्डियां दर्द करने लग जाती।

जी करता बाहर घूम आऊँ मगर अपने को नलियों और ड्रिप की सुई से बंधा पाती।

मुझे धीरे-धीरे लगने लगा इस बार मैं शायद ही बच पाऊँ, मैं खुद को ज़िंदगी की अंतिम लड़ाई से हारती हुई देख रही थी। मैं हर बार हारी मगर कभी खुद से हार नहीं मानी। जिद थी एक बार उठ खड़ी होऊँगी और काल के भाल पर अपनी किस्मत अपने तरीके से लिखूँगी। मगर इस बार ऐसा नजर नहीं आ रहा था अंदर से टूट रही थी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शायद खुद को टुकड़ों में मरा हुआ महसूस करने लगी। कोई उम्मीद नजर नहीं आ रही थी डॉक्टर को भी कोई खास इम्प्रूवमेंट नजर नहीं आ रहा था।

वो बेफिक्र था, शायद उसे छुटकारा मिलने वाला था, बाकी परिवार ससुर जी के चुनाव में व्यस्त हो गया।

अब मैं खुद यहाँ आती हूँ ज़िंदगी की जंग हारने या जीतने ये पता नहीं। एक दिन मैंने इस दु:ख के अभिशाप से छुटकारा पाने के लिए तय किया।

'मतलब ?' मैं चौंक गया।

मतलब यही कि मैं मरना चाहती थी, मुझ में हिम्मत नहीं बची थी इस दर्द को झेलने की।

'फिर'

तभी हॉस्पिटल में दो साल की बच्ची एडमिट हुई जिसे एक एन.जी.ओ. पाल रहा था।

वो रोज दर्द से अपरिचित हो मुस्कराती बातें करती मेरी अच्छी दोस्त बन गई।

जिस रात मरने के लिए उठी तो वो जोर से चिल्ला पड़ी 'मम्मी'।

जैसे यह आवाज मेरे भीतर से आई हो, शायद यह भी मेरी उन लड़कियों की तरह थी जिसे मैंने जन्म से पहले ही रवाना कर दिया था या मेरी माँ की कोख से पैदा हुई उस बहिन की...

मुझे जीने की वजह मिल गई मैंने वह एन. जी. ओ. ज्वाइन कर लिया उनके लिए जो मेरी तरह अभिशप्त वरदान झेल रहे थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उधड़े ख़्वाब

ग्वालियर एक्सप्रेस गांधीनगर रेलवे स्टेशन से दनदनाती हुई निकल गई, मालाणी आज फिर लेट थी। सर्द रात में किसी गाड़ी के जाने के बाद पेड़ों से गिरे पत्तों की अजीब सरसराहट के बाद छाई ख़ामोशी और भी भयावह लग रही थी। विचारों की ऊहापोह में डूबे युवा अफसर स्वरूप ने अपने पैरों को कम्बल से ढँकते हुए सुनसान प्लेटफॉर्म पर निगाह डाली।

पुलिया के ऊपर इक्के-दुक्के वाहन आ जा रहे थे। पड़ोस की बेंच पर एक कुत्ता ठिठुरन की वजह से कूं कूं करते हुए खुद को समेट रहा था। चाय वाला भी जाने की तैयारी में था। कुछ यात्री गर्म कपड़ो में डूबे प्रतीक्षालय में ऊंघ से रहे थे। उसे सुबह ही बाड़मेर पहुँचना है।

'मालाणी अपने निर्धारित समय से 1 घण्टा और बीस मिनट लेट चल रही है' सर्द रात के सन्नाटे को लाउडस्पीकर की आवाज चीर रही थी। इंतजार और सर्दी से बचने के लिए उसने सिगरेट जला ली और गाने सुनने लग गया। पर आज कुछ अच्छा नहीं लग रहा था। उसने अधजली सिगरेट को जूते की नोंक के नीचे दबा दिया। 'ज़िंदगी देने वाले सुन, तेरी दुनिया से जी भर गया।' मगर एफ.एम.पर चल रहे इस गाने ने मन को और ज्यादा खट्टा कर दिया।

वह परसों ही बाड़मेर बॉर्डर से छुट्टी लेकर जयपुर आया था। उसने जब उसको पहली बार देखा तब से वो विधवा थी, क्योंकि शादी के वक्त असिस्टेंट कमाण्डेंट की ट्रेनिंग थी तो शादी में आ नहीं सका था। इस बात को लेकर उसका लंगोटिया यार सूरज बहुत ही नाराज हुआ। शादी के चार माह बाद ही उसकी कार एक्सीडेंट में मौत हो गई। इस बीच कदाचित आना भी हुआ तो वो पीहर या ससुराल गई हुई होती। समाज की प्रथाओं को निभाते हुए उसने शुरू के दो-तीन बरस तो एक बन्द कमरे में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चार महीने की उन बिखरी मधुर यादों को भुलाने में लगा दिए। न किसी से मिलना न बात करना सिर्फ भाव शून्य साँस लेती एक जिन्दा लाश की तरह, घर के लोग खाना खिलाने का प्रयास करते तो कौर गले में अटक जाता और आँखों से आँसू झरते। मगर किसी रूह के रिश्ते को आँसुओं से थोड़ा ही पोंछा जाता है। जितना भूलना चाहो उसे दुगुना गहरा होता जाता वो इश्क का सच्चा रंग।

आँसू भी कितना साथ देते, आखिर वो भी सूख गए नैनों से और पीछे रही शून्य में ताकती दो विधवा आँखें जिनका साथ जल व साजन दोनों छोड़ गए, मगर उसका हिया रोता था भीतर ही भीतर, कभी कभी तो अंदर इतना दर्द होता था कि साँस तक रुक जाती, अंदर अजीब सी घुटन होती थी वो रोना चिल्लाना चाहती मगर आँखों के सूखे मरूस्थल से एक बून्द तक नहीं गिरती। वो तड़पती, दर्द में कराहती हुई पेट के बल दुहरी हो जाती थी साँस लेने के लिए और इस प्रयास में, न जाने कब बेहोश हो जाती।

यह सच है कि ग़म और घाव कितना भी गहरा हो समय उसे मरहम लगा के भर देता है मगर उसके निशान पतझड़ी और बादल भरी शाम में फिर से गहरा जाते हैं और भीतर ही भीतर कचोटते रहते हैं ज़िंदगी भर। उसने भी अपनी नियति को स्वीकार कर सार्थक जीवन को निरर्थक तरीके से जीने का प्रयास शुरू किया।

स्वरूप जब भी उनके घर आता तो भाभी से जरूर मिलता। वह हमेशा एक ही रंग के सादगी भरे कपड़े पहने हुए, सलवटों से भरे चेहरे पर फीकी व उदास मुस्कान के साथ गम्भीर बातें करती थी। वो उसे देश दुनिया की बातें सुनाता तो कभी हल्के फुल्के चुटकले भी। इससे उसकी शून्य आँखों में क्षण भर चमक आती और चेहरा लाल हो जाता लेकिन दूसरी घड़ी वो खुद को संभाल लेती। उसे क्षण भर ख़ुशी देने के प्रयास में जब कभी भी वो उसे हँसाता तो वो और ज्यादा उदास हो जाती। वो भी जब कभी उसके घर आती, वह खूब बातें करता, कोशिश करता कि उसके ग़म से भरे दिनों में से आज के एक दिन को तो खुशी से कटवा दे। उसने महसूस किया वो उसके साथ काफ़ी खुल कर बातें करती, अपने दर्द को साझा करती थी।

मगर उसे वह दिन याद है जब वो गुवाहाटी पोस्टिंग से जयपुर आया था। एक दिन भाभी से मिलने गया तो अपने कमरे में फर्श पर लेटी रो रही थी। आँसुओं से पड़े

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खारे निशानों को घुंघट की ओट में छिपाते हुए गंभीर मुस्कान लाने का प्रयास किया मगर आज वो भी गायब थी।

क्या बात है भाभीसा ? कुर्सी पर बैठते हुए पूछा।

उसने कोई जवाब नहीं दिया, सिर झुकाये न जाने कहाँ गुम थी। स्वरूप ने पहली बार उसका चेहरा ऊपर किया तो वेदना दर्द छलक पड़ा।

वो सिर्फ रो रही थी, रोते हुए उसकी हिचकियाँ बँध गई मगर कुछ नहीं बोल पा रही थी। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। वह कुछ देर बैठ कर अनमना सा घर आकर, बिस्तर पर विचारों के उधेड़बुन में उलझ गया।

एक व्यक्ति के साथ सात फेरे लिए थे और वो बीच में छोड़ गया। न कोई अरमान, न सपने, केवल चार महीनों की यादों के सहारे पूरा जीवन काटना। कितना कठिन होता है देवरानी और जेठानी को वार त्यौहार सजते संवरते देखना। कितना असहनीय होता है, भरे यौवन की सर्द सिसकती रातों को काटना। उनके मासूम बच्चों को गोद में खिलखिलाते हुए पलते बढ़ते देखना। उसकी क्या गलती थी, जो यह सजा मिली, शायद यही उसका प्रारब्ध हो।

प्रारब्ध के नाम से उसे सूरज के साथ दिल्ली के जे.एन.यू. हॉस्टल की वो लम्बी चौड़ी बहसें याद आ गई।

एक बार समाज में विधवा विवाह को लेकर बहस में उसने यह तर्क दिया था कि ये सिर्फ लम्बी चौड़ी बातें हैं सूरज बाबू! कोई नहीं स्वीकार पाता सैकेण्ड हैण्ड पत्नी को, और न ही परिवार से कोई विद्रोह कर किसी विधवा को हमसफ़र बनाता है, कहने को तो हम सैद्धान्तिक दावे कर देते हैं मगर यथार्थ का धरातल कुछ और ही निकलता है।

उस वक्त सूरज ने बौद्धिक भावुकता में कहा था कि अगर सच में कोई ऐसी जरूरत पड़ी तो वो पहल करेगा। मगर नियति को कुछ और मंजूर था। माँ ने खाने को तीसरी बार आवाज लगाई तो वो नीचे चला गया।

माँ! भाभी की दुबारा शादी क्यों नहीं करते ये लोग ? उसने कौर को निगलते हुए पूछा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कौन करेगा अपने समाज में एक विधवा से शादी ? माँ ने एक और रोटी थाली में रख दी।

अगर उन्हें एतराज नहीं हुआ तो, मैं करूँगा।

पागल हो गए हो क्या, शुभ-शुभ बोलो हमारे पास भगवान का दिया सब कुछ है, तेरे पास तो अच्छी नौकरी है, तेरी शादी तो बड़े घर में करूँगी, खूब सारा दहेज मिलेगा, कम से कम दो चार करोड़ तो देंगे ही।

प्लीज बन्द करो ये नाटक, खाना तो ढंग से खाने दो माँ। बहिन मनु प्लेट सरका कर ऊपर चली गई।

वह भी बेमन खाना खाकर जैकेट पहन छत पर टहलने आ गया। वह भी सामने वाली छत पर शॉल ओढ़े घूम रही थी। इच्छा हुई कि वो शाम वाली घटना के बारे में पूछे मगर उससे हिम्मत नहीं हुई, और वो उसे फिर से रुलाना नहीं चाहता था उसे क्या हक कि वो उसके दर्द को कुरेदे। चार पाँच चक्कर घूमने के बाद वो खुद उसके सामने आकर पैर के अंगूठे से सख्त फर्श को रगड़ती हुई जड़वत सी हो गई।

स्वरूप को पता नहीं क्या सूझा उसके दोनों हाथ पकड़ दोनों छतों के बीच बनी दीवार पर बिठा दिया। वर्षों के वैधव्य के पहाड़ तले दबी विस्मृत सी बदरंग अनुभूति प्रेम के हल्के ताप से पिघल गई। मगर कुछ ही क्षण में हाथ छुड़ा कर एक तरफ खड़ी हो गई और सिकुड़ा हुआ सा कागज का टुकड़ा देकर वो धीरे-धीरे नीचे की ओर चली गई। सलवटों से भरे उस कागज पर उसने अपनी भावनाओं को उकेरा था।

'यह दुःखों से भरा जीवन, अब सहा नहीं जाता, श्रद्धाविहीन रोटी के टुकड़े गले से नीचे नहीं उतरते और सहन नहीं होता यह सत्ताविहीन अस्तित्व या तो स्वीकारो या मुक्ति दो देव।'

उसने पत्र को आठ दस बार पढ़ा हर शब्द में छिपे उसके भाव को अपने अर्थ देने की कोशिश करता। कभी खुद के हिसाब से तो कभी वो बनकर। शब्दों की मात्राओं से हृदय के अंतरतम में उपजे भावों के सिरे को पकड़ने की कोशिश करता। कभी नैतिकता की दुहाई से फिसलता तो कभी बरसों से जमी राख के नीचे दहकते शोलों की तपिश में तपता तो कभी दोस्त सूरज की बौद्धिक भावुकता उसे याद आती तो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बीच-बीच में खाने के वक्त नैतिकता परिवार समाज और नौकरी को लेकर दिए माँ के तर्क याद आते।

रात भर दिमाग और दिल से लड़ते हुए उसने तय किया कि विधवा के निमन्त्रण को स्वीकारेगा, दोस्त की अधूरी प्रतिज्ञा को पूरा करेगा और अपने दिल के कोने में पनप रहे प्यार को विकसित करेगा।

अगली बार जब लम्बी छुट्टी पर आएगा तो वकील साहब के सामने भाभी से विवाह का प्रस्ताव रखेगा। उसके दूसरे दिन वो नई पोस्टिंग के लिए बाड़मेर जैसलमेर के बॉर्डर पर चला गया।

मगर सप्ताह भर बाद बहिन ने व्हाट्सएप्प पर मैसेज किया 'शी इज़ नो मोर' वो चली गई शायद मेरा बिना मिले ड्यूटी पर जाने को उसने 'ना' ही समझा और आत्महत्या कर ली।

आज उसकी जलती चिता में न गर्मी थी न ही धुआँ शायद उसमें कई उधड़े ख़्वाब जल रहे थे... उसके प्यार के, मेरी संवेदना के और सूरज की मानवीय सोच के।

'जिन यात्रियों को फुलेरा, मेड़ता, जोधपुर, बालोतरा और बाड़मेर की यात्रा करनी है वो प्लेटफार्म नंबर दो पर पहुँचे। दोस्ती, संवेदना, मानवता और बौद्धिकता को झटकाते हुए परिवार समाज, नैतिकता और झूठी आन बान और शान से भरे बैग को कंधे पर लटका कर भारी कदमों से दो नंबर प्लेटफॉर्म के लिए सीढ़ियाँ चढ़ने लगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शुक्रवार को शुरू किया काम जरूर पूरा होता है

31 मार्च, गुरुवार, पांडिचेरी।

'मार्च के एंड के साथ ज़िंदगी का भी कुछ हिसाब किताब होता, तो नहीं जी गई ज़िंदगी का टैक्स चुकाना नहीं पड़ता...' उसने डायरी के पन्ने पर पहली लाइन लिखी।

फिर वो सोचने लगा कि वो लयबद्धता और भाव कहाँ गये जिसे आज डायरी में टाँकना चाहता था।

वो दिमाग पर जोर देता है लेकिन आगे के वाक्यों की शुरुआत नहीं होती। मन में जो उमड़ रहा है उन भावों को वो डायरी के पन्नों पर उतार नहीं पा रहा है। सोचता है कि काश ज़िंदगी और डायरी ब्लैकबोर्ड होते तो उस अनचाही जी गई ज़िंदगी के पन्नों पर समय का डस्टर फेर कर फिर से उसे जीने लायक बना देता।

आज उसने कई महीनों बाद मैसेज का रिप्लाई किया फिर फोन पर लम्बी बातें...

इतने बरसों बाद।

उसे लगा समय अभी भी यूनिवर्सिटी के उस पेड़ के नीचे ठहर सा गया है जहाँ वो पहली बार मिली थी।

उन दिनों वह पत्रकारिता की दीवानी थी और वह उसका दीवाना।

बेरोजगारी के दिन छँट नहीं रहे थे। इस उम्र में घरवालों से पैसे माँगते शरम आती वैसे भी इस रेगिस्तान में क्या उपजता था जिसके बलबूते पर 5 भाई बहिनों को पिताजी पढ़ाते, इधर प्यार परवान पर चढ़ रहा था।

'मेरे माता-पिता अब शादी के लिए देर नहीं करेंगे।'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पर सुनीता इस बेरोजगारी में शादी ?

'हम कल नेट का फॉर्म भरते हैं और जे.आर.एफ. पर ही फोकस करते हैं।'

अगर उसमें हो गया तो हर महीने अच्छा खासा पैसा मिल जायेगा। उसने ही सुझाया था।

कल ही क्यों ?

शुक्रवार को जो काम शुरू करते है वो जरूर पूरा होता है। उसने कॉफ़ी पीते हुए कहा था।

उस दिन उसकी आँख में उसके पलते सपने को देखा था।

वो फिर डायरी की तरफ देखता है।

पेड़ों से घिरे क्वाटर में झींगुरों की आवाजें आ रही हैं। उसे रात लम्बी लग रही है।

पूरे कमरे में चीजें बिखरी पड़ी हैं। टेबल पर उसकी दी हुई एस.एन. सर की किताब 'सितम्बर में रात' पड़ी है।

उसे लगता है रात सितम्बर की हो या मार्च की, हरेक में ज़िंदगी आत्म निवेदन करती हुई स्मृतियों को गहरा देती है।

वह एकबारगी कमरे को देखता है बाहर उसके पसंदीदा फूल अफ्रोडायटी लिली खिड़की में महक रहे थे। कपड़ों का ढेर सोफे पर। फ्रीज़ पर मिट्टी के कटोरे में खट्टा दही पड़ा है।

वो इनबॉक्स में फिर से उसके मैसेज पढ़ने लगा जिसमें उस बेतरतीब वक्त को ढूँढ़ने लगा जिसे दुहाई देकर इतने बरस जिया गया, वह उन सारे स्पर्शों को महसूस करना चाहता था जो समय के थपेड़ों से खुरदुरे हो कर रह गये थे।

दिन में बात के दौरान कहा था 'मैं अगर जयपुर आऊँ तो मिलना चाहोगी ?'

वो देर तक कुछ नहीं बोली।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं कल आ रहा हूँ कल शनिवार है फिर रविवार है एक दिन की छुट्टी लेकर आ जाता हूँ।

'ठीक है' उसने ज्यादा उत्साह नहीं दिखाया।

कहाँ मिलोगी ?

अभी तो पता नहीं, आप आ जाओ फिर देखते है।

उसने इस लाइन को कई बार पढ़ा मगर उसमें कहीं पर ख़ुशी के चिह्न नहीं दिखे।

पर कई बार मन ना में भी हाँ खोज लेता है। वो बेचैन हो उठा, कब सूरज उगेगा वो बैंगलोर से दोपहर की फ्लाइट पकड़ उसे मिलने जायेगा।

काश केन्द्र शासित प्रदेश उसकी राजधानी में तब्दील हो जाये।

उसने मोबाइल चार्ज में लगा कर फ्रिज के ऊपर रखे दही को लेकर खाना खाने बैठ गया।

मगर दिमाग में वही बातें आज उमड़ रही थी।

उसने दो बार नेट दिया था मगर क्लियर नहीं हो पा रहा था मगर उस साल उसके प्यार और हौसलें ने एक विश्वास दिलाया कि इस बार हो जायेगा।

वो मन लगा कर पढ़ रहा था। वो कभी-कभी मिलने आती, वो भी घड़ी भर बैठ कर चल देती। जब भी आती तो टिफिन में खाने के साथ प्रसाद के रूप में कुछ न कुछ लाती थी। वो पूछता तो यह कर टाल देती कि अच्छे वर के लिए शिवजी के मन्दिर जाती हूँ।

उस साल एग्जाम के बाद वह बार-बार एक ही बात पर जोर दे रही थी कि राजेश अब हमें शादी के बारे में जल्द निर्णय लेना होगा मेरे घर वाले बसंत पंचमी तक ही रुक सकते हैं।

उस दिन नेट का रिजल्ट आया दोनों को जे.आर.एफ. भी मिली थी।

उसने सबसे पहले उसी को फोन किया।

तुम वहीं रुको मैं आ रही हूँ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्कूटी के पीछे बिठा कर पहाड़ पर स्थित संतोषी माता के मन्दिर ले गई।

मैं हर शुक्रवार व्रत रख यहीं आती थी। मैंने मन्नत माँगी थी कि तुम्हारा सलेक्शन हो जाये तब तक शुक्रवार को खट्टी चीज नहीं खाऊँगी इसलिए उस शुक्रवार से हर सप्ताह यहीं आती थी।

'मुझे पता था तुम्हें बताऊँगी तो तुम इन चीजों को नहीं मानोगे पर आज मेरी मुराद पूरी हुई इसलिए तुम्हें साथ लाई हूँ।' वो स्कूटी को चलाते हुए बोले जा रही थी वो चुपचाप बैठा था।

उस दिन वो खुश था इसलिए आस्तिकता और नास्तिकता की बहस में उलझे बिना उसे अच्छा लग रहा था कि कोई किस तरह हमारी ख़ुशी के लिए यह सब कर सकता है।

एक पतझड़ी याद और उन दिनों की मासूम बेवकूफी को दोहराना कभी-कभी अपने आप को सुकून देता है।

उसने टैक्सी के काँच नीचे कर दिए। उसे 5 घंटे बाद एयरपोर्ट से फ्लाइट पकड़नी है।

बाहर से आती हवा उसके कानों से टकराकर लौटती है उसके साथ और आवाजें उसके भीतर शोर करने लगीं।

'तुम समझती क्यों नहीं सुनीता हमारी शादी नहीं हो सकती।' उसने लेक्चररशिप में सलेक्शन होने के कुछ दिनों बाद समझाते हुए कहा था।

बहुत कुछ ऐसा था जिसे नहीं समझाया जा सकता, कितनी ख्वाहिशें, समर्पण और त्याग यूँ ही भुला दिए जाते, जब आप दु:ख से खिसक कर सुख में प्रवेश करते हो तो पीछे रह जाती हैं आहटें और दस्तकें जो याद दिलाने की कोशिश करती है उन वादों की जिन्हें किये थे उस तपती जून की आंधी में कि पहली जुलाई में बोयेंगे खुशियों के बीज एक साथ। उस समय धूसर दु:ख चुप्पी साध लेता है जिसके पीछे के सुख की धनात्मक उम्मीद होती है कि बादल बरसेंगे और जीवन फिर हरियायेगा।

मगर उस वक्त खुद को भरमाने के अलावा पास और होता भी क्या है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसने कमरपेटी ढीली की। अब वो सफेद बादलों के ऊपर उड़ रहा है। उसके पास का यात्री सो रहा है वह खिड़की से बाहर देखता है। रुई के सफेद फाहे उसके पास से गुजर रहे हैं।

उसे लगने लगा सब कुछ ऊँचाई से नीचे की ओर धँसता जा रहा है इतनी ऊँचाई से नीचे देखना देह को थरथरा जाता है। हिम्मत नहीं होती इस जगह से उस सच्चाई से सामना करने का। वह ठंडी साँस ले आँखें मूंद लेता है। शुतुरमुर्ग की तरह आँखें मूंदना दुनिया को यथार्थ तरीके से जीने का उसे सही तरीका लगा।

पिताजी ने मोटी रकम देख बड़े अफसर की बेटी से रिश्ता तय कर लिया था। माँ को सुनीता के बारे में बताया तो बहाने बना कर एक दिन बेहोश होकर गिर गई कि उस लड़की से हम कैसे शादी कर ले ? वो गढ़वाली, हम खानदानी राजस्थानी।

पिताजी को करोड़ो की प्रोपर्टी जाते देख हार्ट अटैक आ गया।

हॉस्पिटल के बाहर बड़े भाई नफा नुकसान गिना रहे थे 'शहर की पॉश कॉलोनी में बना बनाया बंगला, गाड़ी और टीके में सवा दो करोड़ कैश दे रहा है। ताउम्र कुछ नहीं करना होगा इसलिए यह निरी भावुकता छोड़ और थोड़ा मेच्योर होकर निर्णय ले।'

उस दिन आखिरी बार उसकी और देखे बिना कहा था 'सुनीता, यह शादी नहीं हो सकती है।'

वो देर तक तर्क देती रही। बीच के रास्ते भी बताती रही मगर सर नीचे किये हुए न चाहते हुए भी सब कुछ अनसुना कर दिया।

इधर शादी के कुछ साल बाद अमीर बाप की लड़की इस छोटे से द्वीप पर मुझे छोड़ अपने पूर्व प्रेमी के साथ बस गई। बंगले में धूल जम गई। गाड़ी और पैसे कोर्ट के चक्कर में भरण-पोषण में लग गये।

जीवन में आप 90 डिग्री से 180 डिग्री घुमा कर इस तरह पटक दिए जाते हो कि आपके त्रिभुज की हर भुजा का मान अंततः शून्य ही आता है। तुम्हारे बनाये हुए सारे समीकरण बिगड़ चुके होते हैं और रिजल्ट ऐसा आता है कि आप चाह कर देखना नहीं चाहते।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस दुःख से उबरने के लिए उसने साहित्य का सहारा लिया। लिखने पढ़ने लगा। कुछ कहानी कविता पत्र-पत्रिकाओं में छपने लगी जिसमें छपे नंबर देख उसने बरसों बाद सम्पर्क किया था।

अक्सर हम बेवक्त किसी चीज की माँग कर बैठते हैं। उसने प्यार की माँग की।

'मेरी शादी हो चुकी है, बच्चे हैं, अब यह हो नहीं सकता।' वो समझाती रहती।

उसने स्टेंड क्लियर किया था। मगर वह गाहे बगाहे बात को फिर वहीं ले आता तो थक हार कर उसने उसको सारी जगह ब्लॉक कर दिया।

मगर दिनों, हफ्तों, महीनों, सालों...

जिसको तुम अपने उजाले दिनों की शक्ल में देखना चाहते हो उससे उम्मीद करते हो कि वो तुम्हारे लिए बचे हुए जीवन में अपना घर जला कर तुम्हारे सपने को पूरा करे।

इसलिए इतने दिनों बाद उसने बात की।

उसने क्रिस्टल पॉम में मिलने का मैसेज छोड़ टैक्सी पकड़ी। उसे लगा कि एम. आई. रोड पर इस वक्त ट्रैफिक मिलेगा उसने टैक्सी वाले को रामनिवास बाग़ से लेने का बोल कर घड़ी देखता है। टैक्सी का बिल देकर वो मॉल के बाहर बनी बेंच पर बैठ जाता है।

सामने कॉफी काउंटर पर एक अंग्रेज महिला कुछ खरीद रही है। उसके खुली पीठ देख उसे फिर से वो याद आ गई मगर उसके तिल था इसकी पीठ पर तो काले काले धब्बे है।

क्रिस्टल पॉम के गेट पर दो चार सुरक्षा कर्मी बतिया रहे हैं शायद इस बार बिहार जाने का प्लान कर रहे हैं। एक नई जगह से आया है, उसे रात को रहने की जगह चाहिये।

उसे देख एक सुरक्षाकर्मी सुरक्षा की फौरी जाँच करता है। वह हाथ खड़े कर अंदर चल देता है। उसके पास न बम है, न ही कुछ संदिग्ध चीज फिर भी उसे हर बार डर रहता है कि पीछे से बीप बजेगी और एक दिन पकड़ा जायेगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह बायें मुड़ कर यू.एस.पोलो में घुस जाता है। वहाँ एक लड़की दौड़ कर आती है अंग्रेजी में बोलती है 'क्या लेंगे सर ? यह देखो नया लिनेन का शर्ट।

उसे बोलता छोड़ कुछ देर वो यूँ ही घूमता रहा। फिर मैकडी की तरफ चल देता है।

भूख तेज़ हो जाती है मगर कुछ ऑर्डर नहीं देता। फिर दायें मुड़ कर कॉफी कैफे की तरफ यह देखने जाता है कि वो आएगी तो कौनसी सीट पर बैठना ठीक रहेगा। मगर वो आजकल बन्द हो गया।

देर तक सन्न खड़ा रहता है जीवन में कई चीजें इस तरह उस वक्त बन्द मिलती हैं जब आप वहाँ बड़ी उम्मीद लेकर जाते हैं।

वह निराश होकर ऊपर की तरफ जाता है तो मोंटी कार्लो में 40 प्रतिशत फ्लैट सेल का एक बड़ा सा पोस्टर देखता है जिसमें एक लड़की हीरो से चिपकी हुई है।

उसकी हमेशा इच्छा रही कि वो भी मेरे सट कर खड़ी हो।

अतीत की चाह को झटका कर एस्केलेटर से उतर कर बाहर आ जाता है।

एक गाँव का व्यक्ति बच्चे को बाहर लगा आधुनिक झूला बता रहा है। बच्चा जिद करता है मगर दाम ज्यादा होने के कारण वो शाम का वादा कर बाहर ठेले पर पानीपुरी खिला कर फुसलाता है। वह फिर से उस बेंच पर आ कर बैठ जाता है।

वहाँ कोई लड़की पहले से बैठी है, किसी के इंतजार में।

उसका मन होता है कि कह दे कि मैं भी इतंजार कर रहा हूँ किसी का।

मगर वो मोबाइल का कैमरा ऑन कर अपनी लिपस्टिक और खुले बाल ठीक करने में व्यस्त हैं।

घड़ी देखी अभी भी 15 मिनिट बाकी है।

क्या जीवन में जरूरी है कि हर बार नियत समय पर ही आया जाए, कभी कभी पहले आ जाए तो क्या फर्क पड़ता है। सोचते हुए वह रोड के दूसरी तरफ बने मॉल को देखने लगता है। उसे लगा दोनों मॉल एक दूजे को देखते हुए किसी के इंतजार में हैं। साफ आसमान में हवा चल रही है। फरवरी के प्यार का मौसम उतर चुका है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सड़कों पर पत्ते बिखरे हुए हैं मगर वातारवरण में प्यार की गंध अभी भी महसूस की जा सकती है।

पास बैठी लड़की को फोन आता है वो चहक कर आइनॉक्स की टिकट खिड़की की तरफ चली जाती है।

बेंच पर उसके साथ इंतजार पसर जाता है। एक ही व्यक्ति के बारे उसके देर तक आने के बारे में सोचना और उसके बारे में सोचते हुए उस दिशा में तकते रहना अजीब सी स्थिति होती है।

वह उसे लाल साड़ी में सोच रहा था, मगर उसको पार्किंग से हरी साड़ी में आते हुए देखता है।

उसकी धड़कन बढ़ती है रोंगटे खड़े होते हैं।

बात कैसे शुरू करूँ? वो करीब आ रही है। पेट में अजीब उथल-पुथल हो रही है।

नमस्ते नहीं, नहीं यह ठीक नहीं रहेगा। हाथ जोड़ूँ या मिलाऊँ पता नहीं वो क्या सोचेगी।

वो पास आती है मगर अभी तक वह तय नहीं कर पाया।

उसके पास बोलने को ठीक कोई शब्द नहीं है

'कैसे हो?' उसने ही बोला

ठीक हूँ। उसने छोटा सा जवाब देना ठीक समझा।

वे अंदर चलने लगे तो वह बोला 'कैफे तो बन्द हो गया।'

'तो अब' उसने साड़ी ठीक की।

'जे.के.के. चलें' उसने सुझाव दिया।

'ठीक है।' उसने थोड़ी देर सोचने के बाद कहा।

शायद जगह और उसके पास बचे समय का हिसाब लगा कर कहा होगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वो पार्किंग से गाड़ी निकालती है मगर वह बाहर खड़ा रहता है। कई बार हम जानबूझकर सामने वाले को स्पेस देते हैं ताकि वो माहौल में ढल जाये।

गाड़ी में बैठते ही गन्ध से भर जाता है।

समझ नहीं आता कि यह गन्ध गाड़ी में लगे परफ्यूम से या उसकी देह से या फिर उसके मन से ही आ रही है।

22 गोदाम क्रॉस होते ही एफ.एम. पर गाना बजने लगता है 'ये लम्हे यह पल चले गये तो हम फरियाद करेंगे।'

दोनों चुप हैं मगर काफी कुछ बोला जा रहा है, तोला जा रहा कि इतने सालों बाद क्या क्या बदला।

उसने अपना पर्स जे.के.के. की लम्बी सीट पर रख कर फोन पर मैसेज करने लगी। वे जिस टेबल पर बैठे थे उसमें चौथ का चांद बना हुआ था।

वो थोड़ी मोटी लग रही थी। उसे वह लड़की की बजाय महिला के रूप में बहुत सुंदर लग रही थी।

इंडियन कॉफ़ी हाउस भरा हुआ था। आसपास नाटक के लोग बैठे थे। सामने कुछ साहित्यकार अकादमी के पुरस्कारों पर चर्चा कर रहे थे कि इस बार जो पुरस्कार मिला है वास्तव में योग्य को मिला है। उसे कृष्णा सोबती याद आ गई।

हेड वेटर पानी की दो गिलास रखता है। वह उसे पूछे बिना मसाला डोसा ऑर्डर करता है वो अपने लिए कॉफ़ी-लात्ते का ऑर्डर करती है। आज भी पसंद वही है उसे उम्मीद जिन्दा नजर आती है।

अचानक वह अपने हाथ खींच लेता है। उसे डर लगने लगता है कि अब वो शिकायत करेगी, फिर उसकी हालात पर तंज करेगी।

'तुम फिर से शादी क्यों नहीं करते ?' उसने फोन पर्स में रखते हुए कहा।

अचानक इस तरह का सवाल, शायद वो सोच कर आई थी।

उसके पास कोई जवाब नहीं था। शायद है भी तो कोई अर्थ नहीं, इसलिए वो चुप बैठा रहता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'मुझसे जो उम्मीद रखते हो वो अब संभव नहीं है राजेश।'

'दोस्ती की चाह भी रखना गलत है क्या?' उसने थोड़ा सोफिस्टिकेटेड अंदाज में कहना चाहा।

'एक शादीशुदा औरत और पूर्व प्रेमी दोस्त कैसे हो सकते हैं?' मगर उसने अपना पक्ष स्पष्ट कर दिया।

उसके गले में डोसा फँस गया। पानी पीने लगा।

'जब वक्त था उस समय तुम्हें पैसे दिखे, आज प्यार और दोस्ती याद आ रही है।' वो इतने धीरे बोल रही है मगर जो बोला जा रहा था उससे ऐसा लग रहा था कि सब सुन रहे है।

'मैं सिर्फ तुमसे फोन पर बात और मैसेज करना चाहता हूँ बस।' उसने आखिरी दांव खेला।

'तुमने ही उस दिन कहा था आज के बाद हम कभी नहीं मिलेंगे, अब क्या बचा है।' उसके चेहरे पर थोड़ा तनाव उभर आया था।

उसने हँसने की कोशिश की मगर लाचारी साफ झलक रही थी।

'मैं तुम्हारी कोई जरूरत पूरी नहीं कर सकती। इस तरह मिलना, फोन पर प्यार मोहब्बत को बातें करना, मुझ से नहीं होगा। भगवान के लिए मेरी बची ज़िन्दगी ख़ुशी में जीने दो।' उसने कॉफ़ी के अंतिम घूँट के साथ अपना निर्णय सुना दिया।

वो इधर उधर देखने लगा। उसे लगा सब उसकी तरफ देख रहे हैं।

इस स्थिति से अपने को बचाने के लिए उसने मोबाइल निकाल लिया।

उसके हाथ पर हाथ रखते हुए बोली 'उम्मीद है राजेश मेरी बात को समझ गये होंगे कि एक शादीशुदा औरत अपने पूर्व प्रेमी के प्यार में पड़ती है तो कितना उजाड़ करती है यह तुम अच्छी तरह जानते हो। इसलिए मुझे माफ़ करना।'

वो धीरे से उठ चल दी, उसका हाथ वहीं ठहर गया। इतना ठंडा स्पर्श उसने कभी महसूस नहीं किया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसके पास एक लम्बी यात्रा से थका दिन और ख़ारिज मन था। कई बार यात्राएँ अधूरी और त्रस्त होकर रह जाती हैं...मंजिलें खो जाती हैं, रास्ते भी छूट जाते हैं और दूर तक फैली धुंध मानो उस यात्री को बैग सहित निगल जाना चाहती हो।

वो एक और गिलास पानी पी गले को तर करना चाहता है मगर बेअसर...

कहीं दूर भाग जाने का मन हो रहा था मगर कई बार बेउम्मीद किसी भी तरफ लौटना बेमानी सा लगता है।

उसने एक और कड़क कॉफ़ी का आर्डर देकर ऑनलाइन टिकिट बुक करने लगा तो देखा आज शुक्रवार था मगर अंजू का पक्ष लिए हुए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

साँझ की धूसरता

हॉस्पिटल की ड्रेस में इधर–उधर भागती नर्सें, हाथों में ऑपरेशन के औजार की ट्रे लेकर जाते वार्ड बॉय और मुँह बांधे डॉक्टर, जिनके पतली फ्रेम के चश्मे में झाँकतीं आँखें, बाहर बैठे गाँव के अब्दुल को समझ में नहीं आता कि उसकी पत्नी को आखिर हुआ क्या। बस भागती नर्सें दवाइयों की स्लिप पकड़ा देती हैं वो इतनी ही जल्दी से मेडिकल से दवाई लाकर पकड़ा देता है।

रमजान के पाक महीने में रोज़े के कारण थकावट और ऊपर से हॉस्पिटल की चौथी मंजिल। लिफ्ट है, मगर चलाना नहीं आता, पता नहीं कहीं अंदर फँस न जाये इस डर से सीढ़ियाँ चढ़ते –चढ़ते अब्दुल की साँसें फूल जाती। एक दवाई लाकर दे, तब तक वार्ड बॉय जाँच की दूसरी पर्ची पकड़ा देता। उसे समझ नहीं आता कैसी जाँच और कहाँ करवानी। एक तो अनपढ़ आदमी ऊपर से पैसों से हाथ तंग। दसियों जगह पूछता तब सही जगह तक पहुँच पाता। किसी से पूछता तो अंग्रेजी के राईट लेफ्ट में ऐसे समझाते कि उसके कुछ भी पल्ले नहीं पड़ता।

क्या शहर है यहाँ कोई भी घड़ी भर के लिए रुकने को तैयार नहीं, यहाँ हॉस्पिटल में भी भागकर कहाँ जा रहे हैं, वो बीच–बीच में सोचता और गाँव से तुलना कर बैठता। कभी–कभी मन को बहलाने नीचे चला जाता चाय की केंटीन में। हॉस्पिटल की चाय केंटीन अपने आप में एक संसार है, हर तरह के लोग। बीड़ी के धुएँ में गुम चौहटन का देराम हो या नई सड़क पर इलेक्ट्रॉनिक की दुकान पर बैठने वाला इब्राहिम हो या फिर खद्दर की बनियान की जेब से थिगड़ी के बने पर्स से तुड़े- मुड़े पैसे निकालते सांडेराव का कुटला राम हो या सामने वाले मार्ट से दादाजी को देखने आई पम्मी आंटी को पिलाने के लिए एक्वाफिना की बोतल और रियल ज्यूस खरीदता श्रेयांश हो। सभी का एक ही दुःख व शिकायत है मगर सभी का दुःख बयां करने का तरीका अपना अपना है, बस कोई सुनने वाला हो या फिर चुप्पी से उन्हें देखने वाली

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आँख हो। जो कभी भीग जाती है तो कभी गुस्से में लाल हो जाती है तो कभी अपने आँसुओं के खारे घूंट बिन बोले ही पी जाती है...

वो अक्सर अपनी पत्नी के पास ही बैठा रहता और वो हॉस्पिटल की छत और पंखे में ताकती रहती। वो भी वार्ड में भर्ती मरीजों को देखता रहता उनकी बातें सुनता और खुद की कयास लगाकर कोशिश करता कि किसको क्या बीमारी है कौन बड़ा बेटा है या बहिन है। जब भी किसी मरीज को रिलेटिव देखने आते हो गार्ड उनसे अड़ जाता कि डॉक्टर की विजिट है एक को ही जाने दूँगा थोड़ी देर बाद सब अंदर घुस जाते और गार्ड कुढ़ते हुए अगले लोगों से उलझ जाता। प्राइवेट हॉस्पिटल में सफाई अच्छी होती है उसे गाँव के मोहनजी ने बताया था। यहाँ पर दिन में दो बार सफाई होती थी जब पोछा लगता था उसे अजीब सी गंध आती थी उसने कभी इसे गाँव में महसूस नहीं किया, इसलिए वो अक्सर बाहर चला जाता था।

मगर बाहर भी चारों तरफ लोग भिनभिनाते रहते। बैठने के लिए लड़ते या फिर परेशान होते। दिन में थके मरीजों के साथ आये लोग यत्र-तत्र सोये मिलते या फिर सामूहिक खाना खाते हुए या फिर वेटिंग रूम में ऊँघते से बिना आवाज की टीवी देखते लोग। रिसेप्शन पर एक केरल की नर्स बैठी हुई थी जो कि अब मारवाड़ी बोलने का अजीब प्रयास करती और नये पुराने मरीजों को समझाते हुए झुंझला रही थी। बीच बीच में फोन की घंटियाँ बजती या फिर लोगों के मोबाइल में गीत बजने लगते। इन सबसे वह उकता गया था न उसे होटल की चाय भा रही थी न ही ढाबे का खाना। वो बार बार दोहरा रहा था अल्लाह दुश्मन को भी हॉस्पिटल नहीं दिखाये। उसे अपने गाँव की ढाणी याद आ गई जहाँ 200 बकरियाँ और ऊँट इन्तजार कर रहे थे। सब खुला खुला होता है वहाँ।

उसे जल्दी घर जाने की बेचैनी होने लगी आज हॉस्पिटल में तीसरा दिन है। सुबह डॉक्टर ने रिपोर्ट देख कर कहा कि फातमा के पेट मे अपेंडिक्स है, ऑपरेशन करवाना पड़ेगा।

'कितो खर्चो व्हेला डाक साब्ब' उसने ऑपरेशन का नाम सुनते ही खर्चा पूछा। 'अभी तो जाँचें अहमदाबाद भिजवानी है उसके बाद पता चलेगा कि कितना खर्चा आएगा' कहते हुए डॉक्टर ने अगले मरीज की रिपोर्ट देखने लग गया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फिर भी वो मोटा मोटा अंदाजा चाहता था। 'अभी आप 50 हजार जमा करवा दो, जाँचों के बाद ऑपरेशन करेंगे तब सब हिसाब करेंगे' डॉक्टर ने डॉक्टरी लहजे से धीरे से कहा।

'डाक साब्ब मेरी फातमा ठीक तो हो जायेगी ?' अब उसे बीमारी की चिंता होने लगी।

'इलाज के बाद सब ठीक हो जायेगा, अब आप बाहर जाओ।' डॉक्टर अपनी मेन्युप्लेटेड सॉफ्टनेस भूलते हुए बोला।

सुबह से ही घर में बेटे के मामले ने उलझा रखा है इधर ऊपर से इन मरीजों के अजीबो गरीब सवालों ने उलझा कर घनचक्कर बना दिया था। बड़े बेटे की प्रेमिका ने उस पर शादी करने के दबाव बना रखा था वरना सेक्सुअल हेरासमेन्ट और रेप के केस में अंदर करने के लिए धमकी दे रही थी। उसे किसी दलाल को 30 लाख देकर निपटाने का तय करने का विचार चल रहा था। इधर छोटा वाला लड़का तीसरी बार मेडिकल की एंट्रेंस टेस्ट में फेल हो गया तो इसलिए इस साल कजाकिस्तान भेजना है ताकि कम से कम डॉक्टर की डिग्री तो लाये जिससे यह जमा-जमाया हॉस्पिटल संभाल सके। मगर उसकी पहले साल की फ़ीस 15 लाख रुपये की व्यवस्था करना भारी पड़ रहा है। ऊपर से नोटबन्दी के कारण लोगों के पास पैसे नहीं होने के कारण ऑपरेशन कैंसिल करवा रहे हैं या डेट आगे करवा रहे हैं। उसे समझ नहीं आ रहा है कि पैसों की व्यवस्था कर परिवार पर आये संकट को कैसे उबारा जाये।

फातमा की रिपोर्ट देख उसके दिमाग में आइडिया आया। उसने हर आने वाले पाँचवें मरीज को ऑपरेशन सजेस्ट कर दिया। उसे उम्मीद थी कि इस तरह महीने भर में इस मंदी से उभर जाऊँगा। अब्दुल फातमा के पास गया तो वो पूछने लगी कि 'क्या कहा डॉक्टर ने ?'

'डॉक्टर ने 'अफेन्ड़ी' बताई है और ऑपरेशन करना पड़ेगा।' उसे अपेंडिक्स का सही उच्चारण भी पता नहीं था गाँव में सभी यही बोलते थे।

'इतने पैसे कहाँ से लायेंगे ?' ऑपरेशन के नाम से फातमा बीमारी भूल पैसों का हिसाब किताब लगाने लगी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अभी तो 50 हजार बकरे बेचने पर आये थे वो नोट तो बैंक में ज़मा करवा दिए और इलाज के लिए 10 हजार तो मौलवी जी से उधार लाये थे। उसने गाँव में सभी स्त्रोत से पता करवाया मगर इन दिनों किसी के पास पैसा नहीं है। उसने अपनी रेवड़ बेचने की सोची मगर कोई खरीददार ही नहीं जो रोकड़ दे सके। उसने बेटे रहीम को सेठजी के पास दो चार गहने देकर भेजा मगर वहाँ से भी 30 हजार की ही व्यवस्था हो पायी। उसने सब नोटों को गिनकर रिसेप्शन पर जमा करा दिए।

और केरल की नर्स से पूछा 'मेरी फातमा ठीक तो हो जाएगी ?'

'अरे ! हम कोशिश कर रहे हैं, गॉड पर विश्वास रखो।'

'बेनजी बेमारी की है ?' उसने डरते पूछा।

'अरे तुम्हारी तरह कई मरीज आते हैं किस-किस को जवाब दूँ जाओ डॉक्टर से पूछो।' हेड नर्स के गुस्सैल स्वभाव से सभी परिचित थे इसलिए सभी ने अब्दुल को वार्ड में जाने को कहा।

आज 5वाँ दिन है। फातमा नॉर्मल है। जब से भर्ती हुई उसके दूसरे दिन से उसका दुखता पेट ठीक हो गया मगर पेट के साइड में अभी भी हल्का हल्का दर्द हो रहा था। वो दवाइयाँ ले रही थी, खाना भी सही खा रही थी मगर उसे घर जाने की जल्दी थी वो बेड पर पड़े पड़े उकता गई थी। सुबह शाम कम्पाउंडर आते बीपी चेक करते और चले जाते।

'छुट्टी कदे देसी' फातमा ने आज रट लगा रखी थी उसे अपने बेटे रहीम और बेटी मरियम की याद आ रही थी। पीछे अकेले है कैसे रहते होंगे हालांकि चाचा लुकमान सब संभाल लेगा फिर भी माँ का जी अपने टाबरों में अटका हुआ पड़ा था। फातमा के सवालों से तंग होकर वो डॉक्टर के चेम्बर की ओर चल दिया।

डॉक्टर साहब चेम्बर में नहीं थे वो घर पर ही उलझे हुए थे दलाल कह रहा था कि वो 30 लाख में राजी नहीं हो रही है कोई दूसरा रास्ता देखना पड़ेगा। दलाल को पता था डॉक्टर बड़ा मुर्गा है और इस मौके पर जितने भी वसूल किये जायें वो पक्की मजदूरी है।

'यार कोई भी हो, कुछ भी हो बताओ तो सही' डॉक्टर कुछ रास्ता चाहता था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'यह लड़की फलां ठेकेदार की बेटी है।' दलाल ने बताया

'हाँ तो ? ? यह तो मुझे भी पता है' डॉक्टर बात बात पर झुंझला रहा था।

'अरे यह ठेकेदार उस नेता का खास आदमी है।' दलाल ने अपना पत्ता खोलते हुए कहा।

डॉक्टर साहब की बाँछें खिल गई सीधे गणेश मन्दिर जाकर प्रसाद चढ़ा कर फिर हॉस्पिटल गये। दोपहर को वही नेताजी उस हॉस्पिटल में भर्ती बहिन को देखने आये थे। डॉक्टर ने बड़ी आवभगत की। नेताजी को बहिन के किडनी ट्रान्सप्लांट के साथ खर्चा भी बता दिया। नेताजी का भी नोटबंदी में हाथ तंग था और अगले महीने नगरपालिका का चुनाव भी लड़ना है तो इतने रुपये की व्यवस्था करना मुश्किल लग रहा था। तभी मौका भाँपते ही डॉक्टर साहब ने अपनी तकलीफ बता दी। नेताजी के चेहरे पर कुटिल मुस्कुराहट फ़ैल गई।

जीभ होंठों पर फेरते हुए बोले 'डॉक्टर साहब वो तो मेरी बेटी ही समझो, मैं उसे समझा बुझा दूँगा आप चिंता न करो।'

नेताजी को पता था ठेकेदार को अगले चुनाव के बाद ठेकों के लिए उसके पास ही आना है, इसलिए भरोसा था कि उसकी बात नहीं टालेगा। डॉक्टर को कुछ राहत मिली। मन ही मन बालाजी की सवामणी बोल दी।

नेताजी धीरे से बोले 'मगर हमें क्या मिलेगा डॉक्टर साहब ?'

अब उदास होने की बारी डॉक्टर साहब की थी।

'आप मेरी बहन को ठीक कर दो और मैं आपके बेटे को।' नेताजी ने जाते जाते समाधान भी खुद ही बता गये। डॉक्टर साहब अपने चेम्बर में इस उलझन में बैठे ही थे कि अब्दुल ने अंदर आकर पूछा डॉक्टर साहब ऑपरेशन जल्द करो ईद को घर भी जाना है। डॉक्टर ने रिसेप्शनिस्ट को बुला कर पूछा कि इसने कितने रुपये जमा करवाए।

'50 हजार और करवाओ फिर ऑपरेशन होगा।' कह कर डॉक्टर साहब फिर दलाल को फोन करने लगे। अब्दुल भारी कदमों से बाहर आकर हॉस्पिटल में बने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मन्दिर के आगे खड़ा हो गया। उसके संस्कार तो कह रहे थे कि यह बुत इसका खुदा नहीं है पर परिस्थितियाँ यह कह रही थी ख़ुदा भी इस तरह का बुत ही होगा तभी तो उस जैसे लोगों की अर्जियां कबूल नहीं होती।

'यार इस नेता ने तो मुझे दूसरी उलझन में फँसा दिया, चलो ऑपरेशन का खर्चा नहीं लूँ, मगर इसकी बहन के लिए किडनी की व्यवस्था कहाँ से करवाऊँ ?' चेम्बर के अंदर डॉक्टर सर पर बचे-खुचे बाल नोंचते हुए दलाल से बातें कर रहा था।

'अरे! डॉक्टर साहब आपके हॉस्पिटल में तो कई पेट के मरीज आते होंगे किसी का भी ऑपरेशन कर दो कौन देखता है कि क्या निकाला और क्या लगाया, वैसे भी एक किडनी से काम चल जाता है, थोड़ी बहुत कमजोरी आये तो कह देना कुछ दिन तक ऑपरेशन की वजह से रहेगी। डॉक्टर साहब को समाधान मिल गया।

उसने नर्स को कहा कि फातमा के ऑपरेशन की तैयारी करो। अब्दुल को भी समझ नहीं आया अचानक यह क्या और कैसे हो रहा है।

अनायास ही मन्दिर के बुत के आगे सजदे में हाथ उठने लगे उठे मगर उसके संस्कार आड़े आ गये और खुश खबरी देने फातमा के पास जाने के लिए सीढ़ियाँ चढ़ने लगा। उसके दूसरे दिन फातमा को ऑपरेशन थियेटर में ले जाया गया। जूनियर डॉ. ने ऐनस्थिसिया के बाद पेशेंट की रिपोर्ट पढ़ते हुए पूछा कि 'इस मरीज के तो अपेंडिक्स है और किडनी को ऑपरेट क्यों कर रहे हैं ?'

बड़े डॉक्टर साहब ने उसे तुरंत बाहर भेज दिया और कुछ ही घंटों में किडनी ट्रांसप्लांट हो गई। फातमा को देर रात होश आया तो उसे दर्द हो रहा था। शुरू के दिनों में केवल पानी ही पिलाया फिर लिक्विड फिर, दलिया और फ्रूट्स मगर कुछ भी खाए तो उल्टियाँ ही उल्टियाँ।

अब्दुल को नर्स और वार्ड बॉय समझा रहे थे कि यह तो ताजा टाँकों की वजह से हो रहा है।

'और छुट्टी कब मिलेगी ?' हर बार अंतिम सवाल यही होता।

'अरे जल्द डिस्चार्ज कर देंगे।' वही रटा हुआ जवाब था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुछ दिनों बाद ...

शाम को छुट्टी मिलने पर बस में हिचकोलों से ताजा टाँके टूटे नहीं और फातमा को नुकसान नहीं हो इसलिए उसने किराये की गाड़ी में फातमा को सुला रहा था तो पास खड़ी एम्बुलेंस में नेताजी की बहिन का शव रखा जा रहा था किडनी ट्रांसप्लांट सक्सेस नहीं रहा और चल बसी।

उधर डॉक्टर साहब चेम्बर से भागते हुए गाड़ी में बैठ थाने की और भागे जा रहे थे। ठेकेदार की लड़की ने सच्चा प्यार किया था, रुपयों पर नहीं बिकी, बेवफाई से तिलमिला कर मुकदमा कर दिया इसलिए डॉक्टर साहब के बड़े लड़के को पुलिस गिरफ्तार कर ले गई।

दलाल फोन नहीं उठा रहा था क्योंकि अब कुछ भी नहीं मिलेगा, सिवाय गालियों के तो वो फोन बंद करके शहर से बाहर चला गया।

साँझ की धूसर फ़ैल रही थी हॉस्पिटल के बाहर अजीब खट्टा सा माहौल था मगर इन सब से अनजान मरीज और उनके रिश्तेदार, चाय वाला, पार्किंग वाला और और गार्ड अभी भी किसी न किसी से उलझे हुए थे।

शाम की सफाई वाली बाई जी लगाये हुए पोछे पर चलने पर झिड़क रही थी और जूनियर डॉक्टर प्रोफेशन एथिक्स के नाम पर अपना इस्तीफा लिख रहा था।

साँझ की धूसरता फैल चुकी थी, रोड लाइट लग चुकी थी, शाम के पोछे की गंध, मन्दिर के धूपबत्ती की खुशबू और पड़ोस में मस्जिद से उठती अजान की आवाज के बीच एम्बुलेंस चल पड़ी, ठीक होने का विश्वास लिए जल्द घर पहुँचने की धूसर उम्मीद लिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तयशुदा दूरियों के साथ जीना

सड़क पर ट्रैफिक दबाव बढ़ गया था। साँझ होते ही कॉलोनी में जीवन भर जाता था। सुबह से खाली हुए महानगर के इस पॉश कॉलोनी में साँझ के साथ जीवन उतरता है। फ्लैट्स में लाइटें जल चुकी थीं। मैं और राजीव बालकनी में बिना अधिक बात किये हुए देर तक बाहर की हलचल देखते रहे। राजीव मेरा कॉलेज समय का अच्छा दोस्त रहा है मगर नौकरी की वजह से वह बैंगलोर शिफ्ट हो गया। मैं जयपुर में ही पत्रकार बन रह गया। बालकनी में गमलों में फूल लगे थे कुछ बेल मगर सब तरतीब से रखे हुए। छोटी सी मेज पर चाय के कप रखे हुए थे। मगर मौसम में घुटन थी। शायद हमारे पास भी। मैं उसे बार बार देखता मगर वह कहीं और देखता हुआ खोया हुआ था। इस चकाचौंध में वह क्या खोज रहा है समझ नहीं आया।

राजीव सदैव अन्तर्मुखी रहा कॉलेज में भी शायद किसी ने उसे बोलते हुए देखा हो मगर उसका साथ ही काफी कहता था इसलिए बिना बोले हुए हम काफी सालों तक साथ रहे। वो इतना उदासीन रहता कि हम पूरी दारू की बोतल और सिगरेट का पैकेट खाली हो जाता तब तक वह बमुश्किल आठ दस बातें ही बता पाता। वह सिर्फ सुनता रहता। वह पहला व्यक्ति था जिसने मेरे सामने कुछ भी खुलकर बात की हो मैंने खूब कोशिश की तह से उसे खोलने की।

लेकिन ज़िंदगी में कुछ लोग होते है जो अपने स्पेस में किसी को घुसने नहीं देते हैं। इसलिए हमारे बीच एक मौन करार हो गया, कुछ लकीरें बन गईं। हम मिलते कभी चाय तो कभी दारू पार्टी कभी खाने पर मगर तयशुदा दूरियों के साथ।

अचानक कॉल बेल बजी। शायद रिद्धिमा ऑफिस से लौटी है। वह चेंज कर हमारे पास आयी। पसरे हुए मौन को देख कर बोली 'इतने बरस से कोई घर में आया है कुछ तो बात कर लो।'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बालकनी में तीखापन आ गया। रिद्धिमा कुर्सी खींच कर पसर गई। मेरी तरह वो भी वाचाल थी। वह तीखे नैन नक्श वाली खूबसूरत महिला थी। इस मेट्रो शहर के जीवन को भरपूर जी रही थी।

मैंने राजीव की तरफ देखा वह फिर से सिगरेट सुलगाने की तैयारी में था। । शायद उसे रिद्धिमा की बातों से कोई फर्क नहीं पड़ रहा था।

वह सरक कर दीवार से सटकर आँखें बंद कर सिगरेट पीता रहा। मुझे हमेशा लगता रहा उसके भीतर कुछ जल रहा जिसका धुआँ सिगरेट के साथ बाहर आना चाहता था।

आज बाहर चलें क्या ? रिद्धिमा ने पसरी चुप्पी तोड़ी।

'हाँ' उसने सिगरेट को बिना बुझाये ऐश ट्रे में रख दिया और मैं उसकी सलवटों की तह और अदृश्य गढ़ों को जानना चाहता था कि आखिर क्या वजह है।

फ़्लैट की लिफ्ट से नीचे उतरकर पार्किंग में गाड़ी निकालकर रिद्धिमा पोर्च में ले आई।

कार के डेश बोर्ड पर रखे इत्र से पूरी गाड़ी में खुशबू महक रही थी।

हल्की आवाज में एफ. एम. पर सदाबहार गाना बज रहा था।

'हम बेवफा हरगिज न थे।'

बैंगलोर में भीड़ भरे फ्लाई ओवर को पार करती हुई रिद्धिमा मुझे शहर के बारे में बता रही थी। राजीव बीच-बीच में उसकी तरफ देख रहा था। हमने ड्रिंक्स ली चुपचाप पीने लगे यह एक पब था रात को 11 बजे शुरू होता है सुबह 4 बजे तक चलता है। यहाँ मल्टीनेशनल कम्पनी के लोग वीकेंड को भारी शोर और कानफोड़ू म्यूजिक और तेज लाइटों के बीच जमकर थकान उतारने आते हैं।

हम देर रात घर लौटे। मैं सोफे पर ही सो गया मगर थोड़ी देर बाद नींद उचट गई। मैं सामने अलमारी में रखी किताबों को उलटने लगा। ओरहान पामुक की 'स्नो' उसे कॉलेज के दिनों से प्रिय किताब थी। मुझे किताबों के नीचे उसकी डायरी मिली। मैंने न चाहते हुए भी उसे खोल दिया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'जीवन में पीड़ा शाश्वत है मगर उसे भोगने का स्तर व्यक्तिनिष्ठ है। किसी दु:ख में कोई कितना पीड़ित होता है या फिर उस दु:ख को नियति समझ अपने भीतर जज्ब कर लेता है। सफलता का मतलब हर बार सार्थक जीवन नहीं होता है और खुद की आत्मा गिरवी रख सफलता और सुकून नहीं पाया जा सकता।'

सुबह के 10 बज रहे थे मगर अभी तक कोई उठा नहीं। मुझे चाय की तलब हो रही थी। फिर सोचा इतने बड़े अपार्टमेन्ट के रूफ टॉप गार्डन में घूम लिया जाये। मेरे दिमाग में उसकी डायरी के अंश घूम रहे थे।

कुछ देर घूमने के बाद वापिस आया तो राजीव अख़बार पढ़ रहा था रिद्धिमा रसोई में थी।

गुड मॉर्निंग उसने मुझे देखते ही बोला।

''यार आपके बड़े शहर में अख़बार भी कितने भारी आते है, 40 पेज एक अख़बार में।''

यहाँ हर बार सप्लीमेंट्री के रूप में कुछ न कुछ आता रहता है।

आज रविवार था तो मैं सभी अख़बारों में साहित्यिक पन्नों को पलटने लगा।

अरे यहाँ तो थियेटर के भी ऐड आते हैं और सेक्स प्रॉब्लम पर डॉक्टर से सवाल जवाब भी। मैं धीरे से राजीव की तरफ देख मुस्कराया।

हम कॉलेज दिनों में दीवारों, वॉशरूम और ट्रेन में चस्पा सेक्स विज्ञापन देख सोचते थे की किस आदमी के दिमाग में यह पहली बार आया होगा कि इन विज्ञापनों के लिए यह जगह परफेक्ट है।

हमारे पत्रकारिता में किसी न्यूज़ स्लॉट के साथ विज्ञापन के प्राइम टाइम का महत्त्व रहता था मगर यहाँ यह प्राइम जगह थी जो प्राइम टाइम पर आये व्यक्ति विज्ञापन दिखाकर बचपन की नादानियों की याद दिलाते थे।

राजीव केवल इस तरह की बातें को लेकर मेरे साथ हँसता।

वह कॉलेज में हल्की दाढ़ी रखता था तथा मोटी फ्रेम का चश्मा लगाता था।

कम बोलना और कम मिलना उसकी विशेषता थी, इसलिए हम लोग अक्सर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आंशका जाहिर करते थे कि कम बोलने और मिलने वाला पत्रकारिता में कैसे फिट होगा।

हमारी आशंकाएँ निर्मूल साबित हुई आज वह इस महानगर एक बड़ी कम्पनी में पी.आर.ओ. है जबकि ज्यादा बोलने वाले हम स्थानीय अख़बार के ख़बरनवीस।

राजीव किस दुःख को भोग रहा है कौनसी सफलता की बात करना चाहता है जिसमें आत्मा बेचनी पड़ रही हो। मेरे दिमाग में पूरे दिन उसकी डायरी और उसका दुःख घूमता रहा मैंने अपनी तरह से अंदाज भी लगाये। मैंने बातचीत के दौरान कई बार उसे टटोला मगर ज्यादा सफलता नहीं मिली।

शाम को रिद्धिमा तैयार होकर ऑफिस की किसी पार्टी में चली गई। हमने घर पर ही दो छोटे-छोटे पेग बना कर पार्टी शुरू कर दी। मगर राजीव ज्यादातर अपने मोबाइल में खोया रहा।

मैंने जैसे ही तीसरा पेग बनाया तो मुस्कराते हुए उसने कहा "तुम भूल गये मैं ढाई पेग ही लेता हूँ।"

मैं हँसा वो भी हँसा मगर हँसी के बीच कुछ खालीपन दिखा जहाँ सब कुछ होते हुए भी कुछ रीतता हुआ दिख रहा था। फिर चुपके से उसके भीतर कुछ जमने लगता है वो थका हुआ सा दिख रहा था। हमने इधर-उधर की बातें की मगर उसने अंदर से साँकल लगा दी तो मुझे फिर से निराशा हासिल हुई।

चलो खाना गर्म करते हैं वह टीवी के चैनल बदलने का क्रम छोड़ कर अचानक उठकर रसोई की तरफ जाने लगा।

रिद्धिमा को आने दो, साथ ही खाते हैं मैंने अंतिम हथियार चलाया।

"वो खाकर आएगी पार्टी में गई है दोस्त के यहाँ।"

हमने इतना चुपचाप खाना खाया कि उसने मुझे एक बार भी यह नहीं कहा कि और कुछ लोगे।

वो अपने कमरे में चला गया। मैं पढ़ने का बहाना बनाकर अलमारी में डायरी खोजने लगा मगर वहाँ से डायरी गायब थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं 'मेकर्स ऑफ मॉडर्न इंडिया' पढ़ता रहा।

गांधी जी आयुर्वेद और एलोपैथी दवाइयों पर प्रयोग करते थे मगर कस्तूर बा जब मर रही थी उन्होंने पेनेसिया नहीं देने दी। मुझे यह लाइन पढ़कर हँसी आई कि हम हर बात की बाल की खाल किस तरह निकालते हैं।

रात को एक बजे किताब रख कर सोने लगा तब दरवाजा खुला। रिद्धिमा गेट पर किसी को गुड नाइट कह रही थी ।

आप अभी तक सोये नहीं उसने संकोच के साथ पूछा।

नहीं, मैं किताब पढ़ने लग गया।

लड़खड़ाती हुई आकर वो मेरे पास बैठ गई।ज्यादा पी रखी थी शायद।

राजीव सो गया। उसने पूछा।

हाँ वो तो जल्दी सो गया मैंने जवाब दिया

ज़िंदगी में सोने के सिवाय उसके पास और है ही क्या। यह उम्र है सफल होने की, ज़िंदगी में अपना मुकाम पाने की, रिश्ते बनाने की, जीवन को येनकेन शिखर तक पहुँचाने की मगर साहब संतोषी जीव हैं न पार्टी में जाते हैं न किसी से ढंग से मिलते हैं। वो बोले जा रही थी।

मैं और रात चुपचाप से उसे सुन रहे थे, फ्लेट में नीरव शांति थी। जब वो बोल रही थी तो एक एक शब्द टूटता सा सुनाई दे रहा था।

इसका मतलब आपको उससे शिकायत है ? मैंने उसे कुरेदा।

शिकायत तो उसे है मुझसे। मैं आज जो भी हूँ अपने दम पर हूँ। उसे तो पार्टी में जाना शराब पीकर देर रात घर आना बिलकुल पसंद नहीं है अब आप ही बताओ पार्टी में नहीं जायेंगे तो लाइजन कैसे मेंटेन होंगे ?

वो क्या चाहता है ? मैंने उसके सवाल का जवाब न देकर सीधे सवाल ही पूछ लिया।

वो तो बच्चे चाहता है दाल रोटी खाकर किताबों से चिपके रहना चाहता है मगर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं समय के साथ-साथ अपडेट रहना चाहती हूँ अपनी शर्तो से जी भर जीना चाहती हूँ मुझे यह बच्चे पैदा कर दाल रोटी वाली संतुष्टि वाली फिलॉसफी पसंद नहीं है।

तो आपने क्या तय किया ?

तय तो उसने किया उस दिन

किस दिन ? मुझे लगा मैं करीब हूँ।

मैंने बॉस को थोड़ा रेस्पोंस देकर प्रमोशन पाया तब से।

यू नो यह इण्डिया की सिलिकॉन वेली है यहाँ एक प्रमोशन की कितनी वैल्यू है थोड़ा सा एडवांटेज लेकर बॉस ने किया तो इसमें क्या गलत।

अच्छा तुम ही बताओ यार करियर में कहाँ के संस्कार और नैतिकता के चोंचले।

वैसे भी मैं हाइली मॉडर्न हूँ जो छूने से अपवित्र वाली दकियानूस बातों में बिलीव नहीं करती।

यह देह मेरी और देह पर अधिकार मेरा। उसने गिलास में पानी उड़ेलने की कोशिश में सारा पानी टेबल-पोश पर फैला दिया।

वो उठ कर अंदर चली गई।

मेरे ज़ेहन में कभी उसकी बातें तो कभी राजीव की डायरी के पन्ने फड़फड़ाते रहे। उस रात हजारों ऊँची अट्टालिकाओं को देखते हुए मुझे कभी बैंगलोर का ट्रेफिक जाम तो कभी जैसलमेर का रेगिस्तान कभी शिमला के सर्दी में ऊँघते पहाड़ तो कभी चेन्नई के बीच याद आते रहे।

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि सामूहिकता में कितना व्यक्तिगत बचता है और व्यक्तिगत में कितना सामूहिक हो पाता है या फिर ताउम्र इन दोनों को साथ लिए तयशुदा दूरियों के साथ सफल और सार्थक जीवन जिया भी जा सकता है क्या ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बेजुबां दर्द

'मामीसा, मामीसा! मामोसा आ गये।'

बाहर मोटरसाईकिल की आवाज़ एवं अबोध बालिका के स्वर सुनकर वह तंद्रा से जागी। उसने रसोई की बारी से झाँका तो पतिदेव की गाड़ी दिखाई दी। शाम ढल चुकी थी। रेगिस्तान की शाम तपते दिन के बाद थोड़ी राहत भरी महसूस होती है मगर हल्की सी लू को अब भी महसूस किया जा सकता है। रात अपना कैनवास धीरे-धीरे फैलाती है क्योंकि आधी रात ढलने के बाद ही तपता रेगिस्तान ठंडा होने लगता है। सूर्यदेव सुबह उगते ही फिर उसी जोश के साथ तपते हैं तो इस माटी के लोग भी उसी जोश से अपना जीवन संघर्ष शुरू करते हैं बिना शिकायतों के।

सुबह से साँझ तक गृहस्थी का सारा काम और साथ ही दिनभर किसी के इंतजार को निहारती पलकें थक सी गई थीं। मगर उम्मीद के काजल से भरी आँखें उसे थकने से मना कर रही थीं। क्योंकि इस रेगिस्तान में उम्मीद और आँख का पानी कभी खत्म नहीं होता। चाहे कितने भी छप्पनिया अकाल पड़े हों या घड़ों में पानी को जमाती ठण्ड हो। यहाँ जीवन कभी भी, किसी भी हालात में रुकता नहीं और इन सभी अभावों में भी पनपती रहती है गहरी संवेदनायें।

पति इस बार जिला परिषद सदस्य के लिए टिकट की दावेदारी कर रहे हैं इसलिए भागदौड़ के कारण ज्यादातर समय शहर में ही रहते हैं वैसे भी बाकी दिनों में भी वो गाँव देर से ही लौटते हैं।

ढाणी में कुल जमा चार प्राणी।

कहने को तो शादी को पाँच बरस हो गए मगर लोक लाज के नाम पर दिन में शायद ही कभी बात की हो, कनखियों से जी भर देख भी नहीं पाती। रात में भी झोपें में घुप्प अंधेरे में स्पर्श और गंध ही प्यार के अनुभव को अनुमानित करवाती।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इसलिए दिनभर प्रियतम की मधुर छवि बुनना और उसमें ही खुद को व्यस्त रख घर के काम में खपा देती।

...विवाह के पाँच वर्ष बीत चुके। पर आशा की कोई किरण नहीं थी। सासुजी काफी बार भोपों के पास लेकर गयी। भोपे के कहे अनुसार दूसरे के घर का पानी पीना भी बंद कर दिया। गले में ताबीज और जैसे जैसे भोपे ने कहा वो सब किया। पर सारे प्रयास निर्रथक थे। बूढी माँ छाछ लेने आती। और पैर दबाने से पहले ही आशीषों की झड़ी लगा देती। पोते के लिए उन्होंने भी सभी देवी देवताओं के मन्नते माँगी थी। बाकी गाँव की औरतों का तो कहना ही क्या... । कोई कुछ कहती कोई कुछ। पर हर बार निराशा हाथ लगती। सासु जी पूरे दिन टोटकों में लगी रहतीं।

एक दिन ननद बाईसा ससुराल जा रही थीं तो काकीसा बोले- बींदणी आप कमरे में जाओ। उस वक्त तो मैं कमरे में चली गयी। पर देवरानी से पूछा कि तुझे तो अंदर नहीं भेजा मुझे क्यों भेजा। तो बताया गया आपके बच्चे नहीं है न इसलिए... ।

सुनकर गला भर आया... ।

और कितने ताने सहने होंगे।

एक दिन देवर ने कहा 'डॉक्टर को दिखाओ शहर जाकर'

सासु बोले भोपे ने घर की दहलीज लांघने को मना किया है। और अभी अभी तो दस हजार रुपये का खर्चा किया है इसलिए एक बार और इंतजार करते हैं।

वो बाहर चबूतरे पर पिताजी के पास बैठ गये। पिताजी उपेक्षित भाव से चिलम पीते रहे, जैसे उसके आने का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा, वे धुएँ के साथ खाँसते रहे। वो जितना तेज चिलम का सुट्टा भरते उतनी ही गति से फेफड़े मना करते, खाँसते हुए दम घुटने लगता, नसें उभर जाती, चिलम के ऊपर रखा खीरा कभी दहकता तो कभी मंद पड़ता। वो दो चार से ज्यादा सुट्टा नहीं भर पाते और बीच में ही बुझा देते। चिलम के धुएँ से हथेली में गहरा लाल निशान पड़ गया था यह रोज का काम था।

उनको खाँसी से उलझते छोड़ माँ उठकर बाहर बकरियों को ठंडी रोटियाँ देने चली गई। काफी देर तक उस रेगिस्तान की आहिस्ता-आहिस्ता ठंडी गहराती रात के साथ मौन पसरा रहा। दूर बाड़ों पर बकरियों और भेड़ों का शोर सुनाई दे रहा था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धोरों की गहरी रात जिसमें विचारों और भावों की उठापटक में वह कभी तो अपने स्त्री होने को कोसती कभी सोचती यह लोग औलाद के लिए पति का दूसरा विवाह करवा देंगे। मन में तरह तरह की हिलोरें उठ रही थी। कहीं डॉक्टर के पास चले भी गये तो मुझमें कोई कमी बता दी तो जो लोग कभी कभार बोलते हैं वो भी नहीं बोलेंगे। रात और भी अधिक भयावह होती जा रही थी। कुत्तों की रोने की आवाजों ने चुभन को और बढ़ा दिया। नींद तो कोसों दूर थी। मन में भावों का उद्वेलन अपने चरम पर था।

'गायों के लिए चारा खत्म हो गया है और मीठे पानी की टंकी भी डलवानी है।' पिताजी ने चिलम झाड़ते हुए चुप्पी तोड़ी।

'चारे के लिए 'धनजी' से बात हो गई है और 'खेतिया' कल शहर से मीठे पानी की टंकी डाल देगा।' वह एक ही साँस में बोलकर चुप हो गया। अक्सर पिताजी के साथ उसका इतना ही संवाद होता था, कभी कभी तो बिलकुल भी नही।

पिताजी को लगता था उसे दो सौ भेड़ बकरियों को सम्भालना चाहिए और यह राजनीति अपने बस की बात नहीं। उन्हें गाँव की राजनीति कभी पसंद नहीं रही, उन्हें नेताओं और पंचों से अजीब कोफ़्त महसूस होती थी।

उनका मानना था कि यह लोग ही घरों की शांति भंग के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार हैं। इसलिए जब से बेटे ने नेताओं वाला कुरता सिलवाया तब से संवाद कम ही हो गया।

झोपड़े में खाना बनाते वक्त उसके कान बाहर लगे हुए थे, कभी कभी वो छेद से बाहर झाँक मंद-मंद मुस्कुराती और विचारों में खो जाती

'वह आज खुश थी आज ही उसके पीहर से मांगणियार आया था चचेरे भाई की शादी में आने का निमंत्रण देने। वो इंतजार कर रही थी कि कब रात होगी और वो उनसे कल पीहर जाने की अनुमति लेगी।'

जली हुई रोटी की गंध ने उसे सचेत किया रोटी पलटने को। हाँ, वो अनपढ़ थी, गाँव की थी मगर सपने बुनने और उसमे खोने का उसको भी हक था। उसे पता नहीं था

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कि प्यार क्या होता है भावनाएँ क्या होती हैं मगर वह महसूस तो कर रही थी कुछ अपने अंदर अच्छा सा खट्टा मीठा। घूँघट ने उसके चेहरे पे पर्दा जरूर डाल रखा था मगर वो हिये की हलचल तो महसूस कर ही सकती थी।

आज उसने पति की पसंदीदा सब्जी ग्वार फली और काचरी बनाई थी। सब्जी, बाजरे की रोटी और छाछ उसने रसोई से बाहर की तरफ सरका दिये। मगर वो किसी उधेड़बुन में व्यस्त था उसका ध्यान इस तरफ नहीं गया।

वह पुकार कर बता नहीं सकती थी क्योंकि बाहर चबुतरे पर सास-ससुर बैठे थे, इसलिए उसने पास रखे झेरने से बर्तन पर हल्के से चोट की, जिससे पति का ध्यान इस ओर हुआ तो उसने मुळकते हुए खाने की और इशारा किया। मुस्कुराहट का जवाब दिए बिना थाली उठा ली।

वो उदास हो गई।

वो सोचने लगी कि... उसका भी क्या जीवन है बस भेड़-बकरियाँ, चूल्हा और गार-गोबर और ये ढाणी, काश मैं कुरजां होती तो उड़ती-फिरती देश-परदेश। सास-ससुर से बोल नहीं सकती,

रात को सास-ससुर बाहर सो जाते वह अकेली ढाणी में बने झोपें में अपने सपनों की करवटें बदलती हुई सोने का प्रयास करती, मगर नींद भी भला किसे आये।

अलसुबह वह घट्‌टी पीसने के लिए जल्दी उठ जाती। अपने मन की बातें किसी को सुनाए उसे कितना समय बीत गया। न लड़ाई झगड़े के लिए ननद है, न ही छेड़ने और परेशान करने के लिए देवर। बस दिल बहलाने के लिए ननद की बेटी है वह भी अभी छोटी है।

हाँ, कभी कभी छाछ माँगने के लिए गाँव से माँगणियारी आ जाती तो उससे बातें करती। वो पूरे गाँव का रेडियो थी, उसे सब खबर देती। वो पास के शहर जाती तो उसके साथ सामान भी मँगवाती, होंठ पालिश, नख पालिश, इतर, आँखों के लिए सूरमा या काजल और काँच की चूड़ियां।

माँगणियारी पूरे गाँव का चलता फिरता शॉपिंग मॉल थी। गाँव की लगभग बींदणियां उससे अपने जरूरी और निजी सामान भी मँगवाती।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation-Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हाँ, मेडिकल स्टोर की भी भूमिका भी वो निभा देती। बूढी औरतों के लिए हरे पत्ते वाली गोली, चाहे सर दर्द हो या जुकाम, दाँ त दर्द हो या पेट दर्द सब में असरकारक मगर टेबलेट का नाम न तो माँगणियारी को पता, न किसी औरत को, मगर असर सबके करती।

एक तरह से होम डिलीवरी की व्यवस्था थी। सबके घर सामान पहुँच जाता और सामान के साथ-साथ पूरे गाँव के करंट अफेयर्स भी। सारे समाचारों के साथ घर में उसका प्रवेश होता। किसकी लड़की की सगाई कहाँ हो रही है, किसकी बींदणी कितना काम करती है। उनकी बींदणी तो सात बजे उठती है। उनके यहाँ आज बाईसा आने वाले हैं, कल उनके यहाँ जवांईसा आएंगे।

आज जब वो झाड़ू बनाने के लिए खींप काट रही थी तब जाळ पर बैठे उस पंछियों के जोड़े की अठखेलियाँ देखकर कितनी खुशी हुई थी। लेकिन दूसरी घड़ी ही किसी अकेले बैठे पंछी को देख वो गाने लगी।

'हरिये बागा री कोयलड़ी, अमरत थारा बेण

किण विध काली पड़ी, किण विध रात नैण'

गाते गाते अचानक वह सोचने लगी क्या मुझे ऐसी अठखेलियाँ करने, हँसने-बोलने का अधिकार नहीं। माँगणियारी कितनी बातें सुनाती हैं- मेरा पति ये करता है वो करता है। उसकी शादी को पाँच साल हो गये मगर उसके जीवन में कोई रस नहीं था।

जब उसकी शादी नहीं हुई थी तब सभी सहेलियाँ अपने पतियों के प्रेम और जीवन के बारे में बताती तो वह भी सोचती की मेरा पति भी इस प्रकार का ही होगा। बहुत सी उम्मीदें लेकर चली थी वो अपने घर से...।

पर अरमान किस तरह बह जाते हैं। पति जिनको फुर्सत ही नहीं न प्यार करने की न बात करने की। पति अपना राजनैतिक मैदान तैयार करने में व्यस्त और इधर उसके पास निराशा का मैदान ...वो हर बार सोचती इस बार रुठने की कोशिश करूंगी ताकि वो मनाने के लिए तो प्रेम दिखाएंगे।

अक्सर देर रात तक इस खाट पर अकेली सोती रहती, जब कभी भी पति शहर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

से आते तो वो कुछ देर के लिये खिल सी जाती क्योंकि थोड़ी देर ही सही मगर एक अजीब सी कसमकसाहट होती जो देह को गर्मी देती, अनुभव देती पूर्णत्व का...एक ज्वार सा उठता उस तरफ से और मसल देता उसके शरीर को फिर कुछ ही मिनटों में समन्दर के उतरते भाटे की तरह निर्जीव सी एक तरफ धकेल दी जाती ...वो उस चाँदनी रात में जलती रहती, अपने अरमानों के साथ। एक हूक और टीस सी उठती किसी को अपने में समा लेने की, मन की बातें करने की, सपनों को संजोने की, खिलखिलाने और रूठने की।

पर मन की बात अक्सर अधूरी ही रह जाती और पास में खर्राटे की आवाज उसके मन को बेध लेती, सपनों की दुनिया से निकाल हकीकत के धरातल पर पटक देती।

पर आज वो जरूर उनसे बात करेगी कि भाई की शादी के बाद हम भी इस बार शहर के डॉक्टर साब के पास चलेंगे।

'मुझे टिकट के बाबत अभी शहर जाना है' खाने के बाद हाथ धोते हुए उसने माँ से कहा और चल दिया।

झोपड़े से शून्य में ताकती दो आँखें और दूर से जाती हुई मोटर साइकिल की आवाज ने तवे पर रोटी के जलने के साथ ही हिये की दाह को बढ़ा दिया था। कलेजा भर आया। आज दर्द से भरी बदली आँखों से बह निकली वो घूँघट में ही सुबकने लगी।

रेगिस्तान में पसरे गाँव की एक ढाणी की पीड़ा घूँघट की बाड़ में दहक कर पिघल रही थी। इस रेगिस्तान की मखमली बालू रेत में उसके अरमान ज़ज्ब ही रहे जो कभी कभी जून की इन धूल भरी आँधियों में बिखर जाते हैं उसके सामने, मगर कैसे समेटे उस दर्द को जो हिये के उस कोने से उठता है और आँखों के पोर पर आने से पहले ही लू उसे सुखा देती है। मगर यह उसकी नियति है इस थार और इसके हालातों से संघर्ष करते हुए खुद को और सूखे रेगिस्तान में किसी फोग से अपने अरमानों की कोख को हरा रखना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अधूरा वजूद

उसने विवाह के ठीक पाँच साल बाद मुझसे कॉन्टेक्ट किया। उस दिन खूब हँस-हँस कर बातें की थीं उसने, मगर दिल के किसी कोने में दबा, वो दर्द न जाने कब हँसी के साथ उभरा था, जिसे मैंने पहले ही दिन पकड़ लिया था।

उसके बाद हमारी अक्सर लम्बी बातें होने लगी, वो खूब हँस कर बात करती थी, मगर वो दर्द छिपाये छिपता नहीं था।

सुनो ! क्या तुम ज़िंदगी के किसी कोने में अकेली हो और खुश नहीं हो ? मेरा हर बार ये सवाल होता और वो हँस के नकार देती। वो भीतर ही भीतर अजीब कशमकश के साथ घुट रही थी। उसे दर्द शेयर करने के लिए कोई चाहिए था, शायद इसीलिये उसने फिर से सम्पर्क किया। 'सुखमय वैवाहिक जीवन की विवाहिता एक गैर मर्द से क्यों बात करेगी।' मैं वजह जानने की कोशिश करता रहा।

'एक बात कहूँ' ये उसका तकिया कलाम था।

हाँ, बोलो 'मैं सर्द रात के सन्नाटे की गम्भीरता में समझ चुका था कि उसके भावों का बाँध टूटेगा, कुछ पिघलेगा, कुछ बहेगा जो कई दिनों से भीतर से उमड़ रहा है।

'मैं कभी माँ नहीं बन सकती' उसने इतने सहज, सरल व तेज गति से अपना राज़ खोल दिया, जिसके लिए मैं बिलकुल तैयार नहीं था। मेरे कयास कुछ और ही थे, आखिर पुरुष मन जो ठहरा।

क्या उनमें कोई कमी है ?

नहीं तो ?

आप में ? मैंने धड़कते दिल से पूछा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नहीं। न वो नपुंसक है, न मैं बांझ। अब मैं चुप था।

वो रुक के बोली 'हम आपस में...'

ओह! मैं अब समझ चुका था। मगर मेरे पास कोई जवाब, कोई रिएक्शन नहीं था इस वक्त। कभी-कभी हमारे सामने प्रकृति ऐसी परिस्थिति खड़ी कर देती है कि एक ही झटके में सारी बौद्धिक हेकड़ी उतर जाती है, निरुपाय और निरुत्तर से रह जाते हैं। फिर भी अपने को समेट कर बोला 'प्लीज हिमांशी! ऐसा भी कोई मजाक होता है क्या?'

जयेश, ये मजाक तो सच में मेरे साथ हुआ है। मेरे पास खूबसूरत और प्यार करने वाला पति है, जिसके पास 25 लाख के पैकेज की नौकरी और 3 बी.एच.के. का प्यारा घर है जिसमें सास ससुर का प्यार, ननद और जेठानी की खट्टी मिठ्ठी नोंक-झोंक है। जयेश, मुझे वैवाहिक जीवन की वो सब खुशियाँ मिली जिसके सपने एक कुँआरी लड़की हमेशा बुनती है, मगर ये अधूरापन मुझे अंदर ही अंदर खाये जा रहा है। वो दिनभर ऑफिस व नौकरी में बिजी रहते हैं या ऑफिस के काम से शहर दर शहर टूर या फिर देर रात दोस्तों के साथ पार्टियों की भीड़ में खुद को भूला देते हैं, मगर इधर मैं एक स्त्री ठहरी, जो कभी सास की हर महीने पर उठती निगाहें तो कभी मायके में माँ के उम्मीद भरे सवालों से जूझती रहती हूँ छोटी बहन मनु और भाभी भी छेड़ती हैं कि 'फैमिली प्लान ही करते रहोगे या हमें मौसी या मामी भी बनाओगे? 'तुम सुन रहे हो ना?'

हाँ, हाँ, तुम बोलती जाओ।

ये सब द्विअर्थी सवाल, ये उम्मीद भरी नजरें, कुछ लोगों के इशारे अंदर से रुला देते हैं। सबसे ज्यादा परेशान होती हूँ, अपने पति के लिए। डॉक्टर ने कहा तबसे वो अंदर ही अंदर खोये रहते हैं मुझे उनकी फीकी मुस्कान दर्द देती है। मैं रोना चाहती हूँ मगर उनके सामने रोकर उसे और ज्यादा दर्द नहीं देना चाहती। । मुझे पता है कि पौरुषत्व के अहम् पर चोट कितनी गहरी लगती है, मगर ये इनका दोष नहीं है, किस-किस को कैसे समझाऊँ? जयेश! कभी कभी तो इस घुटन की वजह से छाती में जोर का दर्द होने से मेरी साँस तक रुक जाती है, मगर मेरा दर्द किसे बताऊँ, मैं किसी के कंधे पर सिर रख जी भर के रोना चाहती हूँ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वो चुप हो गई, मगर उसके सुबकने की आवाज मुझे और मेरे कमरे में पसरी ख़ामोशी को तोड़ रही थी। मैंने दार्शनिकता का सहारा लेकर कुछ कहना चाहा 'माँ बनना जरूरी है क्या ? दुनिया में कई स्त्रियाँ है जो कभी माँ नहीं बन सकती, कईयों के और भी दु:ख दर्द हैं, फिर भी वे जी रही हैं, आप पर तो भगवान की सब मेहरबानी है, सिवाय इसके।

वो फीकी सी मुस्कान के साथ बोली 'छोड़ो, तुम नहीं समझोगे।' एक औरत के लिए माँ बनना ही उसकी सम्पूर्ण सार्थकता है। मेरा माँ बनना सिर्फ मेरा ही सुखद एहसास नहीं हैं। मेरे माँ बनने से कई रिश्तों को नाम मिलता है, कोई पिता बनता है तो कोई दादा, नानी, बुआ, उन सब लोगों को ख़ुशी देना चाहती हूँ, मैं सिर्फ अपने लिए माँ नहीं बनना चाहती।

'सुनो ! तुम मुझ पर एक एहसान करोगे।' कह कर चुप हो गई।

मगर मेरे जेहन में अजीब सा सवाल खड़ा कर गई। 'पता नहीं कैसा काम, कैसी मदद, कैसा एहसान कहीं वो ...' मैं उसे सुलझाने के चक्कर में उलझ गया। हैल्लो, क्या हुआ ? ?

कुछ नहीं, पर देखो हिमांशी ! हमारी दोस्ती कॉलेज समय से आज तक पवित्र रही, तुम शादीशुदा हो, कल किसी को पता चल गया तो लोग क्या कहेंगे, तुम तो समझ रही हो ना।

ओह जयेश ! तुम भी कितने कमजोर निकले, मैंने तुमसे ये उम्मीद नहीं की थी कि तुम इस तरह से सोचोगे, मैं अपने स्वार्थ के लिए इतनी भी नहीं गिरूंगी यार।

'तो क्या चाहती हो' उसके उलाहने के साथ ही मेरी पुरुषवादी सोच और भाषा की सीमा खत्म हो चुकी थी।

मैं अपने पति और परिवार को किसी भी कीमत पर खुशियाँ देना चाहती हूँ, इसके लिए मैंने उदयपुर की एक लेडी डॉक्टर से आई.वी.एफ. टेक्निक के बारे में बात की है। बस मुझे कुछ पैसे और भरोसेमंद आदमी की जरूरत है।

'तो तुम अपने पति को साथ में क्यों नहीं ले जाती ?'

नहीं जयेश, वो आदमी इस तरीके की ख़ुशी और बच्चे को कभी स्वीकार नहीं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कर पायेगा, वो घुट-घुट कर मर जायेगा। ये राज मैं उनके सामने कभी नहीं खोलूंगी क्योंकि ये मेरे पति और आने वाले बच्चे की ज़िंदगी में भूकम्प ला सकता है।

'हाँ वो तो ठीक है, पर मेरे पास तो पैसे... ' मैंने पीछा छुड़ाने के लिए अंतिम दांव खेला।

वो बीच ही बोल पड़ी 'मैं यहाँ नाथद्वारा में जानकार के पास गहने रख पैसे ले आऊँगी, तुम बस जोधपुर से उदयपुर आ सकते हो क्या ?'

कब आना होगा ?

अभी तो महीने भर ट्रीटमेंट चलेगा, पीरियड्स के बाद ही डॉ. आगे तय करेगी, तब आपको एक बार आना होगा।

कुछ दिन बाद

हैल्लो हिमांशी

हाँ, जयेश

कैसा चल रहा है ?

ठीक है, ट्रीटमेंट शुरू हो गया हैं, कुछ इंजेक्शन दिए है, साथ में दवाई भी, मगर बहुत भारी है शरीर पर साइड इफेक्ट्स दिख रहा है चेहरे पर पिम्पल्स हो गये हैं, कुछ भी खाओ, जी मिचलाता रहता है, पूरे शरीर में अजीब सा फील होता है। 'कोई नही, सब ठीक हो जायेगा, विश्वास रखो।

सुनो, तुम्हारे बाड़मेर में राणी भटियाणी जी का मन्दिर है ना, कहते वहाँ लोगों की मन्नतें पूरी होती हैं।

हाँ, कहते तो हैं।

मेरी मन्नत पूरी होगी तो मैं भी आऊंगी।

ठीक है, श्रीनाथ जी सब अच्छा करेंगे।

कुछ दिन बाद।

हैल्लो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हाँ बोलो

क्या कर रहे हो ?

कुछ नही, पढ़ रहा था।

क्या पढ़ रहे थे ?

धर्मवीर भारती का उपन्यास 'गुनाहों के देवता' पढ़ रहा था। तुम कुछ परेशान सी लग रही हो ?

नहीं, कुछ भी नहीं, बस यूँ ही।

हिमांशी ! कम से कम मुझसे तो छिपाया मत करो।

हम्म्म...

बोलो भी..

क्या एक बात कहूँ ?

नहीं, मत कहो

मैं तुम्हें परेशान करती हूँ ना ?

अरे नहीं, मैं तो मजाक कर रहा था, तुम बोलो ?

अब कभी परेशान नहीं करूँगी

क्यों ?

कुछ नहीं, महीना खत्म हो गया और उम्मीदें भी।

क्या कह रही हो ? मैं समझा नहीं।

जयेश ! तुम उदयपुर मत आना। क्यों ?

डॉ. ने मना कर दिया है, ट्रीटमेंट फेल हो गया है तो इस बार भी कन्सीव नहीं हो पायेगा... वो रो रही थी।

मैं चुप था, मेरी गली और शहर सो चुके थे, मेरे पास निःश्वास के सिवाय कुछ नहीं था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ढलती साँझ की धुंध

'तुम चले जाओगे तो सोचेंगे, हमने क्या खोया क्या पाया' हॉस्पिटल के वेटिंग रूम में लगे टी.वी. पर जगजीत की इस ग़ज़ल को रिटायर्ड जज नासिर खान सुन रहे थे।

साठ बसंत देख चुके खान के स्मृति पटल पर जीवन के वो दिन हल्के से उभर आये और स्कूल, कॉलेज, नौकरी और सेवानिवृति का घटनाक्रम चलने ही लगा था कि नर्स की आवाज आई – 'मि. खान!'

अपनी कमजोर होती हुई आँखों को दिखाने शहर के इस फेमस आई हॉस्पिटल आये थे। जैसे ही डॉक्टर के रूम का गेट खोल अंदर दाखिल हुए तो सामने बैठी लेडी डॉक्टर को देख ठहर से गये, न चलते बना न सोचते। नर्स ने फिर से आवाज दी 'बैठ जाइये सर प्लीज' लेडी डॉक्टर अंजली ने नर्स को बाहर जाने को कहा। 'आप!' अचानक खान के मुँह से निकल पड़ा।

'मैंने पिछले माह यहाँ ज्वाइन किया है बाई-द-वे आपको क्या प्रॉब्लम रहती है?'

मि. खान भूल गये कि वो यहाँ अपनी आँखें चेक करवाने आये हैं। अपने को सहज करते हुए बोले 'पढ़ने में थोड़ी दिक्कत रहती है दर्द भी रहता है।'

डॉक्टर ने मशीन से चेक कर रिपोर्ट को एनालिसिस कर दवाई लिखी और चश्मे के नंबर चेंज करने का बोल दिया।

'येस, नर्स नेक्स्ट' खान को स्लिप थमाते हुए कहा। नर्स ने अगले पेशेंट को आवाज लगाई और खान को बाहर जाने का निवेदन किया। हाथ में पर्ची लिए अनमने से बाहर चल दिए। साथ में आया भतीजा बोला 'लाइए पर्ची दीजिये, मैं दवाई लाता हूँ आप तब तक यहाँ बैठिये।'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'हम जिसे गुनगुना नहीं सकते वक्त ने ऐसा गीत क्यों गाया' खान साहब के दिमाग में गज़ल की अंतिम लाइनें बार-बार गूंज रही थीं। भावशून्य से बैठे खान के दिमाग में कभी हजारों सवाल और विचार कौंध रहे थे तो कभी आज का घटनाक्रम। विचारों को लयबद्धता नहीं मिल रही थी। विचारों के जाल को तोड़ने के लिए दिमाग को झटक कर गाड़ी की ओर चल दिए। घर आकर दोपहर की झपकी लेने का प्रयास किया, मगर दिमाग अभी भी विचारों की अंधी दौड़ में अपने घोड़े दौड़ा रहा था।

उसे आज भी याद है जब वो जयपुर से जैसलमेर जा रहा था तो बस में आगे वाली सीट पर वो बैठी थी। पुष्कर में सीट खाली हुई तो युवा नासिर उसके पास बैठ गया। बात शुरू करने के लिए खान ने पूछा 'कहाँ जायेंगी आप ?'

'जैसलमेर' जितनी दिखने में सुंदर थी उतनी ही सुंदर थी उसकी आवाज।

खान का दिल आश्वस्त हुआ चलो सफ़र तो इन मोहतरमा के साथ खूबसूरती से कटेगा।

'और आप' उसने भी पूछा

'मैं भी जैसलमेर।' खान ने बहुत जल्दी से जवाब दिया कि कहीं देर नहीं हो जाये।

ओह ! तो आप प्रॉपर जैसलमेर के हैं ?

'जी, मैं जैसलमेर से ही हूँ और जयपुर में पढ़ाई करता हूँ और आप ?'

'मैं भिलाई से हूँ, पापा जैसलमेर में एयर बेस में ट्रान्सफर होकर आये हैं इसलिए यहाँ पढ़ती हूँ।'

'आपने जैसलमेर देखा ?'

'नहीं, कौन दिखाये, अभी तो कोई दोस्त भी नहीं है।' खान के दिल में अरमान की उम्मीद नज़र आई। काफ़ी देर तक बातें होती रहीं, नागौर के बाद दोनों सो गये। जैसलमेर पहुँचने पर फिर मिलने के वादे के साथ विदा हुए।

इस तरह शुरू हुई दो युवा मन की प्रेम कहानी...

उस रेगिस्तान में जहाँ बूँद-बूँद पानी के लिए कई किलोमीटर चलना पड़ता है उस रेगिस्तानी शहर की झील में लंगर डाले खड़े सोने के जहाज की छाया को अगर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देखना हो तो एक प्रेमी की नजर से देखना और यूरोप के शहरों की छोटी गलियों की याद दिलाती सँकरी गलियाँ और खूबसूरत चौराहों को देख युवा प्रेम का रंग और गहराता जा रहा था। जब प्यार थोड़ा और बढ़ा तो दोनों प्रेमी शहर के पास प्रेमियों के यादगार स्थल 'मूमल की मेड़ी' को देखने गये, जहाँ का पत्थर-पत्थर लोद्रवा की राजकुमारी मूमल और महेन्द्र की अमर प्रेम कहानी सुना रहा था। लोकल गाइड से कहानी सुनते घड़ीभर के लिए दोनों मूमल-महेंद्र बन गये। छोटे शहर में प्रेमियों का मिलना कठिन था, मगर प्रेमियों को भला कोई कभी रोक पाया है।

अचानक डॉक्टर की स्लिप पर लिखे नंबरों पर नजर पड़ी। फतेहसागर की पाल से शाम की वॉक खत्म कर जल्दी घर पहुँचे और मोबाइल से नंबर कई बार डायल किये और काट दिए।

हिम्मत नहीं हो रही थी बात करने की। मस्तिष्क में बार बार शब्द गूंज रहे थे 'नेक्स्ट प्लीज'। आखिरकार बात करने का निर्णय दिमाग ने दिल को दे दिया। उधर से आवाज आई 'हैल्लो! हू इज दिस?'

'मैं खान, नासिर खान बोल रहा हूँ।' कुछ क्षण के लिए निस्तब्धता छाई रही दोनों और

'कैसी हो?' खान ने अपना गला खराशते हुए कहा।

'उम्र के इस पड़ाव पर ये सवाल निरर्थक सा है, ज़िंदगी चल रही है, ठीक हूँ।' उधर से जवाब आया।

'परिवार, बाल बच्चे कैसे हैं?' खान ने बात को आगे बढ़ाने के लिए पूछा। 'जिसके साथ परिवार बसाने की सोची थी, उसने मना कर दिया और जिसने बसाया था उसने बीच में ही छोड़ दिया। आज लगता है वक्त ने इस अध्याय को यूँ ही अधूरा लिख छोड़ दिया।' उसकी आवाज में तल्ख भारीपन और उलाहना था।

खान को वो दिन याद आ गया जब जैसलमेर में गड़ीसर के किनारे किसी ने कहा था 'मैं आखिरी बार पूछ रही हूँ विल यू मेरी मी?'

उस समय एक ही जवाब था 'ये हो नहीं सकता, तुम हिन्दू और मैं मुस्लिम, लोग हमें जीने नहीं देंगे, प्यार की बात तो ठीक मगर शादी?'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'बोलते क्यों नहीं, चुप क्यों हो ? आपका परिवार, बच्चे और तुम कैसे हो ?' उधर से आवाज आई। खान की आँखों में बरसों का दर्द छलक पड़ा, सालों बाद किसी ने पूछा 'तुम कैसे हो ?'

'तुम्हारा उस दिन गड़ीसर से उठके चले जाना फिर रात को तुम्हारा गोलियाँ खाकर कहना मैं मर जाऊँगी। मैंने उसे हल्के में लिया मगर सुबह तुम हॉस्पिटल के बेड पर थीं, एक बार भी नजरें उठा के नहीं देखा। कुछ समय बाद तुम्हारे पापा का एयरफोर्स स्टेशन से ट्रान्सफर हो गया, तुम चली गयीं मेरा शहर छोड़ कर। तुमने नंबर भी बदल दिए मगर मैंने तुम्हारे फोन का कई सालों तक इंतजार किया, मगर अफ़सोस...'

'खैर छोड़ो! पुराने घावों को मत कुरेदो, ये बताओ कि तुमने शादी की या नहीं ?' डॉक्टर अंजली ने सीधा सवाल पूछा।

खान ने अपने आँसुओं और यादों पर जमी जर्द को पोंछते हुए बताना शुरू किया 'अम्मी ने शादी के लिए खूब दबाव दिया उसके बाद आर.जे.एस. में सलेक्शन होने पर कई प्रस्ताव आये मगर मेरी इच्छा कभी नहीं रही हर बार टालता रहा। जज बनने के बाद एक लड़की जीवन में आई थी मगर अफ़सोस कि वो शादीशुदा थी, काफी दिन तक प्यार चलता रहा बाद में 'लोग क्या कहेंगे' की दुहाई दे दूरियाँ बना लीं और जीवन में फिर अकेला पड़ गया और तुम्हारी ?

'माँ की इच्छा से शादी की लेकिन विश्वास और समर्पण के अभाव में रिश्तों में दरार आ गई, मेरा जीवन के प्रति उदासीन रवैया देख उसने तलाक ले लिया, एक बच्ची है जो लन्दन में अपने पति के साथ रहती है, कभी-कभी मिलने आ जाती है।

इस तरह अक्सर दोनों में बातें होने लगीं। दोनों को अच्छा लग रहा था एक दूसरे के अतीत और वर्तमान को जान कर, सबसे बड़ी ख़ुशी थी लम्बे अन्तराल के बाद फिर अचानक इस मोड़ पर यूँ मिल कर। एक बार बात करते हुए कहा 'सुनो! तुम पर आज भी लाल कलर फबता है ?'

'मगर मैंने तो इन दिनों लाल रंग की साड़ी कभी नहीं पहनी।' डॉक्टर ने आश्चर्य जताते हुए कहा।

'पर हमने तो देखा था।' नासिर का बूढ़ा मन युवा शरारत करने लगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'हे भगवान! इस बुढ़ापे में भी तुम्हारी नजरें कहाँ कहाँ जाती है।' डॉक्टर अंजली को अपने ब्रा के स्ट्रिप का कलर याद आ गया।

'क्या मैं तुमसे मिल सकता हूँ?' खान ने एक दिन धड़कते हुए दिल से पूछा। 'जब मिलने के दिन थे तब तुमने मना कर दिया था, आज मरने के दिन आये हैं और तुम मिलने की बातें कर रहे हो।' उसकी बातों में हर बार टीस झलकती।

'डॉक्टर यह मत भूलो कि इन्सान को जवानी से ज्यादा बुढ़ापे में अपनों की जरूरत महसूस होती है। आज मेरे पास सब कुछ है पद, पैसा, प्रतिष्ठा मगर ये सब मेरे जीवन में प्रेम की गहरी शून्यता को भर नहीं सकते।'

'मैं सब समझती हूँ मगर इस पड़ाव पर ये नजदीकियाँ किसी भी मायने में ठीक नहीं है।'

'भाड़ में जाये ये नैतिकता और मायने, मुझे मिलना है।' खान की आवाज में कम्पन था।

'नहीं खान, हम पब्लिकली नहीं मिल सकते हैं।'

'मैं रविवार की शाम को फतेह सागर के सामने राज रेस्टोरेंट में इंतजार करूँगा अगर तुम नहीं आई तो फिर कभी फोन नहीं करूँगा।

'सुनो तो सही' वो कुछ उतावली सी होकर बोली। मगर खान ने फोन काट दिया। वो जानती थी नासिर जिद्दी इन्सान है और वो ये भी जानती थी उसके वापसी से उसके जीवन की कोपलें फिर से खिलने लगी थीं और अकेलेपन से भरे नीरस जीवन में सरसता दिखाई दे रही थी।

रविवार को उसने नासिर की पसंदीदा लाल रंग की साड़ी पहन तैयार हुई। जैसे ही गेट खोल बाहर निकली तो... 'हैप्पी बर्थ डे ममा' कहते हुए बेटी गले लग गई। 'आज इतनी सजी सँवरी किधर?' बेटी ने पूछा।

'कहीं नहीं, बस यूँ ही, अरे तू आ रही थी न इसलिए' बिखरे हुए झूठ और साड़ी को ठीक करते हुए अंदर घुस गई। उधर दो चार घंटे इंतजार के बाद नासिर खान ढलती साँझ की धुंध में अपने चश्मे को साफ करते हुए घर की ओर चल दिए।

गाड़ी में एफ.एम.पर बज रहा था 'तुमसे आया न गया, हमसे बुलाया न गया।'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लाज

काली रात डरावनी, नगर गयो सब सोय।
जाको चिन्ता पिव री, नींद किस विध होय।।

नये गाने के शुरुआत में बाबू खां मांगणियार एक दोहे को अपनी लम्बी साज के साथ इस भीगी हुई रात को और रोमांटिक बना रहा था।

सूरत सिटी में बैठे मोहन सोढा को इस राजस्थानी गीत ने अपनी प्रियतमा भटियाणी की याद में भीगो दिया।

पिछली बार वापिस आते वक्त उसे गुस्से में कुछ कह दिया था तो वो सिर नीचे कर भींत कुरेदती हुई रोती रही। मगर प्रेम के दो बोल बोले बिना ही टेशन आ गया था।

उसके बाद कई दिन तक उसने घर पर फोन नहीं किया था। घर पर एक ही फोन था जो पिताजी ही उठाते और माँ और पत्नी से बात करवाते।

आज वापी से तन जी आये थे तो पार्टी कर ली। तन जी के जाने के बाद उसने मारवाड़ी गाने लगा दिए।

बाबू खां का यह गाना उसके हिये को भेद रहा था

आज पिया सूं खटपट झटपट बोल्या बैण
लट घुंघट पाछी बली बरसन लाग्या नैण।

मन जाकर पहुँचा ठेठ रेगिस्तान के उस गाँव में जहाँ भरपूर यौवना अपने प्रियतम का बेसब्री से इंतज़ार कर रही है।

फरवरी के इस बिन मौसम की बारिश ने सोढ़े राणे को हिला दिया मन कहे कि अभी बस पकड़ूँ और जाकर मिल लूँ।

उसका मन भर गया उसने फोन करने के लिए मोबाइल उठाया तो रात का एक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बज रहा था। उसने मायूस होकर फोन रख दिया उसे पता था इस वक्त वो माँ के पास सो रही होगी और मोबाइल नेटवर्क में रखने के लिए झोपड़े के ऊपर रखा होगा। उसने आज शाम को ही फोन पर बात की थी।

'आखातीज रा थे घरे आवोला नी'

उसे कवल किया कि वो आखातीज को आएगा।

माँ और पिताजी शादी में उम्मीद अनुसार दहेज नहीं मिलने के कारण बहू से नाखुश थे, इसलिए हर काम में नुक्स निकालते, बात बात पर ताने सुनने को मिलते 'हमारी तो लाज ही चली गई इतना कम दहेज, गाँववालों से कैसे बात करें।'

जब भी घर जाता तो पहले माँ फिर पत्नी एक दूसरे की इस तरह की शिकायतें सुनाती।

इधर रेगिस्तान के इस गाँव में साँझ ढल चुकी थी। पाकिस्तान के बॉर्डर से सटे इस रेतीले गाँव में जीवन संघर्ष देखते ही बनता है। बारिश हो तो साल भर खाने को अन्न, नहीं तो कमाने के लिए बाहर निकल जाओ। फिर गाँव में बचते हैं बुजुर्ग महिलाएँ और बच्चे...

दूसरे घरों में धुआँ ढाणी के ऊपर दिख रहा था। घरों में धनिया कूटने की आवाज और गंध फ़ैल रही थी।

बकरियाँ और गायें घरों की तरफ लौट रही थी।

तो मार्ग पर बच्चे और कुत्ते साथ खेल रहे थे।

बाहर ससुर जी ढीली मांची कस रहे थे।

बहिन की बेटी की शादी है, मायरा भरना है तो रुपये की जरूरत है मांगी लाल सेठ ने इस बार यह कह कर मना कर दिया कि दादीसा के मोसर के रुपये अभी तक जमा नहीं करवाए इसलिए इस बार सामान उधार नहीं देगा।

'मोहन से कुछ बात हुई क्या' ससुर जी ने एक पांव को भिड़ाते हुए निवार कसते हुए पूछा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'हाँ, दो दिन पहले फोन आया था कह रहा था कि भाणेज बाई सा के ब्याव में आएगा।' सास ने सूखे काचरे और सांगरी को सब्जी के लिए साफ करते हुए जवाब दिया।

पैसों की बात हुई क्या ? इन धोरों में सिर्फ इतना उगता है कि चार छह माह का गुजर बसर हो सके इसलिए रुपये पैसों के लिए तो कमाऊ पूत की तरफ ही तकना होता है।

'कह रहा था जीसा को कहना कि सेठ दो लाख तक दे देगा, चिंता मत करना मायरा भर देंगे।'

सास जवाब देकर अंदर आकर बींदणी को सब्जी पकड़ा दी रांधने के लिए।

पिताजी कुछ आश्वस्त हुए, हालांकि वो कभी उनसे सीधे बात नहीं करता मगर उनकी बात कभी नहीं टाली।

पिता जी की गाँव में इज्जत थी अच्छी गवाड़ी थी पिताजी ने दो बहिनों की शादी की, उसकी भी शादी की, गाँठ में दो पैसे थे वो खर्च हो गये। इसलिए पूरी जिम्मेदारी उस पर आ गई। पढ़ाई में वह बहुत होशियार था। गाँव से दस किलोमीटर दूर स्कूल जाकर बारहवीं अस्सी प्रतिशत से उतीर्ण की आगे कॉलेज के लिए जैसलमेर कॉलेज में एडमिशन लिया मगर पिताजी ने कमाने के लिए गुजरात भेज दिया उसके अरमान थे मगर दूसरी तरफ घर के माली हालात... मन मसोस वह सूरत में तेल की फैक्ट्री में लग गया।

जीवन में आदमी के अरमान कुछ और होते हैं और किस्मत कहीं और लाकर खड़ा कर देती है अपनी स्कूल का टॉपर और अफ़सर बनने का ख़्वाब देखने वाला मोहन तेल के पीपे भरकर इधर उधर कर रहा था। प्रतिभा कहीं छुपती नहीं, सेठ ने इस प्रतिभा को जल्द पहचान लिया दो-एक साल में उसे मुनीम बना दिया।

इधर पिताजी घर संभालते थे सुबह सुबह अख़बार पढ़ने के लिए टेशन पर आ जाते थे।

रेलवे स्टेशन व बस स्टेंड की तरह गाँवों में होता है टेशन। वह जगह जो गाँव की सूचना का मुख्य केंद्र होता है कौन आया, कौन गया, कौनसी बस कितनी लेट आई।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किसका लड़का अभी अभी कमाई कर लौटा है। सारा तन्त्र यहीं से संचालित होता है गाँव की राशन की दुकान के घोटाले से लेकर ट्रम्प के राष्ट्रपति बनने तक के सारे समाचार अप-टू-डेट।

सुबह के 9 बजे हैं। अभी पहली गाड़ी शहर से आई है। ड्राइवर ने अख़बार फेंके, साथ ही गुटखे का पीक भी और फिर गाँव के दो चार बदमाशों को हाथ हिला रामा श्यामा किया। दोनों का काम हो गया। गाड़ीवाले को रोज चलना है तो इन दारूड़ियों से बना कर रखनी पड़ती है और इधर हालचाल पूछने से इनके अहम को सुबह-सुबह पुष्टि मिलती है कि 'देखो हमें सलाम ठोंकते हैं, बिन पिए भी, पिए होते तो साला गाड़ी यहीं खड़ी करता।' सवारी के नाम पर दो चार जनाना और मर्दाना उतरे। इनमें दो गंवारनी थी। टेशन पर बैठे मर्दों को ये गवारनी बहुत चुभती क्योंकि उनका मानना था कि यह औरतों को ठगती हैं और खोटा माल दे जाती हैं। मगर 'पीर जी' को हमेशा अच्छी लगती क्योंकि जब भी उसका पोटला ऊँचा करवाते वक्त दीदार होते तो खुश हो जाते।

गवारनी चली गई गाँव में, बाकी बचे लोगों के साथ पिताजी अख़बार में ख़बरें खोजने में खो गये। कई ऐसे भी थे जिन्हें पढ़ना नहीं आता वो रंगीन चिकने पन्नों पर देह उघाड़ी हीरोइन को देख कर सभ्यता का भाषण झाड़ते जिन्होंने ज़िंदगी में भी इतने कम कपड़ों में खुद की लुगाई को भी झोंपड़े में नहीं देखा होगा।

और फिर चालू हो जाता है गाँव और शहर के बिगड़े हुए माहौल पर चर्चा का दौर।

अरे! शहर में तो मिनखपणो कहाँ है? बिगड़ कर बन्दर हो गये।

ऐ देखो! राजू जी रो छोकरो, बाप तो मजूरी करे और कुँवरसा फौजी कटिंग करवा के घूम रहे है हर 15 दिन में गाँव आ जाते है शहर से।

इतने में शेरोजी बोलते है 'ये पढ़ाई-वढ़ाई कुछ नहीं करते दिन भर छोरियों के पीछे घूमते।'

'अरे! शेरा बा छोरियाँ तो छोड़ो, आजकल तो दिनभर मोबाइल में आँखियाँ फोड़े है राम जाने!! इस मोबाइल में क्या है।' चौथमल बीच में ही बोल पड़े।

बहस जारी थी अचानक पिताजी की नजर एक खबर पर पड़ी। सूरत में नकली तेल की फैक्ट्री पकड़ी मालिक और मुनीम गिरफ्तार।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जमीन खिसक गई, उनका कमाऊ पूत जेल चला गया। वे धीरे से उठ बड़े भाई माड़ साब के पास चल दिए। दोनों भाई चिंता में पड़ गए। पाँच दिन बाद मायरा भरना है। इधर कमाऊ पूत जेल चला गया। बेटी के ससुराल में किरकिरी हो जायेगी। उधर बाराती भी बातें करेंगे कि दुल्हन का मामा चार सौ बीसी में जेल चला गया। गाँव में भी शिवदान सिंह की लाज कैसे बचेगी।

बड़े भाईसाहब ने भी दिलासे के सिवा कोई मदद नहीं की।

घर आये तो देखा सास बहू गवारनी से सामान लेने में व्यस्त हैं।

गवारनियां जो गाँवों का चलता फिरता बिग बाज़ार थी साथ ही उन तथाकथित संस्कारित घरों के बाड़े में बंद औरतों के लिए खबरीलाल। शहर के नये फैशन के बारे में बताती तो छोटी मोटी चीजें ले आती। इसमें अक्सर शामिल होता है कपड़े, चुनरी, तेल, साबुन और सबसे नीचे छुपाई होती रंगीन चड्डी ब्रा के जोड़े।

दोनों सास-बहू सामान लेने में व्यस्त हो गईं।

नणदोली का ब्याव है तो लाड कोड से नखपॉलिश, टीकी पॉकिट, रुमाल, मेहंदी खरीदने लगी।

एक तरफ बेटा जेल में दूसरी तरफ बेटी के घर विवाह। कल ही बेटी मायरा नूतकर गयी है, बड़ी खुश थी सभी को न्यौता देकर गयी है। इस खुशी के मौके को नज़र लग गयी शायद।

उसने अपनी पत्नी को पानी के बहाने बुलाया और कहा एक बार मोहन को फोन लगाओ। फोन स्विच ऑफ आ रहा था। मोहन के कोई दूसरे नम्बर भी तो नहीं थे।

ठकुरानी बेचैनी और चिंता को समझ गयी। मगर कारण समझ नहीं आ रहा था, इसलिए बार-बार पूछ रही थी क्या हुआ, तबियत ठीक नहीं है, क्या ? उदास क्यों है आप ?

ठकुरानी को लगा ठाकुर साहब को मायरे में लगने वाले खर्चे की चिंता हो रही है।

कहने लगी 'क्यों चिंता करते हो ? जितना है उतना लगा देंगे। सबसे कोई होड़ थोड़ी करनी है हमें।'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिवदान सिंह ने थोड़ा पसीजते हुए कहा, बात ऐसी नहीं है।

'तो क्या है ?'

शिवदान सिंह ने पूरी बात सुनाई। अब चिंतित होने की बारी ठकुरानी की थी।

ठकुरानी के कहने पर शिवदान सिंह सूरत गये।

उनके बेटे के नाम पर सेठ झूठी कम्पनी चला रहा था, जिसमें नकली घी तेल बेच रहा था। और जब छापा पड़ा तो मैनेजिंग डायरेक्टर के नाम पर मोहन का नाम था तो बेटा ही पकड़ा गया। वकील से बात हुई तो जमानत खारिज होना बताया। अब अहमदाबाद हाइकोर्ट में बेल एप्लिकेशन लगानी होगी। जिसमें जमानत हो सकती है पर चार-पाँच दिन और लगेंगे। उदास मन से शिवदान सिंह गाँव आ गए।

आकर पत्नी को सारी बात समझाते हुए कहा कि जो भी हो आप बींदणी को मत बताना।

'ठीक है' और अंदर चली गयी।

बींदणी भी 4 दिन से उदास थी न तो मोहन का फोन लग रहा न ही फोन आया। जिससे पूछो सभी बात को टाल रहे थे।

मगर सन्देह इसलिए भी हो रहा था कि सभी उदास थे। कारण कैसे पता चले। कोई बता भी नहीं रहा।

वो रात का खाना खाकर सोने जा रही थी, कि उसने सास ससुर की बातें सुनी, बड़े चिंतित स्वर में ससुर जी कह रहे थे कि बुढ़ापे में मेरी इज्जत चली गयी। उसने हमें कभी नहीं बताया कि वो ऐसे काम कर रहा है। अब सम्बन्धियों को कौनसा मुँह दिखाऊँ। सासू जी चुपचाप सुन रही थीं। उसे लगा कुछ तो गड़बड़ है।

उसने दरवाजा बजाकर सासू जी को अंदर बुलाया। और बोली आपको आपके बेटे की कसम है मुझे बताओ कि क्या बात है ?

बींदणी अब तुमसे क्या छिपाना कहकर सारी सच्चाई बयान कर दी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi.Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक बारगी तो बींदणी के पैरों तले जमीन खिसक गई और कम्पन होने लगा। उधर पति को जेल इधर मायरा ...। चुपचाप उठकर सोने चल दी।

देर रात तक करवटें बदलती रही मगर नींद आस-पास भी नहीं थी। गली में कुत्ते भोंक रहे थे। झींगुरों की आवाजें भी आ रही थीं। ससुर जी खाँस रहे थे शायद वो भी जाग रहे थे। वो देर रात तक मान-अपमान और इज्जत -आबरू को लेकर विचार मग्न थी।

उसने सुबह उठकर रोज की तरह चाय बनाई। सासू जी को ससुर जी की चाय देते हुए बोली ससुर जी से कहना कि चिंता न करें। आप तो मायरे की तैयारी करें। सासू जी सुनकर अवाक् रह गयी। सास को समझ नहीं आया बींदणी इतने विश्वास के साथ कैसे कह रही है।

वह दरवाजे की ओट में खड़ी होकर पहली बार हिम्मत करके बोली।

जीसा आपकी लाज मेरी लाज है, मेरा धणी आज जेल में नहीं होता तो आप यूँ उदास नहीं होते। शिवदान सिंह ने बींदणी की आवाज सुन चाय की कटोरी नीचे रखते हुए सिर पर साफ़ा पहन लिया। मेरे पीहर वालों ने जो भी थोड़ा बहुत सोना दहेज में दिया है उसको सेठ जी के पास गिरवी रखकर मायरे का सामान ले आइये। आप निश्चिन्त होकर मायरा भरकर आइये। फिर जो भी होगा देख लेंगे। जोगमाया सब ठीक करेंगी। बहू अंगूठे से भींत कुरेद रही थी। सास-ससुर नीची गर्दन किये बैठे थे। बींदणी ने आधी समस्या तो हल कर दी। पर बुढ़ापे में ससुर जी के पास दूसरा उपाय भी तो नहीं, लेकिन गाँव के आदमी के लिए ये काम भी तो शर्मिंदगी लायक था कि नयी बींदणी के गहने गिरवी रखे जाए। लाज का भी सवाल था।

बहू ने दूसरे दिन पेटी खोलकर अपने सभी गहने थैली में डाल लिए।

एक बारगी तो उसका हिया भर आया मगर वो जानती थी की गहनों से ज्यादा मोल ससुर जी और पति की लाज बचाने का है अगर लाज इस वक्त चली गयी तो गहने पहनकर इतराने का शायद ही मौका मिले। और दूसरे ही क्षण नवविवाहिता को अपनी स्त्री सुलभ गहनों का मोह भर आता है।

हिये को बड़ा करके उसने गहनों की थैली सास को पकड़ा दी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ससुर जी ने सेठ जी के यहाँ गहने गिरवी रख मायरे का सामान ले आये।

गाँव के लोगों को साथ लेकर मायरा भरने चल दिए।

स्त्रियां गीत गा रही थी

"बीरा भरदे मायरो..."

तभी सास को एक तरफ बेटे की जेल और दूसरी तरफ बेटी का घर याद करके उसका हिया भर आया। डब डब रोने लगी। हिचकियां आने लगी।

गाँव की औरतें उसे धीरज बंधा रही थी। उधर नवविवाहिता ने हिये को कड़ा कर रखा था। जो भी उसे पूछता उन्हें बता रही थी कि बाईसा के भाई को सेठ जी ने छुट्टी नहीं दी। और सेठ जी अपने साथ उनको चेन्नई ले गए हैं। जब उसकी सास ने डबडबाई नजर से देखा तो बहू की आँखें भी भरी हुई बदली की भांति बरसने को हुई तो भागकर घर के पीछे चली गयी।

आँसुओं को पोंछते हुए खुद को समझाने लगी। अपने कुल की सौगन्ध है यहाँ तू कमजोर पड़ गयी तो तेरे परिवार की लाज गयी। थोड़ी हिम्मत रख, समय बदलते ही सब ठीक हो जायेगा, घर की लाज रह जाएगी।

एक तरफ बारात और मायरा भरने वाले सभी पहुँच चुके थे। बाराती और घरवाले दोनों पक्ष आमने सामने बैठे थे। और बारातियों की मान मनुहार चल रही थी। जान पहचान हो रही थी और सभी आपस में मजाक कर रहे थे। मांगणियार मंगलगीत गा रहे थे।

चारों तरफ खुशियाँ थी पर शिवदान सिंह भीतर ही भीतर उदास हो रहे थे। बार-बार जवान लड़के की याद आ रही थी। लोग पूछ भी रहे थे मोहन सिंह नहीं दिख रहे पधारे नहीं क्या... ?

वहीं फिक्स बहाना सेठ ने छुट्टी नहीं दी। प्राइवेट नौकरी है पूरा खून चूसते हैं यह प्राइवेट कम्पनी वाले। तभी आवाज आई मायरा भरने का समय हो गया सभी अंदर पधारे। बहिन रूपा दे आज बहुत खुश थी। उसकी बेटी सुप्यार कँवर का ब्याव हँसी ख़ुशी से हो रहा था। पीहर से मायरा आया था। वह सज-धज कर मायरे वालों का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
स्वागत सजाने के लिए रवाना हुई पीछे मायरा गीत गाने वाली औरतों का झुलरा चलने लगा। मायरा भरणै के वक्त

बहन गाती है...

''वीरा रिमा रे झिमा होकर आईजो
भाभज ने साथे लाईजो रे...
सिरदार भतीजा भैला लाईजो रे.. ''

लम्बे घूँघट में उसने बारी बारी से सभी के तिलक किया और हाथों में नारियल रखा। जैसे ही चुनड़ी ओढ़ाने की बारी आई तो देखा माँ-जाया छोटा भाई मोहन दिखाई नहीं दे रहा। उसने जीसा की तरफ देखा तो काकोसा के लड़के को आगे कर रहे थे। फिर जीसा के चेहरे की तरफ देखा तो जीसा की छाती भर आयी। वह समझ गयी कुछ गड़बड़ है उसको कोई सूचना नहीं थी। उसने सफेद मूंछों और रंगीन साफे वाले जीसा की आँखों से आँसुओं को झरते देख उसके भी भावों का बांध छलकने लगा। वह जीसा के गले लग गयी और बाप बेटी दोनों के हिये भर आये। आस-पास के लोगों को वो ख़ुशी के आँसू नजर आ रहे थे। पर भीतर का दर्द वही जानते थे जिनके भीतर गहराई से बह रहा था।

मायरा भरकर जब दो दिन बाद लौटे तो शिवदान सिंह बहुत टूटे हुए लग रहे थे। जीप से सामान उतार कर बेमन घर में प्रवेश किया। तो आँगन में मोहन दरी पर बैठा दिखाई दिया। जो कि माँ को पूछ रहा था 'मायरे के पैसे कहाँ से लाये।'

तभी उसकी पत्नी ने माँ बेटे को चाय पकड़ाते हुए बोली 'जीसा की साख को देखते हुए सेठ जी ने सामान उधार दे दिया।'

शिवदान सिंह सुनकर मुड़े और गुडाल के भीतर बैठ गए। आँख में आँसुओं की धारा बह रही थी और मन ही मन कहा 'वाह रे बेटी! आज तूने मेरे कुल की लाज रख ली। और हम तुम्हें कभी समझ नहीं पाये।'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खालीपन

शाम की थकी मेट्रो सी वो ऑफिस से घर आकर चाय का कप लेकर या तो टीवी देखती या फिर सुबह के अखबार के पन्ने फिर से पलटती। ये उसका रूटीन था। मगर कुछ महिने पहले बेटी ने फेसबुक चलाना सिखा दिया तो अब ये बोझिल शामें चाय के साथ फेसबुक पर सर्फिंग करते हुए कटने लगीं।

उसे अच्छा लगता था लोगों के चेहरे और दिमाग पढ़ना, यहाँ हर रंग के मुखोटे पहने लोग मिलते, यहाँ अलग-अलग तरीके से लोग अपने दर्द को साझा करते हुए दिखाई देते तो कहीं सहारा देने के बहाने सहारा ढूँढ़ते लोग, हरेक ने अपने हिसाब से ये आभासी दुनिया बना रखी थी, सभी चाहते थे अपनी हर बात को बयां करना, चाहे बड़ा गम हो या छोटी ख़ुशी, सभी को बेसब्री से इंतज़ार रहता था, पसन्द के साथ कमेंट्स का, भले ही वो झूठमूठ के हों, मगर ये सब अहम को पुष्ट करते और दिल को वहम देते थे। पता ही नहीं चलता था घण्टों कैसे गुजर जाते।

इन्हीं चेहरों के बीच उसे वो दिखा। वो अक्सर रविवार को ही कोई कविता, कहानी और ग़ज़ल पोस्ट करता था। वो अपने पात्र में उतर कर हौले से मन की परतें उघाड़ता था। वो अपने पात्रों को मन की उलझनों में गूंथता था और काळजे की कोर की उस दाजती हुई गंध को महसूस करवाता था। वो दर्द की नब्ज़ को उस छोर से दबाता था जहाँ शब्दों में रिसता था वर्षों से दबा अनछुआ दर्द। उसकी ग़ज़लों के मिसरों में कसक होती थी भूले हुए पुराने प्यार को याद करवाने की। उसकी कहानी देह से फिसलती हुई उतरती थी आहिस्ता आहिस्ता मन में और छोड़ जाती थी रूह में अजीब सी सरसराहट, जो पूरे सप्ताह उसे मीठा इंतज़ार करवाती थी।

एक रात अचानक उसका इनबॉक्स में मैसेज चमका... उसने हाय हेल्लो से बात शुरू की।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अच्छा लिखते हो।

जी, शुक्रिया, ये सब आपका रहमो करम है।

नहीं ये आपका टेलेंट है।

अपने बारे में कुछ बतायेंगी मैडम ?

क्या करोगे जानकर ? हमें आपका पाठक ही रहने दो।

ठीक है, जैसी आपकी मर्जी मेम, बाय, गुड नाइट।

इस तरह उससे बातें होने लगी। वो अक्सर शाम को ही बात करती। कभी-कभी पति घर पर नहीं होते तो रात को भी कर लेती। फिर पता नहीं कब मेट्रो में आते जाते मोबाईल नंबरो का आदान प्रदान हो गया तो व्हाट्सअप पर भी उसे वो कई अजब गजब के सवाल पूछता रहता, शायद वो उसके बारे में कुछ जानने की कोशिश कर रहा था, मगर वो हमेशा टाल देती। पर उसका इस तरह पूछना उसे अच्छा लगने लगा।

'आपके जीवन क्या कमी है ?' उसने एक दिन फोन पर पूछ ही लिया।

मेरे जीवन में क्या कमी होगी ? सब कुछ है मेरे पास, पति सरकारी अफसर है, बेटी डॉक्टरी की पढ़ाई कर रही है लड़का बैंक में है, दिल्ली में खुद का मकान है, सब कुछ तो है मेरे पास' ।

'फिर भी उस सब में 'कुछ' तो गायब है मैडम' वो अभी भी अड़ा था।

'मुझे तो कुछ नहीं लगता अगर तुम मन की बातें जानते हो तो तुम ही बताओ।'

'मुझे लगता है आपके जीवन का कोई हिस्सा अधूरा ही रह गया।' उसने कहा। अधूरेपन के नाम से वो हिल गई मगर जिज्ञासा और भी बढ़ गई।

'वो क्या है वो भी बता दो।' उसने संभलते हुए पूछा।

'शायद प्यार' उसने कहा

अभी पति बुला रहे है रात को फेसबुक पर बात करते है कह कर फोन काट कर वहीं बालकनी में खड़ी हो गई। वो उदासी से भर गई। बार-बार उसके ये सवाल ज़ेहन में आ रहा था। इस भागते हुए शहर में उसने कभी खुद के बारे में सोचा ही नहीं था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पहले पढ़ाई, नौकरी फिर पिताजी की जिद से शादी। 45 साल के जीवन में जब कभी भी खुद को तन्हा पाती तो खुद को भीड़ में शामिल कर देती और उस कोलाहल को खुद के अंदर भर देती। मगर आज उसके सवाल ने खाली पड़े उस कोने में हलचल मचा दी।

सुबह से शाम ऑफिस में खपना फिर शाम को थक हार कर घर आना। कहने को तो घर है बाकी रात बसर के सिवाय और कुछ नहीं था। बच्चे दूसरे शहरों में हैं वो भी अपने-अपने स्पेस के साथ। शादी अरेंज्ड थी मगर दोनों अलग-अलग से प्यार करते थे। इसलिए शादी के बाद कभी प्यार दिखा नहीं, बस अपने-अपने तरीकों से जी रहे थे, शायद वक्त के हिसाब से दोनों ने हालातों से समझौते कर लिए थे। उनका अपना रूटीन था, अपनी दुनिया थी उसमें जीते थे। रातें अक्सर स्मार्टफोन की दूधिया रौशनी में उनींदा सी पता नहीं कब खत्म होती और फिर दिन में बन जाते महानगरीय भीड़ का हिस्सा।

सिवाय कमाने और खाने के उसके जीवन का कोई मकसद नहीं था। कहने को तो वो हरवक्त लोगों से घिरी रहती चाहे ऑफिस हो, मेट्रो हो या फिर कॉलोनी का पार्क मगर यहाँ के सारे रिश्ते औपचारिकतावश थे, रिश्तों में न जान थी न जज़्बात। वो अक्सर चुप और उदास रहती थी। साँझ के साथ ही उसके चारों तरफ उदासी भी पसर जाती थी जिसे वह टीवी और अख़बार में जज़्ब करने की कोशिश करती, मगर फेसबुक ने उसे काफ़ी सहारा दिया।

इस खाली पड़े कोने में उसने कब दस्तक दी उसे पता ही नहीं चला। वो उम्र और अनुभव के लिहाज से काफी छोटा था मगर उसके साथ अपने को शेयर करना उसे अच्छा लगने लगा। वो धीरे धीरे दिल की गिरह खोलने लगी। अपने पति की बीमारी से लेकर खानेवाली बाई की किचकिच उससे शेयर करती। उससे बात कर हल्का महसूस करती, अपनापन सा लगता।

कभी-कभी वो ऑनलाइन नहीं होता या कुछ नहीं लिखता तो अक्सर फोन कर पूछ लेती।

'मैडम आपको मुझसे प्यार हो गया' उसने एक दिन छेड़ते हुए कहा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'रहने दो, तुम्हारी उम्र जितनी तो मैंने नौकरी कर ली है, तुम्हारी उम्र के मेरे बच्चे हैं और तुम प्यार की बातें कर रहे हो' वो बोली।

क्या प्यार अपनी उम्र के लोगों से ही होता है मेम ?

नहीं।

फिर भी।

फिर भी क्या ?

तो हमारे बीच में क्या है ?

प्यार- व्यार कुछ नहीं है, बस तुम्हारी बातें अच्छी लगती हैं, दिनभर की थकान उतर जाती है कुछ सुकून सा मिल जाता है, बस इतना ही। वो चुप हो गई, उसे लगा कहीं कुछ ज्यादा बोली तो वो फिर से पकड़ लेगा। वो नहीं चाहती थी उनके बीच रिश्ते को नाम मिले, लेकिन वो जिद्दी था बार-बार टटोलता था।

मुझे पता है, आप इसे कभी स्वीकार नहीं करेंगी, हमारे बीच उम्र का अन्तर है। आप शादीशुदा हैं।

'सब जानते हो तो फिर बार-बार सवाल पूछ मुझे उलझनों में क्यों डालते हो।' जीवन की यह अजीब विडम्बना थी कि एक तरफ जवानी का उभरता प्यार देह के आगोश में पिघलना चाहता था। उधर ढलती जवानी का प्यार भावनाओं का सहारा तलाश रहा था। दोनों प्यार तलाश रहे थे मगर अपने अपने तर्कों से। 'तुम्हें मुझसे प्यार नहीं है मेरे जिस्म से है' एक दिन विवाद में बोल पड़ी।

क्या जिस्मानी प्यार नहीं हो सकता ? वो बोला।

'कभी नहीं, वो सिर्फ वासना होती है।'

तो क्या ये सारी दुनिया वासना का ही खेल खेल रही है ?

'मैं सबका नहीं कह रही हूँ मगर तुम मुझे दिल्ली की प्यासी आंटी ही समझ रहे हो' वो उबल पड़ी।

सुनो भी! क्या स्त्री पुरुष के दैहिक माँग में प्यार नहीं होता ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नहीं प्यार पवित्र होता है जहाँ कोई माँग नहीं होती। कोई अपेक्षा नहीं होती।

तो क्या आपकी कोई अपेक्षा नहीं मुझसे।

नहीं, मैं सिर्फ प्यार करती हूँ तुमसे।

मैडम, आप ढहती हुई दीवार हो जो सहारा ढूँढ़ रही हो। आपके जीवन में शून्यता थी जिसे भरने की कोशिश कर रही थी। आपको भावात्मक सहारा चाहिए था जो इस भागते हुए शहर में आपके लिए कोई वक्त निकाले। आपके दर्द-ओ- गम को समझ सके उसे मरहम लगा सके। हरेक आदमी अपने खालीपन को भरने के लिए पात्र ढूँढ़ता है चाहे वो प्यार का हो, वासना का हो, पैसों का हो या गरीबी का हो।

वो चुप थी मगर वह अपनी रॉ में बोले जा रहा था। वो बोलते-बोलते अचानक चुप हो गया। तूफान से पहले की ख़ामोशी दोनों के बीच छा गई।

हैल्लो सुन रही हो ना ? चुप क्यों हो ?

हाँ, हाँ मैं सुन रही हूँ। तो जवाब क्यों नहीं देती ?

किस बात का ?

मैं तुमसे दिल्ली आकर मिलना चाहता हूँ मगर तुम इसे टाल क्यों रही हो ? 'ओफ़्फ़ो ! तुम समझने की कोशिश ही नहीं करते। हाँ मैं मानती हूँ मेरे इस सूने जीवन में तुम खुशियाँ लाये, मुझे तुमसे बातें करना अच्छा लगता है; मगर...' मगर क्या ? वो सुनने को आतुर था।

मगर हम दोनों विपरीत ध्रुव पर है। ये हो नहीं सकता तुम्हारे आने से मेरी पारिवारिक ज़िंदगी बर्बाद हो जायेगी। प्लीज समझा करो, हम केवल मोबाइल पर बात कर लिया करेंगे, मैं समझती हूँ आपके प्यार को मगर हमारे इस प्रेम की अपनी सीमायें है।

वाह मैडम आपकी माँग तो पूरी हो जाये मगर मेरी जरूरतों का क्या ?

क्या रिश्ते सिर्फ दैहिक जरूरतों पर टिके हुए होते है ?वो बोली।

आप मुझसे मिलोगी या नहीं ? वो इस वक्त रिश्तों की दार्शनिक व्याख्या में नहीं पड़ना चाहता था, सिर्फ निर्णायक ज़वाब चाहता था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ठीक है अगर तुम्हारी ये जिद है तो आज के बाद तुमसे कभी बात नहीं करूंगी।

बाय... ठीक है भाड़ में जाओ! तुम जैसे मतलबी लोग ऐसे ही होते हैं। वो भी गुस्से में उबल पड़ा।

वह फोन स्विच ऑफ कर खाना बनाने चली गई। वो काफ़ी राहत महसूस कर रही थी कि उम्र के इस मोड़ पर उसने यह निर्णय लेकर खुद व परिवार के सुकून को बचा लिया। रात को सोने से पहले उसने फेसबुक को डीएक्टिव कर दिया उसके व्हाट्सएप्प नंबर डिलीट कर दिए। रविवार को सुबह कॉफी का कप लेकर बैठी तो सर कुछ भारी सा लग रहा था, देह से परे कुछ टूट सा रहा था, मन में अजीब सी रिक्तता रिस रही थी। और कुछ ही देर में वो खालीपन से भर गई। कॉफी का घूँट आज ज्यादा ही कड़वा लगा। उसने जीभ और मन के कसैलेपन को दूर करने के लिए शक्कर के डिब्बे के साथ तकिये नीचे रखे मोबाइल को ले आई। फेसबुक फिर से एक्टिव कर कुछ ढूँढ़ने लगी... शायद उस खालीपन को भरने के लिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बड़े पेड़ के भीतर छोटा पेड़

'आज से ठीक 360 दिन बचे हैं।' एक दिन बड़े साहब ने सरकारी कुर्सी के हत्थे पर हथेली फेरते हुए कहा था। फिर वे सिर कुर्सी पर टिका कर दीवार पर लगे कैलेंडर की तरफ देखने लगे। उन्हें लगने लगा जैसे तारीखें बहुत तेजी से बदल रही हैं, महीने भी और जल्द 360 दिन खत्म हो गये। 30 जून को वे यहाँ से रिटायर हो जायेंगे। 'रिटायर' शब्द आते ही वे डर से भर गये। उन्हें हर वक्त लगता था कि रिटायर होने का मतलब आप बूढ़े हो गये और जल्द कोई बीमारी लगेगी और फिर मरना पड़ेगा। वे अपने उन साथियों को याद करने लगे जो उनसे पहले रिटायर हो गये और जो दो चार साल बाद या तो बीमारी से ग्रस्त हो गये या फिर चल बसे।

वह देर तक बड़े साहब की तरफ देखता रहा। बड़े साहब के सब बाल उड़ चुके थे, चेहरे पर चेचक के दाग हैं जो उनके क्लीन शेव चेहरे पर ज्यादा उभरे हुए दिखते हैं। आगे के दाँत हिल रहे हैं जिसे वे अक्सर आलपिन फँसा कर कचरा निकालते हुए कहते थे 'अब बुढ़ापा आ गया। दाँत हिल रहे हैं, बाल उड़ गये, घुटने दुख रहे हैं।'

बाहर कूलर फड़फड़ा रहा था मगर जून की गर्मी में वह बेहाल था सारा पानी फेंकने के बाद भी ठंडक का अहसास नहीं दे पा रहा था।

साहब को कई बार ए.सी. लगाने का बोला मगर लगा नहीं। सब चीजों के साथ उसे भी स्वीकार कर लेना चाहिए कि यह गर्मी भी ऑफिस के तनाव की तरह है जितना सोचोगे उतना परेशान हो जाओगे।

बड़े साहब ने दो बार घंटी बजाई मगर चपरासी अभी तक नहीं आया। बड़े साहब चुपचाप बैठे है। बड़े साहब को महसूस होने लगा कि अब तो चपरासी भी समय पर चाय नहीं लाता।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसने बाहर जाकर जर्दा बना रहे चपरासी को आवाज दी 'ऐ गंगाराम! सुनाई नहीं देता क्या?'

चपरासी भागता हुआ आया। बड़े साहब की तरफ देखने लगा।

बड़े साहब चपरासी की तरफ मुस्कराते हुए कह रहे थे 'गंगाराम जी अब तो कुछ दिन के मेहमान हैं। समय पर चाय तो पिला दिया करो।'

गंगाराम चार बजे की चाय लेने चला गया।

उसे गुस्सा आ रहा था कि साहब ने चपरासी तक को मुँह लगा रखा है, कुछ भी कहते नहीं।

बड़े साहब देर तक बताते रहे कि कैसे शहर में रहकर उन्होंने पैसे बचाए, घर बनाया, लोन लेकर बच्चों की शादी की मगर कभी भी रिश्वत का एक पैसा तक नहीं लिया।

"आज शाम को बाहर खाना खाने चलें?" व्हाटसप्प पर पत्नी का मैसेज था।

उसकी उंगलियाँ मोबाइल के स्क्रीन पर चल रही थी। उसे सुनाई कुछ नहीं दे रहा था मगर साहब बोले जा रहे थे कि नानगराम किराणा स्टोर पर प्राइस रेट से कम पर सामान मिलता है, कभी कुछ खरीदना हो तो वहीं से लेना सस्ता पड़ता है।

वह बड़े साहब से इस वक्त अड़ना नहीं चाहता था वरना रोज की तरह कह देता साहब इस भीड़ भरे अंदरूनी शहर के भीतर जाना और 10 रुपये बचाकर लाना कहाँ की बचत हुई।

पर साहब की बचत स्कीम सुन उसने पत्नी को दाल चावल बनाने का मैसेज कर कुछ रुपये जरूर बचा लिए।

वे दोनों चुपचाप चाय पी रहे थे। जून के तपते तावड़े ने मौन पसार रखा था।

वह बाहर खड़े नीम के पेड़ को देखते हुए साहब को चाय तेज सुड़कते हुए सुन रहा था।

उसे दादी याद आ गई जब वो मरने वाली थी तब इसी तरह ही तेज चाय को सुबड़ सुबड़ कर पीती थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'साहब आज मैडम नहीं आयीं।' उसने कप को टेबल पर रखते हुए कहा।

'मैडम के पति को डॉ. को दिखाना है इसलिए आज जल्दी निकल गई थीं।' साहब फाइल खोल कर पढ़ने लगे।

'मिसेज माथुर बोल रही हूँ, कल तक यह काम हो जाना चाहिये, यह मेरे रिलेटिव हैं समझे।'

माथुर मैडम किसी को सिफारिशी फोन कर रही थी, मगर अपने अंदाज में। उनके पति शहर के एस.पी थे।

वे तीन लोग एक बड़े हॉल के तीन हिस्सों में बने चेम्बर में बैठते थे। बड़े साहब विभागाध्यक्ष थे, माथुर मैडम अकाऊंट ऑफिसर और वह लेबर वेलफेयर अधिकारी। ऑफिस टाइम में तीनों चाय पर बड़े साहब के चेम्बर में दो बार मिलते थे।

वह जब भी शुरू-शुरू में मैडम के सामने बैठता तो उसे अपने पिछले ऑफिस की अनिता मैडम की याद आ जाती मगर कुछ ही दिनों में उसे पता चल गया कि माथुर मैडम वैसी नहीं है जैसी वो थी। माथुर मैडम दिल से भली थीं। किसी को भी सरकारी या प्राइवेट काम करवाना हो मैडम से सिफारिशी फोन करवाते। जब तक काम नहीं होता मैडम टेंशन लेकर 'मिसेज माथुर बोल रही हूँ' कह कह कर सामने वाले को डाँटती रहती।

बड़े साहब और भी भले आदमी थे वे चपरासी और ऑफिस के बाबुओं को कुछ भी नहीं कहते। कई बार तो उनकी जगह वे खुद ही काम कर लेते थे।

आपने ऑफिस का डेकोरम खत्म कर दिया। इससे यह लोग बिगड़ जायेंगे तथा बाद वालों को परेशान करेंगे। उसने कई बार बहस के दौरान बड़े साहब से कहा था। मगर आज किसी फाइल और बाबुओं के व्यवहार को लेकर बहस के दौरान बड़े साहब को पहली बार गुस्सा आया और फाइल टेबल से फेंक दी और उनके पक्ष में बोलने लगे 'बाबू हुए तो क्या हुआ ? इन्सान नहीं हैं क्या ? थोड़ा आप लोग कर लोगे तो मर जाओगे क्या ?'

वो चुपचाप उठकर अपने चेम्बर में चल दिया, पूरे ऑफिस में सन्नाटा छा गया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह काफी देर तक फाइलें इधर–उधर देखता रहा, मेल पढ़ता रहा मगर उसका गुस्सा उतर नहीं रहा था। बड़े साहब ने उसका पक्ष नहीं लेकर उसकी इन्सल्ट की।

आखिर एक ऑफिसर दूसरे ऑफिसर का साथ नहीं देगा तो अफसरों की इज्जत कौन करेगा।

वह देर तक दो पंख वाले पंखे को देखता रहा। बाहर रोड पर वाहनों की आवाजाही थी मगर उसे कुछ सुनाई नहीं दे रहा था कभी कभी कोई बस या बड़ा ट्रक निकलता तो वह अंदाजा लगाता कि अभी यह वाहन गुजरा है।

कई दिन तक बिना नमस्ते किये वह अपने चैम्बर में बैठा रहता। मैडम ने सुलह के लिए मध्यस्थ की भूमिका निभानी चाही तो उसने साफ़ मना कर दिया। लंच में ऑफिस के बाहर सिगरेट पी रहा था। उसने सामने लगे बड़े पेड़ों के नीचे छोटे पौधों को देखकर सोचने लगा यह बड़ा पेड़ इन्हें कभी पनपने नहीं देगा, एक दिन सभी खत्म हो जायेंगे और यह बड़ा यूँ ही बना रहेगा। सिगरेट का धुआँ उड़ रहा था। जुलाई की बारिश की वजह से नमी थी। वह काफी देर तक बाहर टहलता रहा। उसे हरवक्त लगता बड़े साहब का ट्रान्सफर हो जाये तो वह उनकी जगह ले लेगा फिर तो सारे काम और ऑफिस को अपने तरीके से मैनेज करेगा। उसने इसको लेकर माथुर मैडम से भी बात की हालांकि मैडम भी यही चाहती थीं मगर ऑफिस का सारा काम अपने जिम्मे नहीं लेना चाहती थीं इसलिए अपने अकाउंट सेक्शन में खुश थी।

उसने अकेले कई बार तिकड़म भिड़ाये कि बड़े साहब का ट्रान्सफर हो जाये एकाध बार इधर उधर से कहलवाया भी मगर ऊपर कोई खास फर्क नहीं पड़ा।

उसे कई बार लगने लगा कि इस तरह घुटकर जी नहीं सकता। उसकी दो पैसों वाली फाइल भी बड़े साहब की ईमानदारी की वजह से अटक जाती।

इस बार यूनियन के चुनाव में खड़ा हुआ तो तीन वोटों से हार गया तो उसे लगा कि हार की वजह बड़े साहब ही हैं, जिन्होंने खुद और मैडम को वोट नहीं देने दिया होगा।

आजकल वह बाहर ही चाय पीने लगा। इधर बड़े साहब को यह बात कचोटने लगी कि उनका अगले साल रिटायरमेंट है मगर कुछ सहकर्मी छोटी सी बातों को लेकर नाराज है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कई बार उन्होंने मेल मिलाप के लिए गेट टुगेदर रखा मगर वह कोई न कोई बहाना बनाकर बचता रहता।

इस तरह साल बीत गया। नया साल शुरु हो गया मगर रिश्तों में जनवरी की ठंड पसरी ही रही।

मार्च के आखिरी दिन थे। वह घर पर ही था तभी ऑफिस से फोन आया कि जल्दी ऑफिस पहुँचों बाहर से फ़्लाइंग आ रही है। उसने सोचा यह साहब का नाटक है उसे जल्दी ऑफिस बुलाने का। जब वो ऑफिस पहुँचा तो सच में हाजरी रजिस्टर में अब्सेंट लोगों के क्रॉस लगे हुए थे और मुख्यालय से कारण बताओ नोटिस जारी हुए थे मगर उसके कॉलम में साइन किये हुए थे। उसे समझ नहीं आया कि किसने किये मगर यह बात किसी से पूछ भी नहीं सकता वरना जिनको नोटिस मिले है वे हंगामा खड़ा कर देंगे।

वह चुपचाप अपने चैम्बर में जाने लगा तो बड़े साहब ने मुस्कुराते हुए कहा 'होली मुबारक हो।' उसने बेमन से कह दिया 'आपको भी।'

चार बजते ही साहब ने चाय के लिए कई दिनों बाद आवाज लगाई मगर वह बिना बताये ही घर के लिए निकल गया।

बड़े साहब अकेले बैठ कर चाय पी रहे थे। उनका मन अपराधबोध से भर गया। चाय कड़वी लगने लगी। छोटी सी बात को लेकर इशू बना दिया उनको लगने लगा कि उन्हें भी उस दिन गुस्सा नहीं होना चाहिये। वे तेज तेज घूँट भर कर चाय को खत्म करना चाहते थे मुँह के साथ मन भी कसैला हो गया। उन्होंने कैलेंडर की तरफ देखा तो मार्च अंतिम दिनों पर खड़ा था जून नजदीक खिसक रहा था। उनको बेचैनी महसूस हो रही थी, उनकी धड़कन बढ़ने लगी, पसीना पसीना हो गये। उन्हें लगने लगा इस बार मार्च में इतनी गर्मी है तो जून में तो भयंकर पड़ेगी।

साहब उठ कर कूलर चालू करने चल दिए मगर वापिस आते वक्त चक्कर खाकर गिर गये। गिरने की आवाज सुन गंगाराम दौड़ कर आया, बाकी स्टाफ को बुलाया। एम्बुलेंस मँगवा कर पास के प्राइवेट हॉस्पिटल ले जाया गया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह सुबह ऑफिस आया तो खबर सुनकर सुन्न हो गया। मैडम आज भी सी.एल. पर हैं। उसका मन नहीं लग रहा था। वो देर तक दूसरे स्टाफ के पास बैठा रहा। फिर हॉस्पिटल चला गया। साहब की तबीयत अब ठीक थी। हॉस्पिटल से डिस्चार्ज होने के बाद साहब ने स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति का आवेदन कर छुट्टी ले ली।

कुछ दिनों बाद मैडम को विभागाध्यक्ष बना दिया मगर उनके पति का ट्रान्सफर दूसरे शहर में हो गया तो वे भी ट्रान्सफर करवा कर चली गईं।

अब अकेला बैठा कर फाइलें निपटाता मगर उसका मन नहीं लगता वो सोचता अब नये तबादले खुलने के बाद ही खाली पदों पर पोस्टिंग होगी। तब तक उसे ही काम देखना होगा।

पंखा घरघर कर रहा था उसे ए.सी. की याद आ गई उसने बाबू को बुला कर ए.सी., नये पर्दे, कुर्सी आदि का आर्डर लिखवा कर टेबल पर पड़े कैलेंडर को पलटने लगा तो उसकी नजर 30 जून पर अटक गई जहाँ साहब ने लाल पेन से गोला कर रखा था। कैलेंडर को उठाने से नीचे रखी फाइल के पन्ने उड़ने लगे तो घंटी बजाकर गंगाराम को समेटने के लिए बुलाया। जैसे ही गंगाराम ने कागज हाथ में दिए तो उसमें से एक खाली पन्ने पर उसके कई साइन किये हुए थे। उसने तुरंत हाजरी रजिस्टर मँगवाया। उस तारीख के साइन मिलाकर वह रुँआसा सा गया। गला भर आया। वो बाहर कॉरिडोर में खड़ा होकर सिगरेट सुलगाने लगा तो सामने वाले बड़े पेड़ की दो शाखाओं के बीच से पीपल का छोटा पौधा उगा हुआ नजर आया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्वाटर नम्बर-73

वह इस सरकारी क्वाटर में कुछ महीने पहले ही सार्वजनिक निर्माण विभाग में जूनियर इंजीनियर से अस्सिटेंट इंजीनियर प्रमोशन होकर आया था इसलिए उसने बाहर लगे नेम प्लेट को पुतवा कर अपना नाम नहीं लिखवाया या फिर हो सकता है कि उसे अभी तक कोई पेंटर नहीं मिला हो। इसलिए नाम की चिंता छोड़ जरूरी सामान लेकर रहना शुरू किया।

शुरू-शुरू में उसे लगा कि बाहर खाली पड़ी जगह पर कुछ फूलों वाले पौधे लगाने चाहिये मगर अपने आलसीपन को याद कर स्थगित कर दिया। पहले रहने वाला भी उसके जैसा ही था इसलिए कोई नया लगा हुआ पौधा नहीं दिख रहा था। एक दो बोगनवेलिया, एक सदाबहार, एक बुढ़ा हो चुका चंपा और अधेड़ सी मोरपंख और किनारे पर गुडहल का पौधा लगा हुआ था मगर उसने भी खिलने से मना कर दिया सा लग रहा था। इतने बड़े क्वाटर में वह अकेला रहता था। उसके माता पिता गाँव में रहते थे। उसकी शादी नहीं हुई थी। अब क्यों नहीं हुई यह तो वह ही जाने आप ज्यादा उत्सुक न बने वो उसका निजी मसला था और सही बात तो यह है कि उसकी शादी होना या नहीं होना इस कहानी से कोई मतलब नहीं रखता।

क्वाटर में कुल चार कमरे थे। उसने पीछे वाले रूम को अपना बेडरूम बनाया। उस कमरे के पीछे बड़ी दीवार थी जिसके पीछे लाइन से दूसरे क्वाटर बने हुए थे। दीवार की वजह से कुछ भी नहीं दिखाई देता लेकिन रात को उसे आवाजें आतीं। उसे लगा कि कोई भूत है। मगर सुबह दूध लेने डेयरी पर गया तो पता चला कि पीछे वाली लाइन में बाबुओं के दो कमरे और रसोईवाले क्वाटर हैं जिसको मिला था उसके बेटों की शादियों के बाद छोटा पड़ने लगा तो क्वाटर और दीवार के बीच टीन शेड का अस्थायी कमरा बना दिया जिसमें आजकल वो पति-पत्नी सोते हैं और भीतर बहू बेटे और पोते सोते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अब वो ऑफिस से जैसे ही घर आता तो उनकी बातें सुनाई देती। शुरुआती दिनों में उसने ज्यादा चाह नहीं दिखाई मगर धीरे धीरे पड़ा पड़ा बातें सुनता रहता। अंदाजे लगा बातों का सिरा पकड़ने की कोशिश करता। वो इस नतीजे पर पहुँचा कि वे अगले कुछ माह में रिटायर होने वाले हैं उनकी बातों में अक्सर रिटायर शब्द और उसके बाद की चिंताएं ज़ाहिर होतीं। कई बार उसकी पत्नी के रोने और सुबकने की आवाज आती। वो अक्सर बहू बेटों की शिकायतें करती मगर अंकल कभी ध्यान नहीं देते तो अपना गुस्सा हल्का करने के लिए रो लेती। बहू बेटे सर्दियों की रात में दरवाजे बंद कर सो जाते। इधर अंकल और आंटी देर रात तक बातें करते रहते वो उनकी बातों को सुनते सुनते सो जाता। सुबह जल्दी उठ वो घुमने के बहाने दूध लेने जाता तो कॉलोनी की सड़क पर ठण्ड पसरी मिलती। इक्के-दुक्के लोग ही घूमते नजर आते। महिलाएँ कबूतरों और कीड़ी मकोड़ों को दाना डालने निकल जाती, कुछ लोग कॉलोनी में बने शिव मन्दिर की सुबह की आरती में अकेले पड़े पुजारी जी को देख साथ देने चल देते। वो दूध लेकर वापस लौटता तो आगे चल रही औरतों की बातें सुनने के लिए धीरे-धीरे चलता।

'गहलोत साहब की बेटी तो शादी के बाद वापस आ गई।'

'वो 14 नम्बर वाले साहब ट्रान्सफर होने के बाद भी क्वाटर खाली नहीं कर रहे हैं।'

'34 नंबर वाली भाभी जी ने अभी नया नया स्कूल ज्वाइन किया है इसलिए स्कूटी सीख रही हैं।'

'अरे बळण दो, सुबह सुबह रामजी का नाम लो।' इस आवाज को सुन वह चौंका उसे लगा कि यह आवाज तो आंटी जैसी है। पर इतनी सारी औरतों के बीच उसका चेहरा कैसे देखे। वो जल्दी आगे निकल गया।

शाम को जब वो ऑफिस से घर लौट रहा था तो देखा गली वाले क्वाटर के आगे आठ दस लोग अर्थी को मुक्तिधाम वाहन में रख रहे थे कुछ लोग दीवारों के सहारे खड़े बतिया रहे थे।

उसने वहाँ खड़े एक जने को पूछा तो मुँह से पीक थूकते बताया 'चौहान साहब मर गये।'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'मर गये !' देर तक उसके दिमाग में यह वाक्य गूँजता रहा।

हमारी कॉलोनी का आदमी और हम उसकी शव यात्रा में जाने की तैयारी में हों और हमारी संवेदनहीनता देखो– 'मर गये'

जी चाहा उसका चेहरा नोंच ले।

पर कौन चौहान साहब वो तो उनको नहीं जानता, वो श्रीदेवी को जरूर जानता था, जिसके बारे में ऑफिस के बाबू ने कहा था कि साहब श्रीदेवी मर गई। तब उसने बाबू को जोरदार झिड़क दिया 'ढंग से बोल नहीं सकते क्या ?'

बाबू बाहर जाकर दूसरे बाबुओं को बता रहा था कि लगता है कि साहब श्रीदेवी के दीवाने थे, अभी तक सदमे में हैं।

दूसरा बोला 'उसके इंतजार में तो कुँवारे रह गये।'

वो चेम्बर में बाहर से आती हँसी को सुन माथा पकड़ बैठ गया था।

रात को जब वो खाना खाकर घूमने गया तो पान वाले से पूछा 'यह चौहान साहब कौन थे ?'

बड़े भले आदमी थे, हर किसी के काम में मदद करते थे, ऑफिस में भी अकेले चार लोगों का काम करते थे, बेटी को लेने भोपाल गये थे, ट्रेन बदलते वक्त पाँव स्लिप हो गया और ट्रेन के नीचे आ गये।

ओह! वो सोचने लगा कि मौत हमारे पास न जाने कहाँ कहाँ खड़ी होती है।

कितने बच्चे हैं उनके ?

एक बेटा है, दसवीं में पढ़ता है, एक बेटी एन.एल.यू. में पढ़ती है।

तो अब ?

क्वाटर तो उनके नाम से अलॉट था, अब खाली कर गाँव ही जाना होगा। पानवाले ने उसे छुट्टे पैसे वापिस देते हुए बताया।

वो जल्द से सिगरेट सुलगा कर वहाँ से निकल गया। देर तक बावला होकर घूमता रहा। रात के गहराने के साथ डर से भर गया कि अगर वो मर गया तो उसके पास

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तो कोई नहीं आयेगा, जब शव गंध मारेगा तब शायद कुछ करेंगे, वो देर तक खुद की मौत को लेकर सोचता रहा।

अगले कुछ दिनों तक उसने घूमना बंद कर लिया। कभी कभी अंकल आंटी की बातें सुनने का प्रयास करता मगर जल्द मन उचट जाता। उसे लगने लगा इन क्वाटरों में आपकी कितनी वैल्यू है आप जब तक साहब तब तक ही। जब आप गये तो आपके परिवार को खाली करना होता है परिचित भी मुँह फेर लेते हैं।

कई दिनों बाद जब कॉलोनी के पार्क में गया तो एक कोने में बच्चे अपने एग्जाम और नई साइकिल की बात कर रहे थे उससे आगे दो कर्मचारी बैठे थे जो जी.ए. 55 और इनकम टैक्स में छूट के लिए उपाय ढूँढ़ रहे थे। मन्दिर के पीछे झूलों के पास दो औरतें आज सब्जी क्या बनानी है इस गंभीर समस्या पर मंथन कर रही थी।

मन्दिर के आगे दो बुजुर्ग बैठे हुए दिखे, दूर से देख वो समझ गया कि यह रिटायर हैं या फिर इनका बेटा नौकरी करता होगा इसलिए उसके क्वाटर में रहते होंगे। दो चार चक्कर लगाकर वो बुजुर्गों के पास वाली बेंच पर बैठ गया।

'आजकल पेट साफ नहीं रहता।' एक बुजुर्ग ने दूसरे से कहा।

'रात को कुनकुने पानी से चूर्ण लिया करो।' दूसरे ने सलाह दी।

'चूर्ण भी ले ली, केप्सूल भी ले लिया मगर कोई फर्क नहीं पड़ा।'

उनकी बातों को सुनकर वो मन ही मन हँसने लगा कि एक उम्र के बाद आदमी के बातचीत के क्या मुद्दे बचते हैं।

घड़ी भर उसे याद आया कि अगली 21 तारीख को वो 42 का हो जायेगा कुछ सालो बाद 60 का फिर रिटायर। क्या उसे भी कब्जी होगी ? वो खुद को बुढ़ापे में बदलते हुए देख रहा था। वो तुरंत उठ कर घर की तरफ चल दिया। जैसे ही सोने लगा उसे दीवार पार दो अजनबी आवाजें आने लगीं।

'पापा रिटायर हो रहे है, अभी से अपना हिस्सा ले लो ताकि बच्चों को पढ़ाने में काम आयेगा।'

'तू अभी समझती नहीं, अभी कहेंगे तो लोग क्या सोचेंगे ?'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'सोचना क्या है, रिटायर्मेंट के बाद वे रुपयों का गाँव के मकान बना देंगे।'

उसने अंदाजा लगाया कि शायद बहू और बेटा है।

अगले दिन रविवार की दोपहर जब वो सो रहा था तो उसे लड़ने की आवाजें सुनाई दे रही थी। उसने सोते सोते अंदाजा लगाया कुल पाँच-छह लोग हैं। लड़ाई में घर, बार, रुपया, पैसा, रिटायर्मेंट, मेरा हिस्सा और शर्म नहीं आती जैसे शब्द बार बार प्रयोग हो रहे थे।

'तू छोटा है मगर तेरे पास सरकारी नौकरी है मेरे पास प्राइवेट मास्टरी है इससे बच्चों की फ़ीस भी भरी नहीं जाती। पापा 20-25 लाख अभी दे देंगे तो मैं शहर में रहकर बच्चों को पढ़ा दूंगा।' शायद यह बड़े वाला लड़का है।

'अरे अभी रिटायर तो होने दो।' अंकल बच्चों को शांत करना चाहते थे।

वह होली की छुट्टियों के बाद वापस आया तो एक शाम घूमते हुए देखा कि पार्क की बेंच पर वो बुजुर्ग अकेले बैठे थे। उसने अंदाजा लगाया कि शायद दूसरे वाले आज नहीं आये होंगे। मगर तीसरे दिन देखा तो पार्क के सामने वाले क्वाटर में तीये की बैठक हो रही थी। वह जल्द पार्क में घुसा तो देखा आज भी वो बुजुर्ग अकेले और उदासी से भरे हुए बैठे थे।

वो फिर से डर से भर गया पार्क घूमना केंसिल कर घर की तरफ चल दिया उसे अपने बूढ़े माँ-बाप की याद आ गई। पार्क के गेट के पास से बुजुर्ग दम्पत्ति जा रहे थे, उनमें आंटी कुछ उदास लग रही थीं। उसे लगा कि यही पीछे वाले अंकल आंटी हैं। उनके पीछे चलने लगा लेकिन जैसे ही वह आंटी बोली तो समझ गया आज भी उसका अंदाजा गलत निकला। उसे अब लगने लगा बिना देखे ही वे लोग क्वाटर खाली कर चले जायेंगे। कई बार उसने तय किया कि वो सीधे ही उनके घर जाकर मिल आयेगा, मगर अगली घड़ी वो सोचता कि वो क्या बहाना लेकर जाये अगर उन्होंने कारण पूछ लिया तो?

इस तरह वो हर बार जाना स्थगित कर देता।

इस बार मई के उतरते ही बारिश शुरू हो गई। पूरी कॉलोनी में पानी भर गया था। उसने सोचा कि आज जरूर अंकल का टिन शेड पानी से भर गया होगा मगर रात होते

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ही उसे आवाजें सुनाई दे रही थी वे बेटों को तिरपाल ढंग से नहीं लगाने पर डाँट रहे थे। आंटी बड़बड़ा रही थीं उसने अंदाजा लगाया कि आंटी कह रही हैं और चढ़ाओ छोरों को सिर पर।

सरकारी कॉलोनी की विशेषता होती है कि यहाँ बड़ा अफसर वो माना जाता है जो कम बोले, कम दिखे और कम बाहर निकले। इसलिए अक्सर यहाँ बड़ा होने के चक्कर में कोई किसी से मिलता जुलता नहीं था। पूरा दिन ऑफिस में खपने के बाद घर में टीवी चालू कर मोबाइल पर फेसबुक और व्हाट्सअप चेक करते हुए निढ़ाल हो जाते। अक्सर महीनों तक पड़ोसियों को देख नहीं पाते। इसलिए एक दूसरे के घर की खोज खबर लेनी हो तो सफाई वाली या खाने वाले बाई जी या डेयरी वाले मोनू से ही पूछना पड़ता कि फलां साहब दिख नहीं रहे हैं आजकल।

उसने बातचीत करने के लिए एक और नया व्यक्ति ढूँढ़ लिया। वो जब भी ऑफिस जाता तो कॉलोनी में एक फ्रूट वाला ठेला लेकर निकलता था। वह उससे बातें करता। वो बिहार से आया है साल दो साल में अपने घर जाता दो बच्चे हैं बीवी है। वो मेडिकल कॉलेज के सामने ठेला लगाता है।

वो कई बार कॉलोनी के लोगों के बारे में पूछता तो जवाब में ट्रान्सफर हो गया, खाली कर चले गये या फिर कभी कभी मर गये सुनाई देता पर अब उसे अचरज नहीं होता इन शब्दों से।

उसे कई दिनों से आवाजें सुनाई नहीं दी उसे लगा कि अंकल आंटी चले गये और वह उनकी शक्ल भी नहीं देख पाया।

उसके दिमाग में अंकल की छवि तोंद निकले हुए बड़ी मूँछों वाली और आंटी की पतली दुबली महिला की थी।

उसने फ्रूटवाले से पूछा तो बताया कि उन लोगों ने रिटायर्मेंट से पहले ही शहर से बाहर किराये पर मकान ले लिया है। मगर क्वाटर अब कुछ दिनों में खाली कर देंगे।

कुछ दिनों बाद उसे सिटी डिवीज़न का अतिरिक्त चार्ज मिल गया जिसमें सरकारी आवासों की रख-रखाव और देखभाल भी शामिल था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक दिन वो अपने चेम्बर में फाइलें देख रहा था तो चपरासी ने एक नो ड्यू लैटर टेबल पर रखकर कहा कि साहब यह मेरे रिश्तेदार है इनका अगले महीने रिटायरमेंट है इसलिए नो ड्यू लैटर पर साईन कर दो।

उसने जैसे ही साइन करने के लिए लैटर पढ़ने लगा तो वो सरकारी क्वाटर हेंड ओवर कर नो ड्यू बाबत था। उसने नंबर देखा क्वाटर न. 73, विवेकान्द कॉलोनी

उसके हाथ रुक गये। उसने कुर्सी से उठकर चेम्बर के दरवाजे के काँच से देखा था तो क्लीन सेव बिना तोंद वाला व्यक्ति हँसते हुए रिटायरमेंट के बाद के प्लान चपरासी के साथ शेयर कर रहा था। आज उसे वो आवाज ठीक पीछे वाले अंकल की लगी।

उसका मन हुआ कि बाहर जाकर अंकल से घड़ी भर बात कर ले तभी अचानक चपरासी को दरवाजे की तरफ बढ़ते देख जल्द सीट पर जाकर बैठ गया।

कैलाश जी आज बढ़िया सी चाय पिलाओ' उसने चपरासी को लेटर देते हुए कहा।

शाम को ऑफिस से घर जाते वक्त वो खुश था आखिर उसने अंकल की शक्ल तो देख ली। अचानक उसने मंडी मोड़ पर फ्रूट वाले को खड़ा देखा।

कहाँ थे इतने दिन गायब और आज यहाँ कैसे ? उसने स्कूटर रोकते हुए पूछा।

साहब वो मेडिकल कॉलेज शहर से बाहर चला गया मेरे सारे ग्राहक और जगह छूट गई।

तो अब ?

'कुछ दिन मंडी में लगाने का प्रयास किया मगर वहाँ पहले जमे लोगों ने भगा दिया इसलिए मण्डी के बाहर खड़ा हूँ मगर यहाँ लोग रुकते नहीं सीधे मण्डी ही जाते हैं।' वो रुँआसा हो गया

'अरे कोई बात नहीं किस्मत में जो लिखा है वो मिलेगा। चल दो किलो अंगूर, दो किलो सेव तोल दे।' उसने सांत्वना देने के लिए ज्यादा का आर्डर दिया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

साहब क्या किस्मत की बात करते हो, बच्चे को डेंगू हो गया और डॉक्टर ने घरवाली के बच्चेदानी का ऑपरेशन बता दिया उसके सब घरों का काम छूट गया। उसने अच्छे सेव छाँटने के लिए नया कैरेट खोल दिया।

वह चुपचाप फ्रूट्स लेकर चल दिया। कॉलोनी में अंधेरा घिर चुका था लोग बाहर आ जा रहे थे मगर उसके भीतर गहन उदासी पसर रही थी। उसने फ्रूट्स बाहर रख कर पीछे वाले कमरे को खाली कर आगे वाले कमरे को बेडरूम बनाने में लग गया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

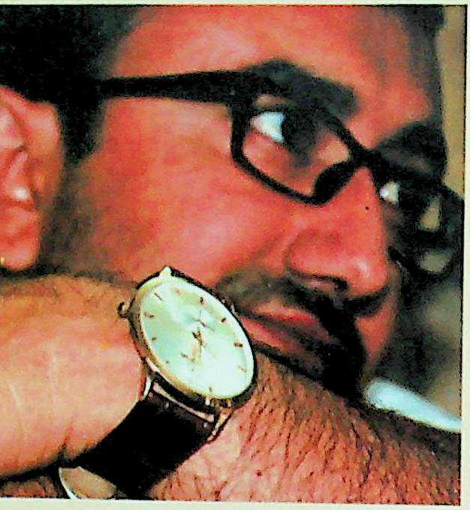

माधव राठौड़

माधव राठौड़ के बारे में परिचित जानते हैं कि वे कहानी, कविता, समीक्षा, आलेख आदि लिखते हैं।

1985 में जन्मे माधव भारत-पाक बॉर्डर के रेगिस्तानी गाँव से आते हैं जो कानून और पत्रकारिता की पढ़ाई के बाद अपने आसपास की देखी गई, जी गई दुनिया को कहानी और कविता में, लम्बे समय से, पूरी संजीदगी से ढाल रहे हैं।

साहित्य, सिनेमा और संगीत इनके बेहद करीब हैं तो लिखना आत्मिक सुख लगता है।

माधव राठौड़ की कहानियाँ एक संवेदनशील मन और जिज्ञासु मस्तिष्क के भाव और विचारशीलता का सामंजस्य लिए हुए हैं, जो बाह्य और भीतरी जगत दोनों में बेहद महत्त्वपूर्ण हस्तक्षेप लगती हैं।

msr.skss@gmail.com

facebook.com/madhavsingh.rathore.3

96022 22444

₹ 150.00

बोधि
साहित्य जन जन के लिए

बोधि जन-संस्करण
आवरण चित्र : डॉ. सुरेश सारस्वत # 72300-75099

ISBN : 978-93-87831-92-6
9789387831926

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant